आखिरी स्वयवर

(हास्य व्यग्य लेखों का सकलन)

डॉ० सरोजनी प्रीतम

आख़िरी स्वयंवर

डॉ॰ सरोजनी प्रीतम

आर्य बुक डिपो
करोल बाग, नई दिल्ली-110005

प्रकाशक :
आर्य बुक डिपो
30, नाईवाला, करोल बाग
नई दिल्ली-110005
दूरभाष 5721221, 5720363

प्रथम संस्करण 1989

मूल्य रु० 60 00

मुद्रक
सोहन प्रिंटस
शाहदरा, दिल्ली-110032

दो शब्द

प्रस्तुत सग्रह मे स्त्री सुलभ विपयो का चयन किया गया है विशेष रूप स पुरुषो के लिए। आखिरी स्वयवर म आखिर कौन सम्मिलित होना नही चाहेगा। ऐसा आमन्त्रण—ऐसा आयोजन अब केवल पुस्तको के लेख रूप मे ही मिलेगा। पुरुषो न वणन से मुह मोडा तो स्त्रियो को 'पैदा होने का दुख हुआ। वास्तव मे च द्रमुखी मृगनयनी सभी की जिन्दगी किसी न किसी मोड पर आकर रुक जाती है, सारी प्रतिभा योग्यता 'रसोईघर की मुहावरेदानी' मे ही ममाहित हो जाए। वे जो अब तक वणन का विषय बनी अथवा सरस्वती की वरद बेटिया किसी तलाश म भटकी तिलनामा कातिलनामा बना अथवा पत्नी की खातिरदारी करने को उद्यत पुरुष चाय और समोसा वणन मे उलझे उन सबकी हास्यपूण स्थितिया मेरे इन लेखो मे समाहित हैं।

यह सभी विषय केवल महिलाओ के लिए तथा 'पुरुष अवश्य पढें'—के निर्देशो के अ तगत है कौन किसके लिए है विवाद कैसा ? पुरुष—स्त्रियो के लिए और यह सग्रह भी उन्ही के लिए ही तो।

अनुक्रम

1

पैदा होने का दुख

हाय ! हम उस जमाने मे पैदा न हुए, जब आखो मे डूब मरने वाले लोग कतार बाधे बैठे रहते थे। एडी से चोटी तक के वणन मे सारी उम्र गुजार देते। कुए पर लटकी डोलची की तरह सुमुखी चन्द्रमुखियो की ओर ताक लगाए रहते। जरा-सी ढील देते ही वे उनके सम्मुख पानी भरने लगते। भौहो के इशारे पर लुट जाने वाले वे लोग किस मोम के बने होगे। घण्टो पनघट पर पुतले बने रहे होगे। जरा-सी आँच के लिए देते रहे अग अग की उपमाए । शोक ! वे रसिक इस युग मे पुनजन्म लेकर क्यो न आए। जब जब वर्णन की हानि हो, उपमाओ के क्षेत्र मे मनमानी हो, भरे भवन मे आख का इशारा ट्रैफिक लाइट का काम न दे पाए, तो हे रसिक ! तुम्हे बार-बार जन्म लेकर आना होगा। रूप को, सौन्दर्य को वर्णन का भी विषय बनाना होगा।

आखो के वणन मे पिछले कवियो ने कमाल किया था। आखे वही है, अब भी वही कमाल दिखाती है, लेकिन आज किसी को खजन मीन मृग की उपमाए ही नही सूझती। सूझे भी कैसे ! न मीन मृग खजन है, न ही सूझबूझ। 'प्रतिभा

को नाम नही, नाम ही है प्रतिभा।' आखें, कान तक लम्बी, बातें सुनने के लिए स्वय कान हो जाती है, रतनारे नेत्रो मे शराब छलक उठती। यह मयखाना थी, पैमाना थी अब तो यह, वह पैमाना हो गया है जिसमे ज्यामिति मे बच्चे रेखाए खीचते है। भृकुटि की वक्र और कुटिल रेखाओ के तले यह पैमाना फुट्टा हो गया है।

वे रूपसी के केश जाल। घनी कजरारी केश-राशि आकाश पर उमडती घटाए होती थी और नायिका के दात बिजली से चमकते थे। हाय राम, बादलो मे बिजली यानी बालो मे दात! कजरारे केश, कजरारी आखे यानी आखो मे बाल। नायिकाओ के बाल मुह-आखो पर, मुह कमल जैसे होते ही लटकी हुई लटें भवरा हो गईं। मुख का मधुपान करने लगी प्रेमी कवि हो गया। वह उसके वणन के लिए हर समय मुह ताकता रहा प्रिया ने पीठ दिखाई, तो उसे उसके जूडे ने बाधा। उसकी जूडा बाधने वाली ने बाधा। (यानी सौन्दर्य विशेषज्ञ की ओर भी ताक लगाए बैठे रहे।)

एडी के सारे मुहावरे इसी एडी-चोटी युग की ही देन प्रतीत होते ह। नायिका की लाल एडिया फूल के झावे से जब नाइन साफ करती होगी, तो डरती होगी। जिसे गुलाब की पखुडियो से खरोचें पड जाती हैं, वह अपनी 'स्किन' किसी चम रोग विशेषज्ञ को क्यो नही दिखाती? (ऐसे-ऐसे रोग उस युग मे भी थे। एडिया लाल होने का रोग) और उनका वर्णन करने वाले 'एडीलाल', उस युग से लेकर आज तक सावजनिक सम्पत्ति की तरह हैं। लैंपपोस्ट है। कभी उनपर बल्ब लगाकर, उन्हे प्रकाश मे लाया जाता है और कभी फ्यूज बल्ब टाग कर उन्हे भी अधेरे मे रखा जाता है।

तीर चलाने वाली आखें! धनुष बाण लिये धनुर्विद्या प्रवीण। कितनी बार ढेर हुईं, कितनी बार औरो को ढेर कर गईं। उफ! पुरुष हवा से बातें करते नजर आए। वाष्पराशि का ढेर, जो बादल बनकर आकाश पर आए, उसे डाकिया बना दिया। सदेश दे-दे कर उसे लगे समझाने, फला घाटी, फला दर्रे पार कर उछल कूद करते हुए यहा-वहा मडराना। मनमानी मत कर जा-जा। वह लम्बे गीत, वह लम्बी-चौडी हाकना, वह उनका बहकना। एकटक ताकना। तुकात अतुकात। सवत्र काता सर्वत्र कात। आज के युग मे ऐसा कोई घण्टा मुह ताकने के लिए मुह उठाए, तो वह मनोचिकित्सक के पास ही जाएगा। प्रेमी नही, रसिक नही, हा पागल अवश्य कहलाएगा।

वह नख शिख वणन वे नाखूनी पजे, वे कटीली आखें वे पीली चन्द्र-

मुखिया, मुझे तो किसी रोग का शिकार दिखाई देती है—उन्हे किसी कवि की नही, किसी रोग विशेषज्ञ की जरूरत है (जिसका रोग कविता न हो), किन्तु हा इस युग मे आकर न नख-शिख वर्णन करने वाला और न कोई अन्य विशेषज्ञ ही मिला।

हाय ! हम तो उस युग मे भी पैदा न हुए, जब वादो की बातें साहित्य मे भी होती थी, प्रेम मे भी। साहित्य के वादो मे छायावाद-रहस्यवाद आदि वादो की कल्पना इतनी सूक्ष्म थी कि स्वय कल्पना लडखडा जाए। प्रेम के वादो मे कोरे वादे। कोरेपन की जिसमे भनक हो।

सलज्ज कन्याए जब नख से धरती कुरेदती है, तो लगता है गडे मुर्दे उखाड रही है। उनके खुले हुए बाल किसी वेणीसहार की प्रतीक्षा मे हैं। जिस नदी के तट पर वे कसमे खाते हैं, उसी नदी से कलकल-छलछल सुनकर वे समझ जाते है, नदी वही कर रही है, प्रेम धोखा है, वादो का जाल है। कलकल, इसकी कल की बातो मे सिर्फ छल है—छल के सिवाय कुछ नही।

प्रेम मे खिचडी बालो मे लगी काली पेंसिल, जब प्रेमियो की टेरीकोट की कमीजे काली कर जाती है, तब उज्ज्वल भविष्य के लिए, चमकदार धुलाई के लिए सिर्फ साबुन के विज्ञापनो की गूज ही बाकी रह जाती है। आखे, मुह, नाक, सवत्र सिर्फ झाग-ही-झाग। जीवन की कटुता के कारण जीभ इतनी खुरदरी हो गई है कि तलवे चाटते चाटते तलवो मे छेद कर देती है। हाथ की उगलिया, पाव की एडिया घिस गईं, दोनों के बस पजे ही बाकी हैं, नम्बर मे दस उगलियो ने क्रमश घिस कर कृपा की है।

मन उखडा हुआ पौधा हो गया है, जिसकी जडो मे अभी इतना पानी है कि सही मिट्टी मिलते ही जडें जमा ले, लेकिन हाय! असमय मे ही कही सूखा-कहीं बाढ नजर आती है, जड न हो पाने की भी विडबना सताती है। क्या बताए ! लगता है शिला होते ही, फिर कोई उद्धार करके सारे श्रेय न ले जाए।

हाय ऐसा युग ! उद्धार के लिए ताक लगाए लोग,
ऐसे युग मे हम पैदा क्यो हो गये हा शोक !

2
आखो की बनावट बनाम सिरफिरी उपमाए

एक जमाना था जब आखे कालीन की तरह रास्ते मे बिछी रहती थी। स्त्रियाँ पलको की नोकदार झाड़ू से पन्थ बुहारा करती थी। आज के युग मे ऐसे बढ़िया झाड़ू आ गए है कि अब पुरानी उपमाए फीकी पड गई हैं और कुछ कुछ बेसिर-पैर की होने लगी ह।

पलको की चिक डालकर और पुतली के पलग बिछा-बिछा कर प्रिय का सुलाने वाली नायिका के खालिस प्रेमी को भाप लेना चाहिए था कि वही नायिका जब आखे फेर लेगी, तो उसकी खाट भी खडी कर देगी। रतनारे नैनो की महिमा अब तो डाक्टर ही जाने। हाय वह श्वेत-श्याम रतनार की उपमाए देने वाले रसिक कहा गए! अब तो आखे गुलाबी होते ही उन आखो मे कोई आखे नही डालता चाहता। जी हा! आखें दिखानी हैं तो सिफ आख के डाक्टर को ही दिखाइए। गुलाबी हुई, मद छलछलाती वे आखें देख देखकर जहा रसिको ने उपमाओ के ढेर लगा दिए थे, आज उन सबको मलवे का ढेर समझकर अरसिक डाक्टर कह देता है 'कन्जेक्टिवाइटस' रोग है—छत का रोग? आखो का तो हर रोग ही छूत का रोग रहा है। आखें छू जाती हैं, तो दिल मे जाने क्या क्या होने लगता है। जी चाहता है उन आखो मे डूब जाए, पर ठहरिए—डाक्टर ने वहा 'खतरा है' का क्रॉस लगा रखा है। आप मसीहा बनकर क्यो लटकना चाहते हैं?

मछली की उपमाए देख-देख कर मैंने मछलियो को घण्टो निहारा और आखो से मिला मिलाकर देखा कि कही आख की बनावट से मेल खाती हो या फिर मछली को आख की जगह रख दिया जाए तो वह रूप को चार चाद लगा देती हो! पर हाय, निराशा ही निराशा हाथ लगी। असल मे ये उपमाए उन लोगो ने दी होगी, जिन्हे मछली खाना बहुत बेहद पसन्द रहा होगा और फिर उन्हे दाल मे, भात मे, हर जगह आख ही आख दिखाई दे रही होगी। सच कहे तो वे आख पर रीझे ही तभी होंगे, जब उन्हे उसमे मछली का साम्य नजर आया होगा। पर यह तो बताइए यह उपमा वाली

मछलिया रोहू पाम्फ्रेट हैं या फिर गोल्डन फिश, जो आपके एक्वेरियम मे बन्द हो गई है ?

हिरणी-सी आखें प्राय उन हिरणियो की याद मे उपमाए बनकर ठहरी होगी, जो कुलाचें भरती चली गईं और लौट कर न आईं। वैसे खजन-नेत्र भी इतनी बार आए कि अपनी यादो की काली लीक छोड गये। खजन चूंकि सिर्फ शरद मे ही आते थे, हो सकता है किसी कविहृदय सिरफिरे की प्रेमिका भी सिर्फ शरदावकाश मे ही प्रेमी को मिलने आती हो, इसीलिए उसे खजन विशेष प्रिय है या फिर शरदावकाश ही विशेष प्रिय रहा हो और किसी की आखो मे न झाक पाने की विवशता अथवा अपनी दब्बू प्रवृत्ति के वशीभूत होकर उन्होने खजन मे ही कई प्रकार की आखे देख ली हो।

आख की रगीनिया देखनी है, तो बिल्लौरी आखो को देखिए। भूरी आखो की प्रशसा भी भूरी भूरी होगी न ! प्रशसा के इस भूरे रग मे बिल्ली की आखो की सी चमक है। यही वे आखे है जो बडे-बडे मुर्गे हलाल कर चुकी है—आप हलाल होना चाहेगे या कच्चा झटका। जरा स्वय को झटक कर देख तो लीजिए न ! कान तक लम्बे विशाल नैना एक लीक मे रहते होंगे तथा कुप्पीनुमा बने हुए आख के सारे आसू पी जाते होगे। काजल से आजे हुए नेत्र जब आग बरसाते हैं, तब ध्यान आता है कि ऐसे मे लोगो ने जलते हुए कोयले से उपमा न दी। कटोरीनुमा आखो मे महीने भर का बजट डूब जाता है, लेकिन बजट गया भाड मे। आखें चार करते समय तो वह सब न सूझा। अब तो यह उम्र भर का रोना है और रोने का काम आखें ही तो करेंगी।

आखो के फ्लैट मे बसने के लिए जो लोग लिफ्ट मागते है, वे सोच लेते है कि अब आखो मे ही बसे रहे—और कही जगह नही बची। और फिर यहा तो हर वक्त आपको सूली पर लटकाए जाने का प्रोग्राम रहता ही है, इसीलिए आखो मे बसने का सलीका और तहजीब सीखिए। यहा से जो गिर जाते है, उन्हे गहरी चोट लगती है और उसकी दवा कही किसी लुकमान के पास भी शायद ही मिल पाए। शराब छलकाती आँखो मे बेरुखी देखकर हैरत मे न आए। अपने कैलेण्डर की तारीख देख लें और सरकारी घोषणा-पत्रो के साथ मिलान करें। ड्राई डे के दिनो मे वहा भी शराब छलकाने की मनाही हो गई, अत उन दिनो को 'मुहब्बत-बन्द' दिन समझ ले।

हा, आज की युवतियो से आखें मिलाने से पहले सावधान ! आप कही उनकी आखो मे डूबने के लिए हाथ पाव मारना चाहे, तो वहा बैठकर उपमाओ की झडी न लगायें वरना इन कमसिन कान्वेन्टी नेत्रो से 'स्टुपिड', 'नानसेन्स' की वो झडी लगेगी जो आठो पहर बनी रहेगी। फिर आपकी आखो को कोई उल्लू-सी आखे या बैल-सी आखे कहकर उपमाओ के क्षेत्र मे कुछ नया जोड जाए, तो दोषी आप ही होगे। मधुमक्खियो को छेडने की बात भूलकर भी न सोचिए और न ही उनके छत्ते मे हाथ डालिए।

3

तीन बेर खाती नायिकाए

कहते हैं एक जमाने मे चन्द्रमुखिया अपने डीलडील को इतना ज्यादा सुडौल बनाने पर उतारू हो उठी कि उन्होने अपने नाश्ते, दोपहर व रात के भोजन मे सिर्फ एक-एक बेर खाने का ही निणय लिया और तीन बार खाने वाली इन कोमलागियो ने डार्यटिग का ऐसा शानदार रेकार्ड कायम किया कि वे खुद एक नमूने की चीज बनकर रह गईं। उनकी फूकमार देहयष्टि तेज हवा से डोल उठती। सास लेते समय वे चार कदम पीछे हो जाती तो साँस छोडते समय आगे! (किसी कन्या का अस्थमा दमे या की शिकायत का कोई केस नही मिला) उसकी देह हिंडोले सी ऐसे झूलती जिस पर कोई चाहे तो क्पडे लटका कर सुखा ले क्योकि सासो की हवाए तो चलती ही रहेगी। लगता है, वे ढाके की मलमल की तरह महीन यानी सूक्ष्मलता भी रही होगी और अगूठी मे से आर-पार निकल जाती होगी। वैसे तो वे चाहती रही होगी कि अगूठी कमर के माप की ही बने। ताकि वे समूची मोने मे मढी नगों मे जडी रहे। ये कोमलागिया कही किसी अग को बढने न देती थी और रोटी-पानी में कटौती करके अपनी हड्डियो पर मास की झिल्ली ऐसे ओढती कि बीच मे से हडिडया झाकती रहती। कठ से शख ध्वनि निकले, इसलिए गर्दन शख-सी होती। और बिना सुराख के ही उसमे से वीणा की ध्वनि निकलती। उसने अपने घर आगन की दीवार पर अपना डायटिंग चाट लटका रखा था। सूख-सूखकर काटा होने और फिर आख का काटा बनकर खटकने न लगे, इस बात का भी नायिका को सदा खतरा था।

उसे प्रात काल ही तीनो बेर ऐसे थमा दिए जाते जैसे किसी बच्चे को गिनती सिखाने के लिए मनके दिये जाते हो। नायिका एक बेर से उसकी गुठली अलग करके उसे बत्तीसो बार चबाती और फिर जुगाली करके दोपहर तक या समय बिताती। बिहारी की नायिका का वर्णन पढ-पढ कर एक कोमलागी सूक्ष्मलता ने भी एक ही बेर खाने का प्रण किया और तीन बेर मगाकर अपने तीन दिन के भोजन को नमस्कार किया। यो भी कुछ दिन के

लिए पति बाहर गए थे अत विरह का भी अच्छा मौका था। एक दिन एक बेर खाने पर आखो के आगे अधेरा आया और फिर तारे नजर आने लगे। अगले दिन चक्कर आए और सिर दर्द बढ गया। तीसरे दिन उसे लगा आखे धस रही है, कपोल पिचक रहे ह, दात बाहर को आ रहे हैं उसने चट से आईना देखा। सब कुछ धुधला-धुधला नजर आया। सिर घूमने लगा और वह दिल थामकर बैठ गई। देह बेर की गुठली-सी हो गई, रग बगनी और हाथ पाव जैसे कई दिनो से पडी ककडिया हो गई हो। उसने फिर स्वय को आदमकद आईने मे निहारा और सोचा ऐसे ही देह पर तो पाच तोले की साडी पहनने वाली विहारी की नायिका यानी छटाक भर कपडे ढोए हुए, जब पाव मे घुघरू झनकाती होगी तो कवि-हृदय डोल जाता होगा। तभी सामने पति आ गए। प्रेमी थे, तो कविताए करते ये। आखो मे प्राय डूबते उतराते थे। विरह मे सूख कर मुरझाते हुए देखकर वे जाने कौन सी अमर कृति ससार को दे जाए, यही सोच-सोचकर वह मन ही मन प्रसन्न हो रही थी कि तभी वे आए और सूक्ष्मलता की सूखती देह, धसती आखें देखकर उन्होने सिर पीट लिया और बोले, "तुम्हे जब खाने-पीने की कभी कोई कमी नही होने दी तो यो भूख-हडताल करके तुम लोगो को क्या बताना चाहती हो ? यो भुतनी-सी बनी, लटें बिखराये हुए तुम किसे डराने के लिए बैठी हो ? कही तुम्हारा कोई और नेक इरादा तो नही कि तुम आत्महत्या करके मुझे जेल भिजवाना चाहती हो।"

पति के ये सूत्र वाक्य सुनकर सूक्ष्मलता ने सिर पीट लिया। आखो के आगे फिर वही अधेरा आने लगा जिसमे तारे दिखाई देने लगते है। रक्तचाप बढ गया। दिल घटने लगा। अग-अग उद्दड छात्र सा जवाब देने लगा। बुद्धि जड हो गयी। यो एक जमाने मे जड-से-जड स्त्री को भी पराये पुरुष (अथवा मर्यादा पुरुषोत्तम की) की चरण धूल मिल जाये तो वह पुन स्त्री हो जाती थी, लेकिन यह जडता उसे ऐसी जकड मे ले डूबी कि अब सिर्फ डॉक्टर ही उनका रुपया डुबोने के लिए बाहे ऊची किये खडा था। तीन बेर खाने वाली उस सुन्दरी के लिए पति महोदय ने उलटी गगा बहा दी और उनके विरह मे पत्नी ने अपनी स्वास्थ्य की लुटिया डुबा दी।

4
तिलनामा कातिलनामा

रूपसी के गाल पर काला तिल देखकर उनका तिल भर ज्ञान जगा और तिल तीर-सा सीधा हृदय पर जा लगा। उन्होने एकदम ठडी आह भरते हुए उसे निहारा। उन्हे लगा कलावती कन्या ने भी करुण नेत्रो से उन्हे पुकारा। वे द्रवित हो उठे। प्रवाह मे आ गये। हाक लगाते हुए बोले

'अये! जीना पहाड लगता है।'

'यही वह तिल है जिसका ताड बनता है।'

तभी पाँव के बिछुए ने डक मारा। उन्होने माग के सिंदूर की ओर निहारा। वह सकेत से कुछ कह रही थी। चौराहे पर जैसे लाल बत्ती सारी हरकते स्टाऽऽप करने का सकेत दे रही हो। तब कलावती कन्या की ओर उन्होने आह भर कर कहा, 'हाय! इन तिलो मे अब तेल नही रहा।'

सहसा उन्हे अपनी पत्नी का चेहरा स्मरण हो आया। उन्होने उसके गाल का तिल सम्मुख खडी रूपसी से मिलाया तो पाने लगे कि तिलमिलाते ही वे तिलमिलाने लगे।

यह मुह पर बजरबट्टू की तरह लगा है।
तिल को देख कर तिल भर चिंतन जगा है।
तिल ऐसे तिल उफ! इतने भा गये
गोल चेहरा देखा, तिल के लड्डू याद आ गये।
यह तिल मक्खी की तरह रूप के गुड पर ललचाता है
पख लपटाये सिर धुनता है किन्तु उड न पाता है।
सुन्दर चेहरे पर तिल देख कर हृदय मचलने लगा
दाल मे नमक बराबर होने पर भी,
जायका बदलने लगा।
आँख के कोने पर तिल, जैसे खजन पक्षी कोई आतुर है आने को
भौहो की झाडियो मे आड लेकर छुप जाने को।

नाक के पास तिल मस्से, देख कर हसे, कि दृष्टि जो उडी-उडी फिरती थी, उस पर यह मस्सा पेपरवेट का काम करेगा। दबाव डालेगा। उडने न देगा। रूप के गाल पर ककर है, तिल के साथ मस्से का योग भयकर है, गालो मे गडढे पडते थे, तिल धसता था। मन जैसे माझी सा भवर मे फसता था।

होठ के गुलाबी पत्तो पर सवारा है, काला तिल सिर फिरा भवरा है, गुन गुन यह गाता है, तिल वह ब्यूटी स्पॉट है, जहा पागल मनवा भरमाता है। पिकनिक मनाता है।

तिल देख-देख कर हा, हा, मन डोला,
रूप की भट्ठी मे यह कच्चा कोयला।
काठ की हाडी-सा दूजा रग चढे न,
सौन्दर्य घटे-बढे यह तिल भर बढे न!
चाद के चेहरे पर दाग-सा तिल
सगमरमरी चेहरे पर हाय यह तिल।
सेव से गालो पर तिल देखकर मन भटक जाता है।
सिद्धातत आकर्पण गुरुत्वाकर्पण पर अटक जाता है।
रूप की धूप हल्की हल्की है।
ब्रह्म के लेख लिखते समय कलम की नोक से ज्यो स्याही की बूद ढलकी है।
सौन्दर्य का अगाध सिन्धु, विरामचिह्न का बिन्दु।

प्यार की भापा, सौन्दर्य की परिभापा जो न समझे उनके लिए यह काला अक्षर भस बराबर रहता है वरना रूपसी के गाल का तिल देखकर ही हर कोई उसे कातिल कहता है।

पुनश्च इस लेख को पढते समय ध्यान केवल तिल पर रहे और यदि यह तिलनामा आपको कातिल बनाने का श्रेय देकर औरो के मन मे आपके प्रति तिल भर सहानुभूति जगा सकता है, लेख पढने के बाद आखें मूद कर तिल का पारायण करें। तिल के लड्डू आपके दोनो हाथो मे होगे।

5

रसोईघर की मुहावरेदानी

रसोईघर की पिटारी खोलकर देखिए तो लगता है, सारे मुहावरे भी यही पेट पालते रहे और फिर खिडकी से ताक-झाक करते हुए लोगो की जवान पर पहुचे और सिर पर चढ कर बोलने लगे। फिर उन्हे राख से माज-माज कर चमकाया गया और कही उस पर कलई की गयी और कही मुलम्मा चढाया गया।

कटोरदान की भाषा कलुछी समझती है और इसीलिए जब कटोरदान की कटोरिया मुह तक भर आती है तो कलुछी दोनो हाथो से उसे उलीच कर कटोरदान का कल्याण करती है।

घर की मुर्गी ज्योही चौके मे घुसी, वह डिब्बे मे बद दाल की तरह होने लगी। उसे कभी धीमी आच पर रखा गया तो कभी तेज आग पर, लेकिन रसोई भी वह क्षेत्र है जहा हर किसी की दाल नही गल सकती। न गलने पर उन्हे दाल मे कुछ काला नजर आता है और तब उसे टेढी उगली से ही निकाला जाता है। यो टेढेपन मे भी वह बाकापन है कि टेढी खीर भी इसी रसोई मे ही जन्मी और अपने टेढेपन के कारण तिरछी होकर गड गयी। दूध-दही की नदियो का उद्गम भी तो रसोईघर है। यही से यह गोमुखी गगा निकलती है और रामराज्य के सपने साकार करती है। मूली-गाजर की तरह सब्जिया काटी गयी और उनकी शीरनी बाटी गई।

पानी नल से लेकर दमयती तक के किस्सो मे व्याप्त है क्योकि नल दमयती को सोती छोड छाड कर चला गया। आज भी जिन शहरो मे पानी की कमी है वहा सोती हुई दमयतिया ऐसे ही नल द्वारा छोडी जाती है और उम्र भर उनके आगे पानी भरती नजर आती है।

वैसे पानी ने भी कितने लोगो को पानी-पानी किया और चुल्लू मे पहुच कर इसने हथेलियो को समुद्र बनाया और डूबने के लिए पर्याप्त बनने की कोशिश करने लगा। पानी से लेकर दाल के मुहावरे, सब रसोई के क्षेत्र मे

ही उपजे तो टेढी खीर के कच्चे चावलो को भी इसी पानी मे पानी मिला। वर्तन भी खनक-खनक कर चूडियो की भंकार से होड लेने लगे और जब ये माजे-सवारे गये तो दरपन के से मोर्चे वन कर उनमे भी ऐसा निखार आया जैसा कि तबीयत साफ होने पर आया करता है। हथेलियो मे वे मुह दिखाई देने लगे जो प्राय जिस थाली मे खाते हैं उसी मे छेद करते हैं। ऐसे थाली के बैगन की जब दुर्गति हुई तो भी वे वने तो सिफ भुरता या चटनी। और चटनी बनने के लिए ओखली मे सिर देना ही पडता है। मूसलचद की मार पडेगी तो चटनी चटनी होगे। लेकिन ये मूसलचद दाल-भात के मूसलचद से भिन्न जरूर होगे, पर है तो वही जिन्हे कवाब मे हडडी कह कर सम्मानित किया जाता है। यह हडडी कुत्ते की मुह लगी हो तब तो उसके दातो की तेज पकड से छूट ही न पायेगी। वैसे दात की पकड ही वह पकड है जो हर चीज को मजबूती से पकड लेती है और घसीट कर ले आती है। छत्तीसो व्यजन बने हो लेकिन उनके साथ यदि किसी भलमानस बहन का मुह वना हुआ मिलता है तो कोई उन छत्तीसो व्यजनो की तरफ मुह उठा कर भी न देखेगा। और यदि इसी मुह पर बेमोल की मुस्कान की मिठाई नजर आये तो बेमोल बेभाव बिके हुए लोग मिलेंगे। फिर आप छत्तीस पदार्थ न भी बनाइए तो भी घर की मुर्गी को कोई कुछ न कहेगा। वैसे घर की मुर्गी दाल बराबर होने लगी तो दाल के भाव मुर्गी से भी वढ गये ताकि अवमूल्यन और मुद्रास्फीति को सभाला जा सके। वैसे मुद्राओ मे भी गुस्से की मुद्रा तो बिल्कुल ऐसी है जैसे दूध मे उफान आता है और उसे पानी के छीटे दे-दे कर शात किया जाता है।

लगता है रसोई मे ही रहने के कारण सारी महिलाओ ने ही मुहावरे-दानी मे बात बेबात मे मुहावरे डाल-डाल कर बाकी लोगो के पास भिजवाये और कलुछी से उनकी कटोरियो मे साभर की तरह डाला जिसे कुछ पी गये, कुछ पचा गये, और कुछ उसमे दाल का दाना ढूढने के लिए गोताखोर बन गये। कुछ ने इसे वणन का विषय बना डाला और मुहावरेदानी का सारा नमक-मिर्च मसाला अब सबका जायका बदलने के लिए पर्याप्त है।

6

आख का काटा

अनुजा के पाव मे काटा यो चुभा कि मुह से उई, हाय उपफ के सिवा कुछ न निकला। पाव से खन की बूद आ टपकी, आख से आसू छलक पडे। उसने 'सुनो जी' की दर्द भरी हाक लगाकर अपने पति चिन्तकलाल को बुलाया तो चिन्तक जी चौंक गये। वे हमेशा की तरह अनुजा से चार कदम आगे ही चल रहे थे। कवि तो थे ही, दर्शनशास्त्र के भी परम विप्याता थे। एक छोटी सी बात को लेकर वे कही से कुछ बटोरने लगते थे। 'अब सुनो जी' की हाक से वे पहले चौंके फिर मुडकर देखा। सामने अनुजा जमीन पर बैठी

हाय ! उफ्फ ! कह रही थी । चिंतक जी पास जा पहुचे । उन्होने पत्नी के पाव मे चुभे उस काटे को देखा । लम्बा, पतला, सफेद काटा और साथ ही लटकी एक लम्बी-सी टहनी । अनुजा रोई चिंतक को लगा यह काटा नही रिकाड की सुई है जरा सा रिकाड को छू ले तो मनपसद या अनचाहे गीत कायक्रम आरम्भ हो जाता है। अत वे बोले, "काट को लेकर अनेक प्रकार का राना शुरु होता है। यही काटा, निर्देशक, फिल्मी हीरोइन के पाव मे दस बार चुभोकर उसे गीत गाने को कहता है। प्रीतम वैद को बुलाने को कहता है। कोई रास्ते चलता नायक यदि यह काटा अपने हाथ मे निकाल देता है तो वही काटा सीधे उसके हृदय के आरपार हो जाता है। रूपसी का रूप उसकी आखो मे काटे-सा चुभ जाता है। वह नन्हा-सा काटा एक समूचे तीर का रूप धारण करके नायक को बेध जाता है। पाव मे चुभे हुए काटे तथा दामन थाम लेने वाले काटा मे भी अन्तर है। रास्ते चलते हुए नायिका का दामन जब-जब काटो मे उलझा है उन झाडियो से कोई न कोई हाथ बढकर आगे आता है और गाते-गाते उन काटो से उसकी साडी अलग कर देता है। तुम तो जरा-सा काटा चुभते ही जमीन पर धम्म मे बैठ गई । कमर टेढी करके पाव की एडी कही किसी पत्थर पर टिकाकर तुम मुझे हाक लगाती, सुनो जी ।"

"ओफ्फोह, मेरे पाव से खून निकल रहा है और आप जाने कहा-कहा की हाकते जा रहे हैं—मैं कहती हू इसे खीचकर अलग कर दो जी, हाय !" अनुजा ने काटे वाला पाव आगे बढाया।

चिंतक ने पत्नी का पाव हथेली पर यो रखा जैसे अभी काटा निकाल देंगे। पर वे फिर चिन्तन की मुद्रा मे आ गये। बोले, "हथेली पर पाव" रख लो, लोग तो हथेलियो मे जान लेकर चलते है। वीर धीर-गभीर सैनिक हथेलियो पर सिर लेकर रणक्षेत्र मे कूद पडते हैं। मैं हथेलियो मे पाव लेकर इस पाव से उस शूल को अलग करना चाहता हू जो तुम्हारे पाव मे गडा है। मैं चाहता हू प्रिय किन्तु मेरे मात्र चाहने से क्या होगा ? हे प्रिय ! यदि तुम ऐसे समय जिस समय तुम्हे सचमुच काटा चुभा है, काटे का दशनशास्त्र टटोलो तो तुम्हे जो कुछ सूझेगा वही परम सिद्धि के क्षण होगे। यही चरम स्थिति है, जिसमे दशन और ज्ञान दोनो जन्म लेते हैं। ज्ञान, दशन का ही जुडवा भाई है। चुभने के इन क्षणो मे यदि तुम सोचो तो शूल से कटक और कटक से काटे के सारे मुहावरे लोकोक्तिया तुम्हे सूझेगी । जो तोको काटा बुवै लेकिन काटा बोया कहा जाता है, इसके बीज तो साहित्य म ही

मिलेंगे। इस काटे के साथ लगी यह नन्ही-सी टहनी इसी बात का आभास दे रही है कि, इस शाखा पर कभी फूल खिले होगे। असल मे हर शाख पर फल खिलने की बात आती है तो हर शाख 'पे' उल्लू बैठा है का चिंतन सिर पर चढ कर बोलने लगता है। नोकदार चीज चुभती है तो बोलती है। यह शुक्र है इस काटे की एक ही नोक है वरना यह तुम्हारा पाव छलनी-छलनी कर देता। हम लोग रास्तो की धूल छानते फिरते। तुम्हारे पाव मे काटा चुभा देखकर मेरा हृदय छलनी-छलनी हो रहा है। तुम्हारे पाव मे यदि यह काटा कोई छेद कर गया, तो मेरे मन मे भी अनेको सुराख हो जायेंगे। ठहरो मैं इस काटे को अलग कर दू। यह शुक्र है, इस सुई के साथ यह टहनी है जैसे किसी चुभने वाली सुई मे धागा डाल दिया गया हो, ताकि वह सुई भीतर प्रवेश करे तो उसे उसकी पूछनुमा धागे से वापस खीचा जा सके। धागा, सुई की पूछ भले ही हो, पूछ से खीचने वालो के हाथ मे खिचाई का एक सूत्र अवश्य दे देती है। सूत्र पक्का हो, मोटा हो, दमखम वाला हो तो, खिचाई करने वाले के हाथो मे निशान छोड जाता है। वैसे निशान छोडने के लिए छाप गहरी होनी जरूरी है और छाप असल मे प्रभाव है। जो छूटता है तो फिर यो कि उसके रग नही छूटते। अब तुम्ही देखो न इस काटे ने तुम्हारे पाव की यह क्या दशा बना दी है। ऐं यह काटा कहा गया ?"

चिन्तक जी को पाव मे काटा न पाकर जोर का झटका सा लगा था। पाव हथेलियो से छूट चुका था और सामने अनुजा देवी खडी हुई थी—सीधी तनकर। चिंतक जी ने पुन दर्शन बघारा, "मैं जानता था तुममे धैर्य की कमी है। तुम काटे को पूरी तरह चुभने भी नहीं दोगी और उसे पहले ही निकाल फेकोगी। यह काटा कोई साधारण काटा न था। यह उसी काटे का ही कोई सगा सम्बन्धी था जो प्राय स्त्रियो की आख का काटा होता है। तुम्हे जब भी कुछ खटका वह आखो का कांटा बन गया। हृदय मे शूल सा-चुभा और जाने कितने दर्द पैदा कर गया। इसी काटे के कारण ही तो तुमने सम्बन्धो को सौ-सौ बार झटके दिये। आख के काटे और साधारण काटे मे कितना अतर है।" लेकिन अनुजा ने उन्हे आगे न बोलने दिया। उसने आख के काटे के मुहावरे का सूत्र हाथो मे ले ही लिया और एकदम बोली, 'हा जी, तुलना करने पर ज्ञात होता है कि दोनो काटे है इसीलिए चुभते भी है खटकते भी है। एक की सुईनुमा नोक नही, आकार नही, रूप नही, रग नही, पर चुभना

ऐसे है जैसे किसी ने सीग गडा दिये हो और दूसरा उसके लिए सिर्फ चप्पलें पहनकर चलिए, चप्पलें जूते कुछ भी हो आपके पाव धरती पर पडें तो चप्पला जूतों के साथ ही। आजकल जूते-चप्पल महगे भले ही हो चुके हो लेकिन जिनका चरित्र अच्छा हो उन्हे जूतो की कमी नही रहती। काटा चाहे खटके अथवा चुभे वह काटा था, काटा है। काटा रहेगा।" अनुजा की अभी बात पूरी न हुई थी कि चिंतक जी के पाव से चप्पल तनिक उतर गई और जमीन पर पाव रखते ही वही काटा उन्हे चुभ गया।

"नानसेन्स क्या तमाशा है। काटा अपने पाव से निकाल कर मेरे पाव तले बिछा दिया। हाय रे मैं मरा ।" वे कराह उठे। अनुजा तुरन्त बोली, "मैं तो आपके पथ के सारे काटे चुनकर उसे फूलो से भर दूगी। पथ के काटे आख के काटे मे अन्तर यह है कि ।"

"ओफ्फोह, चुप करो—शट-अप।" कहकर वे काटा निकालने लगे। लेकिन काटा पाव के भीतर कही प्रवेश कर चुका था। अनुजा ने अब उनके पाव को हथेली मे ले लिया, बोली, "जीवन के रास्ते काटो भरे हैं, जिन्दगी काटो की सेज है, उच्च पद काटो का ताज है। इन सारे काटो का अर्थ तभी समझ मे आता है, जब वास्तविक काटा सचमुच चुभ जाता है? क्यो जी, यह चुभन कैसी है? मीठी सी चुभन है या सुई सी चुभती है। इक दर्द-सा उठता है या ?" अनुजा की बात पर उन्होने हाय-तौबा मचा दी, तो अनुजा ने अपने पर्स मे रखे सुई धागे मे से सुई को हाथ मे लिया और उनके पाँव को कुरेदते हुए उन्हे कुरेदना शुरू किया, "काटे से काटा निकालने की बात है जी! वैसे तो अगर शाखो पर, झाड़झखाडो पर, फलो के साथ लगे काटो मे कही छेद होता तो हम हरेक काटे मे धागा डाल देते, ताकि वे कही चुभे तो उन्हे वापस हाक लगाकर खीचा जा सके, लेकिन यह काटा औरो के पाव मे छेद करता है, अपना स्थान बनाना चाहता है कही भीतर गहराइयो तक जाना चाहता है, देखिए तो कैसे भीतर प्रवेश पा गया।"

"ओह अनुजा! प्लीज चुप हो जाओ। तुम्हारी हर बात मुझे इस समय काटे सी गड रही है, चुभ रही है।"

तब अनुजा ने उनके पाव का वह नन्हा-सा काटा सफलतापूर्वक निकाल कर एक मुस्कान का झण्डा गाडते हुए कहा।

"सुनो जी खाल सब की एक जैसी होती है। दर्द भी हर किसी का

एक-सा होता है। लेकिन उस समय जब आपके यह ज्ञान और दर्शन नाम के जुडवा भाई आ खडे होते हैं, तब आप दूसरे की खाल मे चुभे काटे पर प्रवचन आरम्भ करते हैं, उस समय कितने नये दर्द उभर आते है इसका एहसास आपको नही हो सकता। उस समय वह एक काटा ही नही होता। लगता है उस काटे की सौ सौ नोक निकलती आ रही हैं। फिर काटे से ज्यादा उनके साथ कहे शब्दो का दर्द होता है। मैं तो कहती हू, शब्दो के काटे ज्यादा नोकदार होते हैं।

"हा, ऐमे लगता है सौ डक का विच्छू जहर उडेलने लगा है ।" चितक जी ने जोर से कहा। पाव को झटका दिया फिर से चप्पलें पहन ली। पत्नी अब बोलने लगी थी और चितक जी सोच रहे थे—पाव को काटो से बचाना हो तो चप्पलें पहनी जा सकती हैं, लेकिन यह काटो भरे शब्द जो उनके लौह शरीर की खाल वेधकर कही भीतर घुसते चले जा रहे थे, उनसे कैसे बचा जाय।

7

सुदामा का द्वारपाल दर्शन
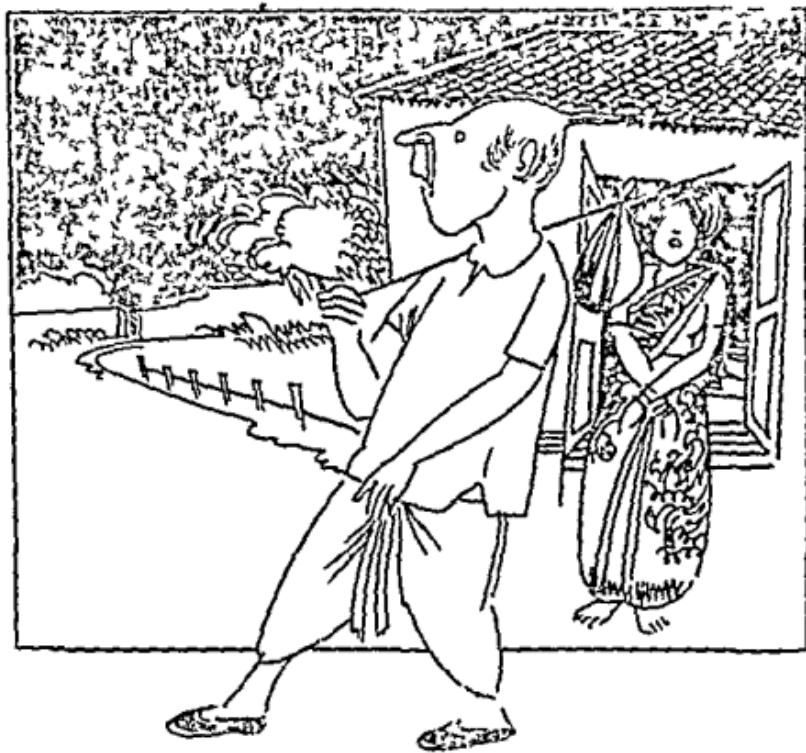
सुदामा की बीवी ने अपनी हालत का सौ-सौ बार चिल्ला कर ढिंढोरा पीटा, परन्तु सुदामा के कान पर जू तक न रेंगी। आखिर वह भी तिरिया हठ पर उतर आई। उसने टूटा तवा और फूटे बर्तन लाकर सुदामा के सामने पटक दिये और भूख-हड़ताल करके बैठ गई। सुदामा पत्नी की रूठने की मुद्रा से तो परिचित थे लेकिन उसे मनाना न जानते थे। जब भी वह उसके आगे झुकते उन्हें लगता कूबड़ निकल आएगा, इसीलिए वह भी वहीं मुंह फेरकर बैठ गए। दोनों एक-दूसरे से काफी देर तक रूठे रहे अन्तत हार कर दोनों झल्लाये हुए एक दूसरे पर चिल्लाने को थे कि दोनों की आंखें चार हुईं।

सुदामा का भी मुह खुलने लगा, यही सोचकर श्रीमती सुदामा की आखे आग उगलने लगी। वह पाव पटकती हुई रसोई मे गई। एक फटा-सा टुकडा उठा कर पडोसिन से मागे हुए अधटूटे चावलो को पोटली मे बाधा और फिर भन्नाते हुए बोली—"जाओ, कृष्णनाथ को जाकर अपनी दीन दशा का यह फोटू दिखाओ।"

"हा, तुम ठीक कहती हो" कहकर सुदामा ने पोटली सभाल ली और तेजी से बढने को ही थे कि पत्नी का गुस्सा ठण्डा हो गया। बोली, "ठहरो, ऐसे नही। महल तक जाने का रास्ता तुम्हे ज्ञात नही, रास्ते की कठिनाइया तुम नही जानते। कृष्णनाथ तुम्हारे मित्र हैं, लेकिन वे जिस सिंहासन पर आसीन है वहा तक पहुचने के लिए तुम्हे बहुत से पापड बेलने होगे। अत उस काटो से भरे रास्ते को जानना अति आवश्यक है। अत हे प्रिय! जाने से पहले मेरी कुछ बातें गाठ बाध लो।"

सुदामा ने तब लम्बी चोटी पर गाठ बाधते हुए कहा, "लो, तुम अब हमेशा की तरह बोलती जाओ? मैं यही बैठा हू।"

श्रीमती सुदामा बोली, "यहा से दायें जाकर जब तुम ऊबड-खाबड रास्तो से आगे जाओगे तो सबसे पहले कृष्ण के महल के बाहर तुम्हे द्वारपाल के दशन होंगे।

सुदामा बोले, "यह द्वारपाल क्या होता है?"

श्रीमती जी तपाक से बोली, "द्वार ही जिसका लालन-पालन करता है प्रिय। दरवाजा ही उनका पालक है। वे दरवाजे के बाहर रहकर भी दरवाजे के भीतर की नीति जानते हैं। बाहर की राजनीति के वे विशेषज्ञ हैं और अपनी नई नीतियो की ऐसे घोषणा कर देते हैं कि भीतर रहने वालो को उनकी कानोकान खबर न हो। इसका नाम कही चपरासी, कही लाट साहब और कही दलदल भी कहा जाता है। सबसे पहले तुम्हे उसे अच्छी अर्घ्य चढाना होगा। वेदो मे बाकी सब बातें कही गई है, किन्तु द्वारपाल की पूजा के मत्र वहा भी नही मिलेंगे। यह गुप्त सूत्र है जो हर किसी को ज्ञात होने जरूरी है। ऋषि-मुनि इस मामले मे भाग्यशाली रहे, वरना अगर तपस्या छोडकर उन्हे भी कही जाना पडता तो वे भी मुह की खाते और द्वारपाल के पास पहुचने के कुछ मन्त्र लिख जाते। खैर! मैं जो मन्त्र तुम्हे दे रही हू, वह महामन्त्र है। द्वारपाल को अपनी यह घटिया चावल की पोटली मत दिखाना, वरना वह

तुम्हे घटिया आदमी जानकर, कभी भीतर न जाने देगा, उसे मेरी यह अगूठी दे देना। इसे मैंने बहुत मुद्दत से आपसे छिपा कर रखा था। इस मुद्रा को देखते ही उसकी मुद्रा बदल जाएगी और वह दर्शनार्थियो की भीड से हट कर आपको भीतर ले जाएगा।"

सुदामा ने मुद्रा देखी तो अपने विवाह के दिनो का स्मरण हो आया। उसने तुरन्त स्मृतियो को पोटली मे बाधा और अगूठी को कसकर थाम लिया। सुदामा की पत्नी आगे बोली, "द्वारपाल के मुख पर इस अगूठी को देखते ही प्रसन्नता की एक किरण फूटेगी और तब वह मुख से कुछ फूटेगा तो उससे अर्थ फूटेंगे। वही से तुम्हें महल के भीतर जाने का रास्ता पता चलेगा। अपने मित्र के पास पहुचने के लिए पहले तुम्हे इन पालको से निपटना होगा। ये पालक प्राय द्वार पर खडे मिलेंगे। ये औरो को रास्ता बताने के लिए तैनात होते हैं। लेकिन इन्हे रास्ते पर लाना कठिन काम है, और यदि कोई लाख समझाने पर भी रास्ते पर न आये तो उन्हें ये लोग रास्ते का आदमी बना देते हैं। अत विद्वान लोगो का कहना है कि पहले इन्ही की पूजा करो तब कही अपने आराध्य के बारे मे सोचो। द्वारपाल अगूठी देखते ही ऐसे प्रसन्न हो जाएगा, जैसे उसे सात लोको का साम्राज्य मिल गया हो, और हा, द्वारपाल से मुस्करा कर बात करना, लेकिन उस मुस्कराहट को भी पहले पहचान-परख लेना। अगर तुम्हारी मुस्कराहट मे कही बनावट या कही तानाकशी हुई तो द्वारपाल की सदा नीची रहने वाली मूछें फडफडा कर उठेंगी और नाक के नथुनों से धुआ उगलती हुई, आख से चिंगारिया बरसाती हुई, तुम्हें ऐसा नाच नचायेंगी कि कोई उस्ताद अपने चेले को न नचा सका होगा। अब जाओ भी, मेरे मुह को टुकुर-टुकुर क्या ताक रहे हो।"

सुदामा को जैसे सहसा जोर का झटका लगा और वह तुरन्त उठ खडा हुआ। जाने को अभी पहला कदम उठाया था कि पत्नी ने फिर ताकीद की, "देखो, हर कदम फूक-फूककर रखना तुम्हारी आदत है, कि हर कदम बिना सोचे-समझे ही उठा लेते हो। ऐसा न होता तो एक ही गुरु के शिष्य होकर ऐसी हालत क्यो होती। कृष्ण भले ही राजा हो राजा की बुद्धि तो गुरुदेव ने ही प्रदान की।"

सुदामा ने आगे बढने को अगला कदम उठाया ही था कि पत्नी के वचन फिर सुनाई दिये, "और सुन लो, कहे देती हू, अपने मित्र से हिस्सा लेकर

आना, अपने गुरु की दुहाई देना, माग के लिए हडताल करनी पडे तो भी पीछे न हटना, ऐसे ही खाली हाथ मुह लटकाये हुए वापस आये तो अच्छा न होगा। समझे !"

सुदामा अब तेज़ी से कदम बढाने लगा था और पत्नी के प्रवचन उसी के साथ छूटते गए। बहुत दूर चलने पर भी उसे कोई महल नज़र न आया और वह थककर वही बैठ गया, तभी पीछे देखा—कोई सफेद लकीर-सी वनी थी। सुदामा ने टटोला तो एक एक चावल का दाना पीछे से एक रास्ता वनाता चला जा रहा था। उसे लगा, उसकी पत्नी तुरन्त भाँप जायेगी कि वह विश्राम करने बैठ गया है, अत वह उठ खडा हुआ। और फिर चलने लगा। तव महलो की चकाचौध से सहसा आँखें चौधियाने लगी।

वह जानता था, अभी द्वारपाल से उसका आमना सामना होगा और उसकी हर मुद्रा पर न्योछावर होने के लिए तत्पर रहना आवश्यक है। अपनी चेतना को जल के छीटे मार-मार कर उज्जीवित किया, चौकाया, जगाया और द्वारपाल के सामने ऐसे जा खडा हुआ जैसे कोई वहुत वडा अपराधी एकदम न्यायाधीश के सामने जा पहुचा हो। द्वारपाल का रूप चमक-दमक देख कर सुदामा का गला सूखने लगा, आखे भर आईं। चलते-चलते टागें रह-रह कर चलने से जवाव देने लगी, परन्तु उसने किसी की एक न सुनी। अव यहा आकर वह एकदम बैठ गया। द्वारपाल ने चिल्लाकर कहा, 'कौन है ? अबे वोलता क्यो नही !"

सुदामा ने कापते हुए कुछ कहने को मुह खोला तो पाया सिर्फ गुब्बार, धुआ वनकर निकलने लगा है। शब्द ही नही रहे। उसने फिर मुह बन्द करके जरा दम लिया और फिर मुह ऐसे खोला जैसे रिकॉर्ड की सुई वदलकर उसे नये सिरे से चला रहा हो। द्वारपाल ने पूछा, "कौन है बे ! बहरा है क्या ?"

सुदामा ने अब तक स्वय को सभाल लिया था और द्वारपाल का रूखापन उसे कही काटने लगा था। पर उसने कनखियो से द्वारपाल को औरो से कुछ लेते हुए देख लिया था। अत उसने भी अंगूठी दिखा दी। द्वारपाल के नेत्रो मे नई चमक आ गई थी। उसकी दशा ठीक वैसी ही थी जैसे क्रुद्ध पत्नी को पति ने खुश करने के लिए बढिया उपहार ला दिया हो। उसके गले मे

सोने का हार डाल दिया हो। वह तुरन्त 'कौन है श्रीमान' कहकर तनिक झुका और झुकता गया। 'वे, अबे' की भाषा से 'महोदय' और 'श्रीमान' की अलकारमय तच्छेदार वाणी पर उतर आया। बातें कुल्फी की तरह पिस्ते-बादाम से भरी मीठी और मीठी होती गईं सुदामा को वह एक कोने मे ले जाने के लिए तत्पर हो उठा, परन्तु सुदामा इशारो की भाषा नही जानता था। किसी से आज तक आखो से बात करने का मौका न मिला था। हमेशा आखें उसे घूरती हुई, चिनगारिया बरसाती हुई ही मिली। यो कृपा का सागर सहसा उमड आएगा, उसे ज्ञात न था। वह वही खडा रह गया। उसने अगूठी निकालकर द्वारपाल की हथेली पर रखने की सोची। द्वारपाल ने हाथ तुरन्त पीछे कर लिये और सुदामा को पीछे की ओर से मुद्रा-दान करने के लिए इशारा किया।

सुदामा की आखो के आगे चार-आठ भुजाओ वाले देवी-देवताओ की मूर्तिया घूम गईं। उसे लगा, एक और देवता सम्मुख खडा है जिसका मुह तो आगे की ओर है और आठो भुजाए पीछे की ओर है। उन भुजाओ पर हाथ लटके हुए है। हाथ जैसे तराजू की तरह ह। उनमे ज्यो-ज्यो भेंट रखते जाय, मुख पर प्रसन्नता की किरण फूटती है, और फिर एक मुस्कराहट बनकर चेहरे पर छा जाती है। आठो हाथ तब सारा माल समेटकर वरदान की मुद्रा मे प्रकट होते है। और कुछ ही देर बाद नये सिरे से लटक जाते हैं। सुदामा पीछे की ओर से गया और अगूठी उसके एक हाथ पर रख दी। तभी दूसरा हाथ बढकर सुदामा की तलाशी लेने लगा। पोटली के चावलो को टटोला। 'इतने घटिया चावल' कहकर उसने मुह बिचकाया, फिर हसकर बोला, "गुरु, यह भेंट मार्का चावल कहा से लाए हो? अपना घटियापन दिखाकर ही तो कृपा पा सकते हो, हो काफी चुस्त चालाक! वाह! वाह! फटी-फटी नजर, फटी फटी चप्पलें, दीन हीन दशा बनाकर लगता है किसी फेंसी ड्रेस के स्टेज से पुरस्कार जीतने के बाद, भाग्य आजमाने निकल पड़े हो। खैर! वहा सामने कुर्सी पर बैठ जाओ, श्री कृष्णा राधाबाई की कॉटेज मे गये ह, लौटेंगे तो दर्शन कर लेना।"

सुदामा का मन टूटने लगा। उसका जी चाहा, वापस लौट जाये परन्तु पत्नी का ध्यान हो आया। जी चाहा बाहर से ही खडे होकर दर्शनार्थियो की

भीड मे शामिल हो जाए। वडे वडे नारे लिये, चिल्लाये—'दशन दो, भई दशन दो !' तभी ध्यान आया, गुरुदेव जव-जव उन दोनो से दर्शन शास्त्र की वातें करते थे तो सुदामा अक्सर आखें झुका लेता था आज अगर कृष्ण लीला मे मगन हैं तो इसमे कसूर किसका है । दर्शन शास्त्र मे एम० ए० कर लेने पर भी लोग दर्शन योग्य नही वन पाते । कृष्ण की तीक्ष्ण बुद्धि के सामने पराजित थे ही । आज उसके वैभव के सामने नतमस्तक भी हो गए । फिर देखा, द्वारपाल महल के भीतर गया है। सुदामा साफ समझ गए थे कि कृष्ण महल के भीतर ही होगे । औरो को वरगलाने तथा वातें वनाने मे द्वारपाल कम नही होते । उसने कुर्सी सम्भाल ली और सिर थामकर वैठ गया ।

द्वारपाल ने कृष्णनाथ के सम्मुख सिर झुकाकर एक दवी-सी मुस्कराहट से कहा, "वाहर एक फटेहाल दरिद्रनारायण आपके दर्शन के लिए हडताल करके वैठा है । अपने आपको सुदामा कहता है और "

"सुदामा !" कृष्णनाथ 'सुदामा' शब्द सुनकर गद्‌गद हो उठे, "सुदामा आया है मेरा सखा !" और वह सिंहासन छोड कर भाग कर वाहर आ गये ।

द्वारपाल का कलेजा मुह को आने लगा । भन्नाया सा वोला, "यह जरूर कोई मन्त्रीपुत्र है । वेश वदलकर मेरी नौकरी छुडाने की ताक मे था । हाय! यह तो यह भी कहेगा कि मैंने कह दिया था—कृष्ण राधावाई की कॉटज मे जाते है वही रहकर पाव दावते हैं हाय ! अव क्या होगा और यह अगूठी खैर, यह तो कोई विश्वास ही न करेगा कि इसके पास यह अगूठी भी हो सकती है ।"

फिर वह दवे पाव भीतर की ओर वढा। वह देखना चाहता था कि महोदय ने मुह हाथ धोकर अपना मेकअप अव तक उतार लिया होगा और अपनी असली दशा मे आ गया होगा । है यह कौन आखिर ?—यही जानने के लिए उसने भीतर की ओर ताक-झाक की तो देखा सुदामा नाम का सज्जन तो सचमुच वेहद गरीव है । कृष्णनाथ उसके पाव से काटे खीचकर अलग कर रहे है । उसके पाव धोने के लिए उनकी अश्रुधारा वह रही है 'सचमुच का गरीव ओह !' कहकर द्वारपाल की आखो मे नई चमक आ गई और मन-ही-मन सोचने लगा—'काफी माल झटककर लायेगा यह तो लेकिन वापसी के रास्ते पर भी तो द्वारपाल दशन करके ही जायेगा, वरना महल के चक्करदार कमरो और गलियो से इसे वाहर का रास्ता कौन दिखायेगा ?'

और फिर वह नए सिरे से मूछो पर ताव देने लगा ।

४

डिस्को कविता और एक अदद गाय

डिस्को धुन पर जब लोग नाचते झूमते हैं, तब लगता है कविता पर झूमने वालो के दिन लद गए। सिर्फ कुछ शब्द लेकर उनकी तुकबन्दी करके चा! चा! चा! हो! हो! हा! हा! करते जाए। दिल वल्लियो उछलेगा, झूमेगा। मटकते समय सारे बाल मुह को ऐसे ढक लेंगे कि पता करना मुश्किल हो जाए कि नाचने वाले का अगर मुह है, तो किधर, किस दिशा को है? हाथ का पाचो उगलिया खुली हुई, जिसे कोई बडा बूढा देखते ही बता देगा कि पुरान जमाने मे यो दूसरो को पाँच उगलियाँ खोल खोल कर दिखाना लानत कहलाता था। आज ज़िन्दगी लानत हो गई है। इसीलिए आज के युवक-युवतिया उस पुरानी लानत को इस नए ढग से एक-दूसरे तक पहुचात हैं और जानते भी नही कि किसे वे क्या देते चले जा रहे हैं?

डिस्को नाच हो या डिस्को धुन या फिर गीत जरा-सा सुनते ही बेतहाशा नाचने की धुन उठनी है। डिस्को की बढती लोकप्रियता देख-देख आधुनिक कवियो पर एक नई धुन सवार हुई है—'क्यो न ऐसी कविता लिखी जाए कि मच पर ज्योही कवि कविता शुरू करे, लोग बेतहाशा झूमने लगें, उठकर नाचने लगें। दाद देते हुए वाह-वाह करते हुए थिरकने लगें, लोगो को ध्यान ही न रहे कोई कविता बोल रहा है। कविता क्या है, कवि कहा है बल्कि कवि को माइक के सामने पाते ही दर्शक भाप जाए कि कवि क्या कहने वाला है, और उसकी अटशट सुनने से पहले ही झूमना-थिरकना शुरू कर दें। यानी 'कविता ऐसी कीजिए, जैसे डिस्को धुन। हाथ-पाव को छोड दे—नाच धुनाधुन, धुन।' या फिर—

तू भी नकटा नकटा नकटा च-च-च
त्रिकट त्रिकट त्रिकटा
त्रिकट त्रिकट त्रिजटा
कौआ कौआ—काना कौआ कौआ

श्री घासीराम ने जब कुछ धुनें सुनी तब उन्हे लगा कही कोई साहित्य का लाल रो-रो कर हिचकिया ले रहा है, सुबक रहा है। उनके मुह से अनायास निकला—

डिस्को डिस्को सब करें, कविता सुने न कोय,
डिस्को सुन-सुन कर सुनो, दिया कबीरा रोय!

घासीराम ने अपनी आखो से जगती-बुझती बत्तियो के साथ नाचते हुए दीवाने-आम, दीवाने-खास देखे। तग पैण्टो मे ट्यूब की तरह थिरकती टागें देखी और बार-बार वाह-वाह, कौआ-कौआ करते लोगो को गौर से देखा। फिर घर मे पहुचकर अपनी सारी कविता टटोली, तो लगा आज तक उन्होने जितनी कविताए लिखी है, सभी डिस्को कविताए तो है, सिफ इनका परीक्षण नही किया गया। बडे बडे वैज्ञानिक कोई भी नई वस्तु परीक्षण, प्रयोग के लिए चूहे बिल्ली और बन्दरो को चुनते है तो क्यो न डिस्को-कविता का प्रयोग किसी गाय पर किया जाए? अत वह अपनी कविताओ का पुलिन्दा थामे अपने एक मित्र से देर तक सलाह-मशविरा करते रहे। मित्र चूकि डेयरी फाम का मालिक था, अत उसने उन्हे इजाज़त दे दी। श्री घासीराम गाय-भसो के अहाते की ओर बेखटके बढ गए। वह आश्वस्त थे कि गाय खूटे से बधी होगा और सच कहे तो जिसे कविता भी न बाध सके, ऐसे-ऐसे श्रोताओ को भी खूटे से बाधकर रखना चाहिए।

वह आगे बढे। सोच रहे थे भूमिका बाधनी होगी या मित्र से पहले ही गाय भैसो को कवि और कविता की जैसे बन पडे सूचना दे दी होगी। अत वह ज्यो ही आगे बढे, गाय के एक बछडे ने 'रम्भा हो' की आवाज सुनकर रम्भाना शुरू कर दिया। कविवर गद्गद हो उठे। 'वाह, क्या जागृति है!' कहकर अपने कागज़ टटोलने लगे कि तभी गाय सीग नीचे किए ज़मीन सूघने लगी, यहा वहा खिसकने लगी। फिर एकदम सीग उठाए और कवि महोदय के हाथ से कागज़ का पुलिन्दा मुह मे डाला और कच्चा चबा गई।

यो तो कवि महोदय को ऐसे-ऐसे कद्रदान कई कवि सम्मेलनो मे मिल चुके थे, जो उन्हे बात-बेबात मे सीगो पर उठा लेते थे, लेकिन गाय मे वही बोध जागता देख भौचक्के रह गए। फिर भी उन्हे विश्वास था कि गाय जब जुगाली करने बठेगी तब उनकी कविताए उसके अतस मे ऐसी खलबली मचा देंगी कि वह अपने आप झूमेगी। कविताए जब कभी समझ आएगी, तब जोरो से हसेगी भी। किसी बैल के कधे पर अपनी दो टागें रखकर, उसकी

हिरणी-सी आखो मे आखे डाल डालकर नाचेगी।

वह वहा से लौटने ही वाले थे कि तभी ध्यान आया 'इतनी ढेर कविताए जो कण्ठस्थ है, उन्हे क्यो न बोल दू । जवानी याद कविताओ की भी अपनी खूबी है। इन्हे न चोर चुरा सकता है, न गाय चबा सकती है।' और यह सोच कर वह जोरो से बोलने लगे। गाय तो पहले से ही जैसे बावली-सी हो रही थी और खूटा तोडकर अपनी हद से बाहर आ पहुची थी। आगे बढी और उसने कवि महोदय को सीगो पर उठाकर डिस्को नाच शुरू कर दिया। कवि महोदय के होश उड गए।

आखें खुली तो कवि महोदय बिस्तर पर पडे थे और पत्नी गर्म ईंटो का सेक दे रही थी। उन्हे होश मे आता देख पत्नी के हाथ से तौलिए मे लिपटी गर्म ईंट धम्म से उनकी पीठ पर आ पडी। कविवर पुराने अदाज़ से कराह उठे, तो पत्नी भी जोरो मे बरस पडी, बोली—'हर बार कवि-सम्मेलनो से पिटकर आते रहे, मैं सेक करती रही, समझाती रही, पर तुमने एक न सुनी। अब यह हालत हो गई है कि रास्ते चलती गाय भैसो को भी कविता सुनाने लगे। अए, तुम्हे इत्ती बुद्धि न आई जो समझते कि गाय को कविता सुनाना, बैल को लाल कपडा दिखाना है और फिर यह कोई तुम्हारी घर की गाय तो नही, जो तुम्हारी अटशट बर्दाश्त करती जाए। साफ कहे देती हू, बाहर की गाय-भैसा से पिटकर आओगे तो मुझसे बर्दाश्त नही होगा, हा!"

कविवर को लगा उनके सामने फिर से गाय सीग उठाए आ रही है और वे 'हौआ-हौआ, मन का कौआ' करते हुए एक धुन मे फिर कराहने लगे।

9
काक्रोच वर्णन
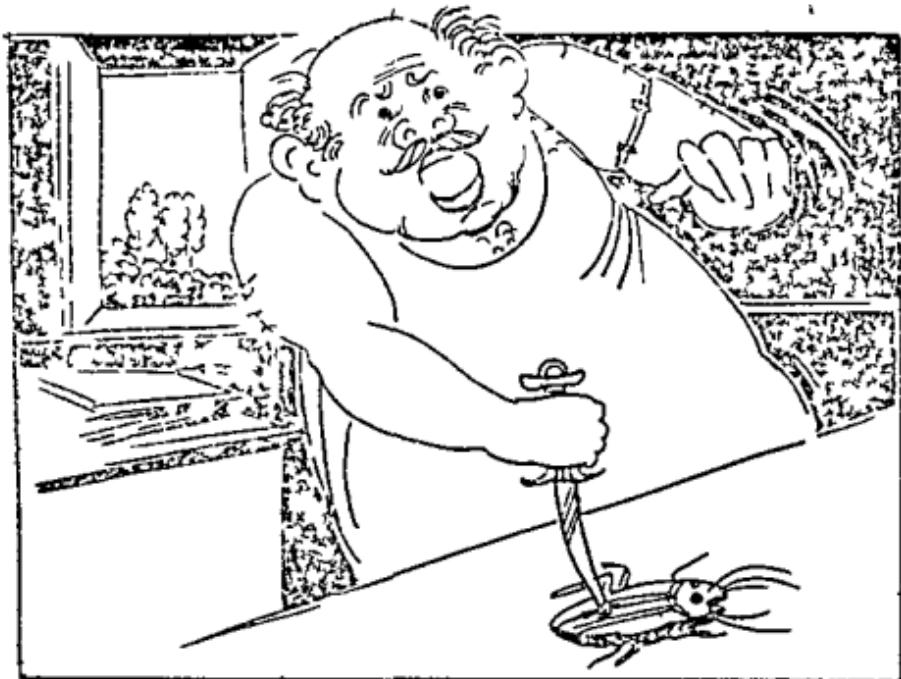
कहते है कि क्रौंच-वध से रामायण उपजी होगी तो काक्रोच-वध से व्यग्य का जन्म हुआ होगा। ज्यो ही कवि ने लेखनी उठाई होगी, कोई काक्रोच उसके कागजो से सरकता हुआ उसके मस्तिष्क मे एक झल्लाहट छोड कर भाग जाने को चेष्टा मे रहा होगा और तब लेखक ने कलम छोडकर पहले काक्रोच का सर्वनाश और तत्पश्चात साहित्य का नाश करने को अपनी लेखनी उठाई होगी। ऐसे व्यग्य को पढकर पाठक के हृदय से करुणा की धारा और आख से अश्रु की धारा टपक कर उस कागज पर ऐसे टपकी होगी जैसे यह ससार कागज़ की पुडिया समझ कर कबीर साहब ने 'बूद पडे घुल जाना की बूद ढुलका दी होगी। सचमुच काक्रोच को देखते ही उससे वितृष्णा सी हो उठती है। वितृष्णा के बाद मोह जागता है। मोह जगाना तो अपनी वितृष्णा को कसौटी पर कसना है। एक से अनेक होने मे इन्हे देर नही लगती। सच कहे

तो यह दुश्मन की तरह बढते हैं। दुश्मन इसी तरह तो पैदा होता है। एक पैदा कीजिए वह आपके विरोध मे गुट बनाएगा, फिर सस्था, फिर सस्थाए— मिल कर मोर्चा लेने जा धमकेंगी। यह हमारी काक्रोच प्रवृत्ति ही तो है। हमारी ही तरह काक्रोच जनसख्या बढाने मे तीव्रगति हैं, लेकिन हमारी तरह क्यो ? काक्रोच का अपना अलग व्यक्तित्व है। न इसे पैदा होने मे ज्यादा समय लगता है, न हाथ-पाव पख पसारने मे ज्यादा देर लगती है। मैं तो यह कहूगी कि इस मामले मे वह बुद्धिजीवियो से कई गुना आगे है 'एकोऽह—बहुस्याम' का सिद्धात अपनाते हुए प्रत्येक जीव अण्डे से लारवा प्यूपा और मच्छर होने की यात्रा से गुजर कर, अपने सामर्थ्य के अनुसार ही रोग फलाता है। बुद्धिजीवी तो अपने मस्तिष्क के कारण इन सब से कही पिछडा हुआ और आदिम है। वह हाथ-पाव कछुए की तरह छुपाये रहता है क्योंकि उसका विश्वास है कि इसके बाद वह लम्बे हाथ मार सकेगा। काक्रोच को इसके लिए कोई चिन्तन की जरूरत नही। वह तो जब चाहे जहा चाहे प्रकट होकर अपनी सेना का झडा गाड दे और हर मामले मे नाक घुमेडने लगे।

उस दिन उन्होने रसोईघर मे पडी लकडी की शेल्फ पर ऐसे अधिकार जमा रखा था कि यदि काक्रोच हरकतें न करते तो लकडी और इनमे भेद करना मुश्किल था। वैसे हरेक पशु प्राणी अपनी हरकतो के कारण ही ससार मे पहचाना जाता है। काक्रोच ने भी शायद अपनी पहचान गवाना उचित न समझ कर यहा वहा अपने साथियो के साथ डोलना शुरू कर दिया। उनके डोलने मे एक अपनी ही लय थी। यदि वहा हल्का सगीत चल रहा होता तो लगता सब एक ताल मे है एक सुर मे मूछें उठाते है—दायें बाये होकर, फिर एक दूसरे के दायें बाये होने लगते हैं। उन्हे देख एक नया सौदय बोध जागा। आज तक इनके चाकलेटी पखो का किसी ने वणन ही न किया। इनके नन्हे दुधमुहे सफद पर्त वाले सुकोमल बालक की ओर आख भरकर न निहारा। साहित्य ने हमेशा इनकी उपेक्षा की। यही सोचकर मैंने उनका वणन करने के लिए लेखनी उठा ली। कमर कस ली कि इन्हे साहित्य मे अवश्य स्थान मिलेगा। सारे काक्रोच जसे डिटेक्टर की तरह अपनी अपनी मूछें उठाये— मुझे सलाम करने लगे। मैं देखना चाहती थी कही ये मूछो मे मुस्करा तो नही रहे। इसके लिए इन पर प्रकाश डालना जरूरी था। लेकिन प्रकाश

देखते ही वे दुम दवाकर रफूचक्कर होने लग। मूलत यह प्रकाश मे नही आना चाहते। यह चोर प्रवृत्ति के हैं। अधेरे मे ही छापा मारना इनका धन्धा है। औरो की माद मे मुह मारते है। सडाध मे रहना पसन्द करते हैं। वैसे इस मामले मे वे भी कुछ-कुछ मनुष्य की प्रवृत्ति के हो जाते है, लेकिन निष्कप पर पहुचने से पहले हमे घटना के दोनो पहलुओ पर विचार करना होगा।

वडे वडे सिद्ध महायोगी भी तो प्रकाश मे नही आना चाहते। वे प्रसिद्धि मे वेपरवाह होते है। विनम्रता मे तो काक्रोच का ज़मीन पर रेंगना और कोनो मे कागज़ो के तले छुपे रहना काफी है, अपने अनुयायियो की पल मे ही एक जमात खडी कर लेने की महासिद्धि काक्रोच को युगो से प्राप्त है। उसे भी रखने के लिए कोई ऊची अट्टालिका की ज़रूरत नही। हर वस्तु का वह बडी सूक्ष्मता से मुआयना करता है जरा सा भोजन ही उसे पर्याप्त है। उसका त्याग मल त्याग है, जिससे रोग पनपते हो तो पनपें, उससे उसका कोई सरोकार नही। वह निर्लेप फिर भी नही कहा जा सकता, क्योकि अगर उसके पख किसी तरह द्रव मे डूब जाते हैं तो वह भी हर लोभ-लालच मे डूबे व्यक्ति की नाईं कुछ देर तो गहराई से सोचता ही है। सोचते समय उसकी गति रुक ही जाती है।

लेकिन सामने पडी शेल्फ पर जिस मात्रा मे काक्रोच का चाकलेटी ब्राउन रूप विखरा हुआ था, उसे देखकर यह लगा कि उनके पखो के पर्स बनाये जाते, या हैट मे इन्हे लगाया जाता या फिर पखो की रजाई या तकिया भरवाया जाता। इनके ये पख इनके शरीर की ऊपरी सतह भी हैं और थोडी-सी उडान भरने के लिए पख भी हैं इनके इस रूप को तकियो मे समेटा जाये पर तभी ध्यान आया, ये तो समूचे तकिये, रजाइयो, चादरो मे सिमट ही जाते हैं। झाड पटक करनी पडती है, ये दोस्त नही, दुश्मन है और दुश्मन का वणन नही, नाश करना श्रेयस्कर है। अत कलम छोडकर इन्हें दवा दे-देकर वैसे ही मार डालना चाहिए, जैसे नीम हकीम अपने मरीज़ो को समाप्त करते हैं।

एक अखबार पर काक्रोच मारने की दवा डालकर सोचा, इसके असली दवा होने की जाच-परख करनी चाहिए, लेकिन इसे चखकर भी नही देखा जा सकता। फिर दवा के तले अखबार मे छपी घटनाओ पर नजर पडी। सनसनीखेज रचनाए छपी थी उसमे। एक कोने मे मेरी कविता भी। वह

इस सब सामग्री को देखकर तो काक्रोच स्वय ही आत्महत्या कर लेता, लेकिन वह पढा-लिखा भी नही। फिर उसको एक कतार मे लगी छोटी छोटी आखें शब्दो को बटोर-बटोर कर भी उनके तले छुपी व्यथता को न देख सकेंगी।

दवाई अखबार पर थी। बडे बडे काक्रोच दिग्गज महारथियो की तरह मुआयना करने आ धमके थे। उन्होने पहले अपनी लम्बी मू छो द्वारा उसका रूप-रग गध देखा, फिर स्वाद लिया और थोडी ही देर म बडे मनायोग म वे दवा चाट गये। कुछ उन्होंने आने वाली पीढियों के लिए भी छोड दी, लेकिन थोडी ही देर मे वे अखबार के तेजी से चक्कर काटने लगे। लगता था वे दवा खाकर नहीं कोई समाचार पढकर भन्ना गये हैं। या फिर मेरी ही रचना पढ कर आत्महत्या को उतारू हो गये हैं। सचमुच ऐसी कविताए परिवार नियोजन और जनसख्या घटाने के लिए प्रयोग होने लगें तो देश का आर्थिक स्थिति सुधर जाए।

मेरी आखो के सामने काक्रोच तडप उठा। फिर औंधे मु ह गिरा। हाय, मरने वाले के मुह मे डालने के लिए दो बू द गगाजल भी तो नही। उसे इस काक्रोच की योनि से मुक्ति प्राप्त हो गई और किसी ने कोई प्रवचन न पढे, किसी ने कोई शोक प्रकट न किया। वह अखबार पर निढाल सा पडा था। मैंने उसकी शवयात्रा का आयोजन किया किन्तु उसमे काक्रोचनुमा जीव ने भी शामिल होने से इन्कार कर दिया। पास ही से एक काक्रोच खिसक कर मेरी साडी के छोर को पकड कर वह मेरे सिर पर चढकर बोल रहा है। बोलना उसका कम है। ऐसे बोलने वाले मुर्गे ही हलाल होते हैं। पर मुर्गे और काक्रोच मे मूलत दो टाग का अन्तर है। ये टागें ही वह चरण हैं जिनके कारण एक की लात (टाग) लोग माग माग कर खाते है, ऐसी लात खाने वाले चटखारे ले-लेकर कहते हैं, मुर्गे की सिर्फ टागें-ही-टागें हाती हैं और वह उन्ही पर टगा रहता है। काक्रोच की तो टागें भी बेकार हैं। लगता है किसी बहस के दौरान इसकी टागें हमेशा के लिए जवाब दे गईं और तब से बेचारा रेंगता फिरता है—जरा सा उड कर फिर धम्म से नीचे जमीन चाटता नजर आता है। यो जमीन चाटना दिमाग चाटने से बेहतर है, लेकिन काक्रोच ने अपनी हरकतो से सारे घर मे आतक फैला कर मेरी नीद चाट ली है। जो औरो की नीद उडा दे, हम उसे भी चिरनिद्रा मे सुलाकर अपनी उदारता का परिचय देना चाहते है। काक्रोच ने दवाई चाटकर अधोगति प्राप्त की है।

उसकी गति प्राप्ति के बाद उसकी गति देख हैरान हू। वह जैसे अगले ही चरण मे चोला बदलकर मेरे सामने आ खडा हुआ है। इतनी जल्दी पुराना चोला उतार कर नया चोला पहन लेना केवल फैशनपरेड मे ही सम्भव है। कही इन सब की फैशनपरेड पुन आरम्भ न हो जाये, इसीलिए मैं इनके विनाश की योजना को कार्य रूप देने के लिए लेखनी वापस रखने लगी हू। हम किसी के विनाश से पहले उसे अन्तिम प्रणाम अवश्य करते ह। अत हे काक्रोच ! मेरा अन्तिम प्रणाम स्वीकार करो। कागजो मे मु ह छिपाकर जीने वाले प्राणी, हर किसी को सिर्फ पीठ ही पीठ दिखाने वाले भगोडे वीर। मैं किसी की पीठ पर वार नही करती। अत लो तुमने चोला बदल दिया तो क्या—लो फिर दवाई चाट कर पुन निम्न गति प्राप्त करो, ताकि तुम बार-बार उसी योनि मे जन्म न लेकर किसी अन्य योनि मे जन्म ले सको। उपकारी जन की तरह ।

मैंने तो मात्र तुम्हे मोक्ष देने के लिए ही तुम्हारी विनाश लीला का बीडा उठाया है, वरना खुदा साक्षी है, आज तक कभी नाक पर बैठी तो मक्खी भी नही उडाई और न ही मक्खिया उडाने के लिए कोई सेवक-अनुचर ही रखे।

तुम 'बढते रहो' का जयनाद करते हुए बढते रहो मैं तुम्हारे विनाश के लिए झडा गाडकर—गोलिया बरसाती रहू। तुम्हारा और मेरा कर्म भिन्न है, किन्तु हमे कर्मरत रहना है। यह कर्म-कर्म से टकराकर मेरे लिए उपयोगी प्लसप्वाइट बन जायेगा। अत तुम्हारे दाहकर्म की समुचित व्यवस्था न कर पाने का खेद मेरे हृदय को बोझिल भी करता रहेगा। तुम्हारा बोझ और मेरा मनोबल पर्याय न हो जाय, इसीलिए हे कर्मठ योगी। लो मेरा अन्तिम प्रणाम लो। मैंने जिसे भी अन्तिम प्रणाम किया, वह वैकुण्ठ धाम ही पहुचा। काश ! तुममे वह सवेदना आ जाय कि तुम प्रणाम के लिए हाथ जुडते देखकर ही स्वत मोक्ष के लिए सशरीर कूच करने लगो।

10

रामकली चुनाव लड़ने चली

तोतारामजी को घर में रोज के घमासान युद्ध, लूटपाट देख-देख कर लगता था कि लड़ाई के लिए अब यह क्षेत्र कुछ छोटा पड़ने लगा है। चिल्लाने, झींकने, झपटने में पारगत हो जाने पर यह लड़ाई मच पर अधिक सफलता से हो सकती है। सफलता और ख्याति के लिए चुनाव अपने आप में एक सशक्त मच है।

यह ध्यान आते ही उन्होंने मच पर खड़े हो कर भाषण देने की जैसे तैयारी कर ली। खुमार सिर पर चढ़ने लगा। 'भाइयो, मैं कूड़ेदान बन गया हूं। मेरी भाषणमाला के फूल झुलस रहे हैं। मेरे भीतर विचार सड़ रहे हैं, ज़रा सी बात करने पर पत्नी बारूद की तरह फट पड़ती है। मेरी हर बात

पर पानी फेर देती है। पानी के कारण उन पर मक्खिया, मच्छर भिनभिना रहे हैं। मैं कीटाणुनाशक दवाए खा रहा हू पर कोई असर नही।'

पति को यो बडबडाते देखकर उनकी धर्मपत्नी रामकली को चिन्ता हुई। जो उसके सामने कभी खडे नही हो पाए, आज यो चहलकदमी करके कुछ बोलने भी लगे है, जरूर यह मौसम का असर है। किसी ने इन्हें भडकाया है या बहका दिया है। अत वह उनके पास आ कर बोली, 'यह तुम्हें अचानक क्या हो गया है! कभी मुटिठया भीचते हो, पाव पटकते हो, चिल्लाने लगते हो और मुझे देखते ही एकदम चुप हो जाते हो, जैसे साप सू घ गया हो! हुआ क्या है, कहो!'

'कहो' शब्द क्रेन की तरह उनके मन के भावो को, बोझ को, उठाकर श्रीमती रामकली के सामने प्रस्तुत हुआ। वह बोल उठे, 'मैं चुनाव लडूगा। आए-दिन चुनाव की घोषणाए होती रहती हैं। ये घोषणाए शाश्वत हैं होती ही रहेगी। मैं किसी न किसी चुनाव मे लडकर कोई न कोई पद अवश्य हथिया लूगा। कोई न कोई मैदान जीतने के लिए मैं हाथ-पाव मारूगा। चुनाव लडना कितना मुश्किल है, यह सब तुम क्या जानो!'

किन्तु उनकी श्रीमतीजी कमर मे पल्ला खोस कर कटिबद्ध हो गईं। अगार उगलते नेत्रो से बोल उठी, 'मैं भारतीय स्त्री हू। श्रीराम के साथ सीताजी वन तक गईं, सावित्री ने सत्यवान के लिए यमराज तक का पीछा किया। मैं यमराज की तरह तुम्हारा पीछा करूगी। मैं भी तुम्हारे साथ लडूगी।'

'पिछले दस बरस से मैं, तुमसे लड रही हू, भाषण दे रही हू और तुम्हारी हिम्मत भी हुई मेरी बात काटने की। आगे बोलने की। और फिर तुम्हारा चुनाव करते समय, मैंने भी तो एक प्रकार से चुनाव ही लडा था?'

'तो तुम वह गलती दोबारा करना चाहती हो?'

'मैं क्यो दोहराऊ भला? अब तो जनता को मेरा चुनाव करना है। जैसे शादी के लिए माता-पिता वर पक्ष के लोगो को कन्या के गुणो को बढा-चढा कर प्रशसा करते है, वैसे ही मैं भी करूगी और फिर जनता से तुम्हारी तरह झूठे वायदे करूगी।'

तब तोतारामजी बोल उठे, 'तुम लडने पर उतारू हो उठी हो तो सुनो, चुनाव लडने मे और पति से लडने मे बहुत अन्तर है। लडने के क्षेत्र अलग-

अलग होते हैं। तुम एक जगह से खड़ी होगी तो मैं दूसरी जगह से।'

'क्षेत्र कैसे अलग-अलग होंगे? मुझे तो तुम्हारे इरादे ही कुछ और नजर आते हैं। पति-पत्नी में लड़ने के क्षेत्र अलग तो तभी होते हैं जब वह तलाक के लिए खड़ी हो।'

'तलाक चुनाव का ही एक रूप है। हार जाने वाला पक्ष धन-सम्पत्ति इज्जत आदि से हाथ धो बैठता है।'

'देखो जी, मुझे डराने की कोशिश मत करो! इन शब्दों में इतना पानी नहीं कि हाथ धोए जा सकें।'

'सीक्योरिटी देनी होगी!' तोतारामजी ने अगली चाल चली।

'सीक्योरिटी तो चुने जाने पर हम लोगों को मिलेगी। हमारे साथ-साथ कुछ लोग अपनी-अपनी सुरक्षा के लिए चलना शुरू कर देंगे—मैं सब समझती हूं।'

'यह सीक्योरिटी रुपए-पैसे की होती है भागवान!' तोताराम जी ने कहा।

तोतारामजी की बात अभी पूरी भी न हुई थी कि रामकली बोल पड़ी, 'रुपए-पैसे की बात तो मामूली है! न हो तो मैं तुम्हारी सीक्योरिटी के भी पैसे दे दूंगी, आगे बोलो!'

अपनी पत्नी को यों उत्तेजित देखकर तोतारामजी ने उन्हें भाषण देने की तकलीफें गिनानी शुरू की, 'अगर तुम लोगों को, पति की तरह डाटना-फटकारना शुरू करोगी तो वे सब भाग खड़े होंगे।'

'क्यों? तुम तो अभी तक मेरे सामने हो।'

'ओफ्फोह, बात मेरी नहीं, जनता की है, लोगों की है। उनसे तुम्हें कृपा और निवेदन की भाषा में बात करनी होगी, तुम पहले इसका अभ्यास कर लो।'

'मैं ऐसी भाषा नहीं बोल सकती। फिर चुनाव का दौर कुछ दिन ही रहेगा। दिन-रात तो तुम्हीं से सिर खपाना पड़ता है। ऐसी भाषा बोलने लगी तो तुम्हारी आदतें बिगड़ जायेंगी। मुझे वरगलाने की कोशिश मत करो।'

'मैं तो तुम्हें सहज बात कह रहा था, अधिकार समझ कर।'

'बस यही अधिकार मेरी समझ में नहीं आते!' श्रीमती रामकली ने

उपेक्षा से अधिकारो को देखते हुए कहा, 'मौलिक अधिकारो की बात पर मुझे हसी आती है। समानता-स्वतन्त्रता के सातो अधिकार तो सात फेरो मे ही पत्नी के हो जाते है। फिर, इन पर बातचीत, चर्चा क्यो ? इन्हे तो सजावट के लिए ड्राइग-रूम मे, कैक्टस के रूप मे रखा जा सकता है।'

'जैसे ?' तोतारामजी का, पत्नी के प्रवचन सुनकर ज्ञान जाग रहा था।

'जैसे तुम्हे स्वतन्त्रता का अधिकार है, पर तुम किसी भी दिन पाच बज कर इकत्तीस मिनट पर आओ तो तुम्हे उस एक मिनट का घटा भर हिसाब देना पडता है। तुम्हे बोलने की स्वतन्त्रता है पर नाम तो बोलने की स्वतन्त्रता ही है न ! इस सात पखुडियो के फूल को मैं जूडे मे खोस कर जब बैठ जाती हू, तो तुम्हारी हिम्मत भी पडी कभी कि झुक कर देखू तो, फूल की गन्ध कैसी है ? मैं इन अधिकारो को जड से उखाड फेंकने के लिए सबके सशोधन की माग करूगी। इसीलिए मुझे चुनाव लडना पडेगा। समानता के अधिकार ने पति-पत्नी के हरे-भरे जीवन को सूखा और उजाड कर दिया है।'

'अधिकार नही सिर्फ पति और पति के अधिकारो का तुम्हारा भाषण केन्द्रित हो उठा है। अब उठो, पार्थ, गाडीव सभालो !' तोतारामजी ध्वस्त हो कर बोल उठे।

श्रीमती रामकली ने पति को यो बात मानते देखकर उनकी पीठ थपथपाई और बोली, 'तुम किसी प्रकार की चिन्ता न करो। भाषण-वाषण देने के लिए मैं ही किसी से बात कर लूगी। रोज की सभाओ मे होने वाले भाषणो की कुछ कतरनें मगवा लूगी। कतरनें भी कितने महत्त्व की होती है, यह तुम नही जानते। वह पास वाला दर्जी इन कतरनो से मुन्ने का इतना बढिया सूट बना कर लाया है कि बस !'

रामकली की आखो मे ममता देखकर तोतारामजी को जैसे मौका मिल गया।

'बस, इसी मुन्ने पर तुम आकर रुकी तो तुम्हारे सामने उसके सूट, अच्छे कपडे, अच्छी सिलाई, दर्जी और सिलाई के रेट घूमेगे और तब जनता तुम्हारे वह बखिए उधेडेगी कि तुम याद रखोगी ! इस ममता की मोमबत्ती को ताक पर रख दो जो जरा सी आच मिलते ही पिघलने लगती है। औरत बन कर चुनाव लडने की जरूरत ही क्या है ? घर-परिवार क्या हुक्म चलाने

के लिए, भाषण देने के लिए छोटा पडने लगा है, जो यहा-वहा मु ह मारना चाहती हो ।'

'हा हा, एक बार नही, सौ बार कहती हू कि यहा मेरी कोई सुननेवाला नही, सिर्फ तुम हो ! सिर्फ तुम्हे सुनाते सुनाते मैं बोर हो गई हू। बच्चे है, वह कुछ समझते ही नही ! मैं तो लडूगी ही। तुम अपने बारे मे सोच लो ।'

पत्नी का यह हुक्म सुनते ही तोतारामजी ने क्रुद्ध होने की चेष्टा मे आख से चिनगारिया उगलने की कोशिश की। पर चिनगारिया तो क्या, वहा बुझे अगारे भी न थे। देर तक हवा मिलने के कारण वे सब राख हो चुके थे। वह पाव पटकते हुए वहा से निकले और पत्नी से कह गए, 'भाषण-वाषण तैयार रखना। भाषण सुनकर ही कुछ तय किया जायेगा।'

शाम के समय फिर उनकी आपसी झडप शुरू हुई। सफलतापूर्वक लडने और मोर्चा लेने के लिए उन्होंने बच्चो को ननिहाल भिजवा दिया। तोतारामजी सामने कुर्सी पर बैठ गए।

रामकली ने भाषण देना शुरू किया

'भाइयो, हम पति पत्नी घर से लेकर चुनाव क्षेत्र तक आपके, और सिर्फ आपके लिए लड रहे है। हम आपको विश्वास दिलाते हैं, हर बात के लिए लडना हमारा ध्येय होगा और इसके लिए हम एक पल भी शान्ति से नही बैठगे। लडने के लिए भी उपयुक्त-अनुपयुक्त पात्र देखे जाने चाहिए। जैसी लडाई पति-पत्नी मे हो सकती है, वैसी न तो किसी पानीपत के मैदान मे और न किसी कुरुक्षेत्र मे होगी। हमे मौका दीजिए, हम इसे जारी रख सकें। आपने प्राय घरो मे देखा होगा, पारस्परिक लडाइयो मे उपयुक्त सामग्री न होने के कारण वह घुटन उमस से भरी लडाइया बनने लगती है। इसी उबाऊ वातावरण के कारण, बार-बार उसी ढग से लडने से बेजार होकर पति-पत्नी आपसी सम्बन्ध तोडकर अन्य किसी को ललकारने लगते हैं। हम आपको विश्वास दिलाते है हम आपकी पूरी खोज-खबर लेंगे। आपकी गतिविधिया पर कडी नजर रखेंगे, और पति पत्नी चुनाव की एक परम्परा बनाएगे।

"हम कोशिश करेंगे कि जिन बहनो के पति समय पर घर नही आते, उन्हे समय पर घर भिजवाया जाए। जिनको इधर-उधर ताक-झाक की आदत हो, उनके लिए ताक झाक की समुचित व्यवस्था की जाए ।"

'क्या ?' तोतारामजी ने श्रीमती रामकली को गौर से देखा।

'क्या-क्या ? तुम्हे तो इस बात पर तालिया पीटनी चाहिए थी।'

'तालियो का गुच्छा तो तुम कमर मे खोस कर रखती हो। तुम्हे अन्य तालियो की आशा नही करनी चाहिए।' तोतारामजी बोले।

'हा, हा, नही रखनी चाहिए। बस, मैं जैसा भाषण दे सकती हू, वैसा कोई नही दे सकता।'

'इस कथन पर लोग जैसी तुम्हारी खबर ले सकते है, वैसी शायद ही कोई ले सके। आज के बाद यह विचार भी दिमाग मे मत लाना। भाषण वाषण देना तुम्हारे बस का नही।' तोतारामजी बिना उत्तर सुने वहा से चल दिए।

उस दिन से रामकली ने पति की दिन रात निगरानी शुरू कर दी। कही वह उसके भाषण के प्रभाव मे आकर ताक-झाक तो नही करने लगे। सिर्फ तोतारामजी चुनाव लड रहे थे। पहला भाषण देने गए तो पत्नी भी साथ-साथ साए की तरह पीछे लगी हुई थी।

वह बोले, 'भाइयो, मैं आपको आज अपने जेल के अनुभव सुना रहा हू।

यह जेल आप-हम सभी प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप मे भोग रहे है। मैं आपका दर्द जानता हू, इसीलिए आज बता रहा हू । मेरी सरकार (पत्नी) ने क्या क्या जुल्म किए, क्या-क्या ज्यादतिया की !

विश्वास के भी बीज होते तो अब तक फलीभूत होते ! हाय मेरे विश्वास की एक भी कोपल न फूट सकी ! अब मैं इस गुलाब की कलमे काट काट कर यहा-वहा लगा रहा हू और आपको विश्वास दिलाना चाहता हू कि जब तक हम सब एक नहीं होगे, हमारी सरकार (पत्निया) जी खोलकर अत्याचार करती रहेगी ।

'प्राय पति पत्नी का सम्बन्ध केन्द्र और राज्य सरकार का सा रहा है। जहा कही राज्य मे विरोधी दल होगा, वह बात बात मे टाग अडाने की कोशिश करेगा। हमारे घरो का यही हाल है भाइयो ! पत्निया बात-बेबात पर मेमोरेंडम भेज कर अपील की धमकी दे देती हैं। कोई दलील सुनने को तैयार नही।'

वह उससे भी ऊचा चिल्लाना चाहते थे किन्तु कोशिश करने पर भी आवाज अधमरी, अधकचरी सी हो चुकी थी। पालतू पछी की तरह मुख के पिंजरे से पख फडफडाती बाहर निकलती और फिर जाने किस दहशत से भीतर जा घुसती।

तोतारामजी ने फिर भी कोशिश करके अपना भाषण जारी किया। विनम्रता जताते हुए बोले, 'मैं चाहूँगा कि बहनें मुझे तोतू कहकर पुकारें, क्योंकि मेरी पत्नी मुझे इसी नाम से पुकारती है और बडे-बूढे मुझे राम कहते हैं—मेरे निकट आने का सरल मार्ग यही है ।'

अभी वह बात आधी ही कह पाए थे कि उनकी पत्नी मच पर आ पहुची और माइक को दोनो हाथ से पकड कर बोली, 'भाइयो, मुझे सिर्फ इतना कहना है कि लम्बा भाषण, दो घण्टे का भाषण, सुनना भी अपने आप पर अत्याचार करना है और ऐसे भाषणकर्ताओ,को सिवाय उनकी पत्नी के और कोई चुप नही करा सकता। हमारे जाने-माने लोग इसीलिए पति के साथ पत्नी को भी आमन्त्रित करते है। इस आमन्त्रण के पीछे उनका यही गूढ सकेत रहता है।'

कहते हैं, उस दिन दोनो मे जोरो से झडप हुई तो दोनो की बोलचाल

बन्द हो गई। सुना है, श्रीमती रामकली ने भी चुनाव लडने का निश्चय कर लिया है।

उनसे जब इस निश्चय के बारे मे पूछा गया तो वह बोली, 'मैं चाहती हू कि अगला चुनाव जल्दी हो, ताकि मैं भी चुनाव लड सकू। हमारी आपसी बोलचाल बन्द है और इस घुटन को औरो तक पहुचाने के लिए सिर्फ पडोसी, घरेलू औरतें पर्याप्त नही। इस दर्द के लिए मच चाहिए। कहने-सुनने के लिए भी कोई पद हो, श्रोता हो। अत चुनाव लडना मेरे लिए अनिवार्य हो गया है।'

11
परखमुखी

अपनी सोनकली की आखो मे हर समय आसुओ को बहते देखकर राय साहब का वैज्ञानिक मन डोल उठा। उन्होने सोचा—आज तक आसुओ पर विशेष प्रयोग नही हुए। परखनली मे आसुओ का पोषक तत्त्व डालकर क्यो न कुछ नए प्रयोग ही किए जाए। आठो पहर झडी लगाने वाले इन आसुओ की बाढ सी आई, पर धरती पर एक कतरा न गिरा। घर उजड गए पर बिल्डिगो पर जरा भी आच न आई। क्या यह न्यूट्रान बम का कोई अग्रज अनुज तो नही

राय साहब ने परखनली मे कुछेक आसुओ को इकट्ठा करने की ठानी और अपनी तथाकथित सोशल वर्कर बीवी को अपना प्लान बताया। उनकी

बातें सुनकर सोनकली का माथा ठनका। वह अपने पति की महिलाओ के प्रति सच्ची लग्न पर किसी की ताक-झाक करने और घूरने की आदतो से परिचित थी। अत वह उनके इस काम को अपने हाथ मे लेते हुए बोली—मैं यहा कुआरी, शादीशुदा, बिरहने, विधवाए—सबको बुलाकर आसुओ के ढलकाने की व्यवस्था करूगी। रोने-रुलाने के काम मे रखा ही क्या है। अपने यन्त्र तैयार रखो आसुओ की सारी व्यवस्था मेरे जिम्मे।

पर राय साहब कहा मानने वाले थे। वह अपनी ही खोज-परख पर विश्वास करते थे। उन्होने कुछेक महिलाओ से लौ लगाकर उन्हे विरहातुरावस्था मे आसू ढलकाने के लिए अपना नया पयोग आरम्भ किया। इधर सानकली ने भी आसुओ की सारी किस्मे इकट्ठी करने के लिए व्यवस्था कर दी थी।

कुछ ही दिनो मे राय साहब के नये प्रयोग सम्मुख आ गए। आसुओ का पोपक तत्व निकालकर टेस्ट ट्यूब मे डाला गया तो राय साहब ने देखा—

आसू का प्रयोग बडे-बडे दिग्गजो को बाधने के लिए किया जा सकता है। यही वह रस्सी है जिससे डोरे डाले जाते हैं। महिलाओ को इसका प्रयोग टाइम बम की तरह करना चाहिए।

इस द्रव की एक बूद से ही बडे से बडे पत्थर दिल लोगो को मोम की तरह पिघलाकर उनका अस्तित्व शेप किया जा सकता है। हा, इसका प्रभाव क्षेत्र अवश्य ही सम्बन्ध की घनिष्ठता पर निर्भर कर सकता है। कई बार सम्बन्धो की सघनता मात्र आसुओ पर ही निभर रही है तथा उसकी नीव पर प्रेम के महल भी खडे किए गए है। अत आसू मे अब भी उतना पानी है कि वह दूसरो को पानी-पानी करके अपना असर दिखाए।

आख से गाल तक टपके आसुओ की लम्बाई तथा चन्द्रमुखी व ज्वालामुखी स्त्रियो के टपकने वाले आसुओ मे विशेष अन्तर नही मिला। मोटी व छोटी आखो मे टपकने वाले आसुओ की भी लम्बाई चौडाई, भार आदि मे विशेष अन्तर न पाकर श्री राय इस नतीजे पर पहुचे कि आसू समानता के समाजवाद का प्रतिपक्षी है। हा, आसू गाल से ठुड्डी तक जब टपककर चुनरी-चोली भिगोने लगते तो शायद उनके प्रभाव मे अन्तर आए। अत उन्होने अपनी सोनकली के चन्द्रमुख पर आख से लेकर ठुड्डी तक पैमाना बना दिया। काजल के इच के निशान लगाकर एक थर्मामीटरनुमा पारदर्शी नली

लगा दी ऐसी पारदर्शी नली से सोनकली के चेहरे पर चार चाद लग गये तथा इसे नए फैशन के रूप मे प्रयुक्त करने के लिए महिलाओ मे होड सी लग गई। राय साहब की प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। अब वे हर चेहरे के आसुओ की प्रभाव क्षमता जानने के लिए बेखटके उन पर टकटकी लगाए घण्टो खडे रह सकते थे।

कुछेक महिलाओ के आसुओ का ताप देखकर अजीब स्थिति हुई। कुछेक की आखें विरह के ताप से ऐसे सूख चुकी थी कि अब उस पूरे तारा में नये सिरे से पानी डलवाने की आवश्यकता थी।

परीक्षण के पैमाने लगे हुए ऐसे चेहरो को परखमुखी सर्दाशिका कहा जाने लगा।

अब श्री राय ने आठ-आठ आसुओ का गणित जानने के लिए सोलह आसू की तथा सोलह साधारण जल की बूदों की समानता आदि का तौल-माप करना चाहा। नकली आसू चिकने घडे जसे गालो से लुढककर मिट्टी मे मिले परखनली मे आ ही न पाए। आठ-आठ आसू अपनी सूक्ष्मता के कारण आठ के बाद टपकना बन्द होते तथा फिर आठ बूद बहकर उस आठ मे मिलकर सोलह आसू बनते थे। कुछेक महिलाओ के आसू आखो के गिर्द गडढो मे देर तक पडे रहने के कारण अजीब सा आकार ले रहे थे। श्री राय ने अपने निष्कर्षों मे एक बडा निष्कर्ष यह भी लगाया कि जिनकी आखो तले गडढे हो और उनमे देर तक आसू पडे रहे तो उन्हे वहा कीटाणुनाशक औषधि डालनी चाहिए।

आगे के निष्कर्षों के लिए उन्होंने बहाने से एक चन्द्रमुखी के लिए पीछे के द्वार खोल दिये तथा अपनी सोनकली को समझा दिया, तुम मेरी पत्नी हो, मैं तुम पर कोई ऐसे ऐरे-गैरे प्रयोग नही करना चाहता। यह चन्द्रमुखी परखमुखी बनकर विविध प्रयोगो के लिए प्रयोगशाला मे रहेगी। इन्तज़ार मे पलकें बलकें बिछाकर अथवा रात भर तारे गिनकर उसके बाद जो आसू बहाए जाते हैं, उन पर अभी मेरी रिसर्च अधूरी है। इससे मुझे प्रेम करके, विरह के कुछ तरोताज़ा आसू चाहिए, अत अब यह मेरे साथ रहकर प्रयोग के लिए आसू प्रदान करेगी।

यह सुनते ही सोनकली ने लाख हाय-तौबा मचाई, लेकिन उसकी आख

से एक भी आसू न टपका। अत श्री राय की नई चन्द्रमुखी जी भर-आसू वहाने के लिए वहा रहने लगी। सुना गया है कि चन्द्रमुखी से यो उन्होंने कुछ ही दिनो मे तौवा कर ली थी, लेकिन अव चन्द्रमुखी ने वहा ठहरने का निश्चय करके पुरुषो का हाय-तौवा कितनी असली कितनी नकली तथा वे जो तौवा नही करते आदि विषयो पर गम्भीरता से शोध करने का निश्चय कर लिया है और इस परखमुखी का साजन गली-कूचे मे हाय-तौवा करने वालो की लम्बी सूची तैयार कर रहा है।

12

तथाकथित मेगस्थनीज लिखता है

(कहते है पुरातत्व विभाग की इस बार की खुदाई मे उनके हाथ मानो पूरी खुदाई लगी है। उन्हे एक ऐसी पुस्तक मिली है जिससे महिलाओ के बारे मे कुछ विशेष जानकारी प्राप्त हुई है। उपलब्ध तथ्यो से ज्ञात होता है कि इस काल मे भी तथाकथित मेगस्थनीज भारत आया और उसने महिलाओ के इस शासनकाल का पूरा ब्योरा अपनी पुस्तक 'चण्डिका' मे लिखा है जिसका सक्षिप्त ब्योरा हम यहा प्रस्तुत कर रहे हैं।)

तथाकथित मेगस्थनीज लिखता है—इस समय भी महिलाए हमेशा की तरह बडी शान से रहती थीं। गुप्तचर स्त्रिया नयनो की भाषा से ही बडे से बडा भेद प्राप्त कर लेती थी तथा उसे आठ मास तक ही पेट मे रख सकती थी। यदि वह इससे अधिक समय तक किसी बात को पचाने की चेष्टा करती तो नौवें मास मे उसका समूचा जीवन्त प्रमाण उत्पन्न हो जाता था। जगह-जगह नगर के मानचित्र की जगह तत्कालीन नारियो के मानसिक चित्र लगे

हुए थे। उनके (स्वभाव के) तापमान को देखकर ही लोग नगर मे प्रविष्ट होते, वरना उल्टे पाव लौट जाते।

नगर के चारो ओर गहरी खाई खोद दी गई थी। मेगस्थनीज ने इस खाई का विवरण देते हुए लिखा है कि इस खाई को खोदने मे महिलाओ का योगदान विशेष सराहनीय था। वह एक दूसरे के लिए खाई खोदने के क्रम मे, अनायास ही इतनी वडी खाई खोद गई, जिसे पाटना अव कठिन था। हा, इतना अवश्य था कि यह स्त्रिया एक दूसरे के लिए वहुत वडी दीवार बनकर भी खडी हो जाती थी और इन सभी दीवारो के कान थे। कच्चे कान की दीवारे यहा अधिक देर तक नही टिक पाती थी तथा शीघ्र ही ढह जाती थी। कच्चे कान की युवतियो को शिकार का विशेष शौक था। इसके लिए वे मात्र नयनो से तीर चलाती थी। उनसे आहत होने वाले व्यक्तियो को ठिकाने लगाने, ठिकाने पहुचाने तथा फर्स्ट एड से ठीक करके अपेक्षित माग पर लाने का काय परिचारिकाए करती थी। लोग स्त्रियो को देखकर ही सुध-बुध खो बैठते थे। अत इस युग मे कृत्रिम रूप से वेहोश होने के साधन प्राय अनुपलब्ध थे।

मेगस्थनीज़ ने तत्कालीन शासन व्यवस्था के वारे मे लिखा है—"शासन व्यवस्था अत्यन्त सुन्दर थी। जगह-जगह छायादार पेडो की जगह घनी केशो की छाया थी। जिन स्त्रियो के बाल कटे थे, लोग उनकी पलको की छाव मे ही विश्राम कर लेते।

(एक दूसरे के लिए) कुए खोदना अब सामान्य जनहित का रूप माना जाता था। नैनो के तीर से घायल लोगो के लिए जगह-जगह अस्पताल खुलवाए गए जहा उन्हे घायल रहकर, दर्द की हर अवस्था के अनुभव दिए जाते। जिन लोगो की खाल ज़रा मोटी होती, उन्हे युवतियो द्वारा विशेष शाक्स दिलवाए जाते, ताकि उनमे अनुभूति की क्षमता जगे तथा झटके खाने की आदत सी पड जाए। इस काल मे अनेक सडकें भी बनवाई गईं जो सीधी प्रेम की सक्‍री गलियो से होती हुई खाला के मकान तक जाती थी। वहा खाला के दरवाजे पर साकल और माथे पर हमेशा त्यौरिया चढी रहती थी। यो खाला का घर पक्की ईंटो से बना रहता था ताकि लोग सिर फोडना चाहे तो उन्हे सुविधा रहे।

प्रेममयी इस शासन व्यवस्था मे प्राय स्त्रिया प्रेमिकाए बनकर ही रहना

पसन्द करती थी, किन्तु दीवाने होने तथा दीवानी वसूल करने का अधिकार बहुत कम लोगो को था। इसके लिए उन्हे कडी परीक्षा से गुज़रना पडता था। प्रेमिकाए उसकी छाती ठोक पीट कर उसकी छाती पर मूग दलती, उगलियो पर नचाकर देखती कि वह उम्र भर उसके इशारो पर ठीक प्रकार से नाच सकेगा कि नही। तत्पश्चात् उसे दीवानेपन का लाइसेन्स देने के लिए एक विशेष परीक्षा द्वारा उसकी कडी जाच की जाती। उसके लैला पुकारने पर ही जब गली-मुहल्लो से पत्थरो की बरसात शुरू हो जाती तो उसे दीवाना घोषित करके उसे लाइसेन्स दे दिया जाता।

मेगस्थनीज़ आगे लिखता है कि इस युग मे रूठने मनाने, नखरे आदि करने की सबको पूरी छूट थी। रूठने-मनाने की प्राय प्रतियोगिताए रखी जाती तथा रूठने से मनाने तक का, सेकेंड प्रति सेकेंड—बोले जाने वाले शब्द अपनाए जाने वाले हाव-भाव आदि का हिसाब रखा जाता था। अधिक देर तक रूठी रहने वाली स्त्रिया, अथवा ठीक तरह से न मना पाने वाले लोगो को नगर से अलग रखा जाता था। स्त्रियो को नाज-नखरे करने के लिए तथा पुरुषो को नखरे उठाने के लिए वेट लिफ्टिंग आदि का अभ्यास करना पडता था ताकि वह उनके मन का बोझ हल्का कर सकें।

इस युग मे स्त्रियों को व्यायाम का बेहद शौक था। इसके लिए जगह-जगह ब्यूटी क्लीनिक खोले गए। कोई भी स्त्री बिना भौहे बनवाए नगर मे नही घूम सकती थी। इसके लिए उसे दण्डित किया जा सकता था। विरह व्याकुल अवस्था मे यदि वह लटे खोले, बाल बिखराए हाल-बेहाल दर्शाना चाहती तो उन्हे जबरदस्ती ब्यूटी सैलून मे धकेल दिया जाता। मेकप आदि का खर्चा सरकार स्वय करती थी। विरह के लिए भी कुछेक विशेष स्त्रिया नियुक्त थी। वे रात भर तारे गिनने, ठडी आहे भरने तथा लम्बे गीत गाने मे पारगत थी। ऐसी स्त्रिया दुबली पतली, सुमुखी होती। नगर मे आयोजित विशेष समारोह मे विरहनो का चयन किया जाता। विश्वस्त सूत्रो से ज्ञात हुआ है कि विरह मे पारगत ऐसी स्त्रिया, इस स्थिति मे रहकर मोटी होने लगी तथा दुख को सुख का पर्याय मानकर यहा वहा मन लगाने लगी। विरहनो को फलता-फूलता देखकर उनके चारो ओर खतरे के निशान लगा दिए गए। वोल्टेज अधिक का बोर्ड लटका रहा। जब स्थिति बेकाबू होने लगी तो इस श्रेणी की स्त्रियो को नगर मे मनमानी करने की छूट देनी पडी।

हा, दो-चार स्त्रिया विरह के प्रति विशेप ईमानदार रही। उन्हे देश-विदेश से समय-ममय पर विशेप आमन्त्रण प्राप्न होने लगे। क्योकि वहा के निवासियो के लिए ऐसी स्त्रिया कौतुक का विशेप आकपण रखती थी।

मेगस्थनीज इन बची-खुची विरहनो से इतना अधिक प्रभावित हुआ कि उसने भी अपनी प्रेमिका की तलाश आरम्भ की। चण्डिका से पाला पडते ही इसके होश उड गए और वह उसे शीघ्र ही विरहरत करने के लिए वहा से चम्पत हो जाना चाहता था किन्तु भारत की इस नारी ने उसे समझाया कि यदि तुम यो ही चले गए तो मुझे विरह कहा से होगा। अत मेगस्थनीज को भारत मे कुछ दिन और रुकना पडा और इसी कारण हमे तत्कालीन व्यवस्था की जानकारी देते हुए वह आगे लिखता है---

इस समय अपराध बहुत कम होते थे। लोग घरो को ताले नही लगाते थे, अत प्रेमियो को दीवार फादने अथवा पिछले दरवाजो से एट्री नही लेनी पडती थी। लोग प्राय मन ही चुराते तथा मन की गलियो मे ही सेंध लगाकर उतर जाते। इस काल के ठगो का काम मात्र ठगे से रहकर अपने सामने स्वय को लुटते ही देखना था। विशेप रूप से जब कोई मरजीना उनकी पीठ रूपी दीवार पर निशान लगाकर उन्हे रिजव सेक्शन मे डाल देती।

लोग घरो से ज्यादा आखो मे बसे थे अत इस काल मे आखो की किस्म बनावट आदि पर तो कवियो और लेखको के लम्बे-चौडे बखान मिले है किन्तु घरो के बारे मे अन्य कोई जानकारी प्राप्त नही हुई। हा, इस युग का एक अचम्भा और भी था। यहा शेर और बकरी एक घाट पर पानी पीने आते थे। मिमियाती बकरियो को इसी तरह शेर के हवाले कर उनका व्यर्थ का भय दूर किया जाता तथा उन्हे शेरनी की तरह गुर्राना सिखाया जाता। अन्य स्त्रिया प्राय हसिनी, गजगामिनी बनकर काया के अनुकूल चाल चलती। उनके मन का मोर कभी नाचता, कभी पपीहा बोलता रहता। पक्षियो को इस युग मे विशेप शिकायत थी कि उनकी सारी ची-चपड स्त्रियो के मन के अहाते मे कैद थी। कही-कही भूले-भटके, कुछेक गलियो मे उल्लुओ को ही बोलने का अवसर दिया जाता। यह बोलना व्याकरण-सम्मत रहे, इसलिए व्याकरण भी शुद्ध किया गया।

पुरुप मात्र एकवचन बोलता था, स्त्री बहुवचन। पाणिग्रहण के बाद का व्याकरण तथाकथित पाणिनी द्वारा और अधिक फिल्टर करके पुरुप वर्ग को

दिया जाता था। इसमे उनकी हसी या शब्द मात्र ओष्ठका मे रहता था। पुरुषो के लिए विशेष शब्द नही थे, वे मात्र प्रतिक्रिया के लिए ही कुछेक शब्दो को प्रयुक्त कर सकते थे। सर्वनाम का प्रयोग अधिक होता था—तू-तू मैं मैं का बोलवाला था। प्रेमी जन मात्र सम्बोधनो का ही प्रयोग करते थे तथा सत्ताहीन होते ही सत्ताशून्य होने लगते। ऐसी स्थिति म उनके विस्मित चकित होकर अथवा उन्मत्त होकर विक्षिप्त प्रतिक्रियायें ही अपेक्षित थी जिन्हे शब्द देना किसी ने उचित नही समझा था।

यो जनता को प्रेममग्न देख देखकर कभी-कभी महिला सुरक्षा सप्ताह मनाए जाते, जिसमे प्रेमिकाओ या प्रेमियो से मिलना भी मना था। स्थान-स्थान पर बडे-बूढे, अधेड प्रौढा तैनात कर दी जाती, जो स्पीड ब्रेकर का काम करती थी। महिलाओ की बातो की तथा अन्य स्पीड चेक करने के लिए जगह-जगह स्पीडमीटर लगाए हुए थे। इन दिनो मे कोई भी मृगनयनी जेब्रा क्रासिंग पर खडी होकर किसी से न आखें, न ही जबान लडा सकती थी। ऐसे दिनो मे बहाने बनाने वाली युवतियो को दण्डित करने के लिए किसी न किसी कोने मे मजिस्ट्रेट की जीप खडी रहती थी। मजिस्ट्रेट बनने वाली स्त्रियो के लिए कुछेक वर्ष का सास बनकर रहने का अनुभव आवश्यक था। घर मे कोतवाली करने वाली महिलाए भी इस पद के लिए कई बार नियुक्त कर दी जाती थी। इन दिनो मे लाल हरी बत्ती की जगह माग मे सिन्दूर भरे हुए स्त्री लाल बत्ती का काम कर देती थी। हरी झडी दिखाने वाली शरारती युवतियो को रास्ता दिखाने के लिए हरी बत्ती के रूप मे खडा किया जाता था। इन्ही दिनो मन मे छुपे, आखो मे बसे सभी प्रेमियो के बारे म डिटेक्टर द्वारा छानबीन की जाती थी तथा उन्हे खुली हवा देने के लिए गोदामो से बाहर निकाला जाता था।

युद्ध छेडने के लिए महिलाओ को किसी प्रकार के बाह्य अस्त्र शस्त्र की आवश्यकता नही थी। वे बात बेबात मे लोगो के मन मे डायनामाइट बिछा सकती थी। उनकी बातें बारूद और हथकण्डे हथगोलो से कही बढकर थे। अत लोग ख्वामख्वाह झगडा मोल लेने से डरते थे और समर्पित भाव से रहते थे। शान्ति के लिए टेम्परेचर कम करना पडता था तथा उसके लिए कई बार कृत्रिम उपकरणो की आवश्यकता पडती थी। प्रेम और युद्ध मे सब साधन प्रयुक्त हो सकते थे किन्तु जब प्रेम मे मात्र युद्ध ही रह जाता था तब या तो एक

पक्ष हथियार डाल देता था अन्यथा उन्हे सदा के लिए अलग कर दिया जाता था ताकि वे अन्यत्र प्रेम आरम्भ कर दें तथा उनकी प्रेम करने की प्रेक्टिस चलती रहे। प्राय कुछेक महिलाए घण्टो बहस कर सकती थी और उनके आगे किसी की नही चलती थी।

मेगस्थनीज़ ने इस वणन के बाद आगे लिखा है कि अपने देश लौटने से पहले उसे भारत की एक अजीब रस्म को देखने का मौका मिला। एक बहुत बडा पाण्डाल सजाया गया था। उसमे एक आदमी का बहुत से लोगो ने घेराव कर रखा था। एक वेदी सी बनी हुई थी जहा एक पडित बैठा हुआ था। थोडी ही देर मे वहाँ आग जलाई गई। एक व्यक्ति सेहरे पहनकर उस आग के पास बैठाया गया। मेगस्थनीज़ ने आगे लिखा है कि लोगो से पूछताछ के बाद ज्ञात हुआ कि पहले यहाँ दूल्हे को आग के पास बिठाकर शुद्ध किया जाता है। दूल्हे को स्टरलाइज़ किया जाएगा, तब उसकी शादी होगी।

चूकि मेगस्थनीज जल्दी मे था, अत उसके आगे वह कुछ नही लिख पाया और इस पुस्तिका को अपनी प्रेमिका चण्डिका के नाम पर समर्पित करके लौट गया।

13

उईराम

उन्हें ठण्ड यों लगती थी कि सिर, मुंह, कान, नाक छुपा लेते, मफलर मुंह पर यों लिपटा होता कि जहां कहीं से ज़रा सी हवा निकल रही होती, वहीं पता चलता ज़रूर मुंह, नाक होंगे—उनकी पत्नी 'सेविका' ने कहा—'ऐसी सूरत बनाकर कहीं मत जाना, वरना लोग समझेंगे तुम डाकू हो।' उईराम बोले, 'भागवान डाकुओं को भला मुंह छुपाने की क्या ज़रूरत है, वे तो मुंह उघाड़े काम करते हैं, दिन दहाड़े डाका डालते हैं, चोरी करने वाले को पहले नोटिस भिजवाते हैं, फिर जब जिसके घर डाका पड़ा, उसकी अखबारों में जब खबर छपती है तो वे मिलान करके देखते हैं कि उस व्यक्ति ने सही ब्योरा दिया है अथवा बढ़ चढ़कर। यदि वह बढ़ चढ़कर ब्योरा देता है तो वे उस ब्योरे के अनुकूल वसूली करने जाते हैं तथा यदि उसे गलती से जीवित छोड़ आए हों तो उसे सज़ाशून्य करके चैन की बंसी बजाते हैं। मैं भला ऐसे

लोगो के मुकाबले मे कहा आ सकता हू, मैं अदना सा जीव हू। इन लोगो की ज्यो-ज्यो ऊचाई बढती है, मैं त्यो-त्यो उनके सामने बौना होता जा रहा हू। इसीलिए हे प्रिय, मैं तो इस आक्रामक ठण्ड से मुह छुपा रहा हू—यह मेरे मुह पर जैसे बर्फ की सी लिपटी रही है। हाथ पाव मुह नाक सब यो ठण्डा हो रहा है, जैसे मुझे फ्रिज के फ्रीजर मे बिठा दिया गया हो। उई देखा नथुनो मे ठण्ड चढ रही है। अगर यह सास लेने का कर्म न करते तो मैं इन्हे हमेशा के लिए बन्द करवा देता या इनके लिए भी उपयुक्त ढक्कन बनवा देता। आख कान नाक मुह बन्द करने की समुचित व्यवस्था होती तो ठण्ड से मोर्चा लेना आसान था। सच कहू तो मुह बेचारा एक कमठ सिपाही है, जो धूप पानी ठण्ड बर्फ मे हर समय तैनात रहता है। सारा शरीर रजाई से ढक दें तो भी इसे खुला रखना पडेगा वरना सास को यदि अपने आवागमन का रास्ता नही मिला, तो अगली सास अटक जाएगी।

आने वाली हर सास भटक जाएगी। यह कहकर उन्होने फिर उई ई कहा और अपने मुह को भी ढक लिया। लम्बे कनटोप से झाकता हुआ मुह अब मफलर मे यो लपेटकर गर्दन पर रखा था जैसे कोई बहुत कीमती वस्तु हो। बैठे-बैठे जब वे खर्राटे लेने लगते तो उसी मफलर से जैसे अजीब सी आवाज निकलती। लगता था खर्राटे लेते समय उनके नथुने कुछ ऐसे फड-फडा रहे है, जैसे सास के साथ भीतर ही भीतर से कोई धडधडाती गाडी बाहर आ रही हो और घर के बच्चे बूढे व जवान गहरी से गहरी नींद से भी उसकी अगवानी के लिए उठ जाते।

उईराम की पत्नी सेविका पति की हर हरकत को सौ सौ बार पढ चुकी थी। कई निष्कर्ष निकाल चुकी थी और अब उन्ही के आधार पर उन्हे बात बेबात मे नोटिस देने को उतारू हो उठती। सुबह का कीमती समय भी जब वे बैठे-बैठे गुजार देते तो वही उन्हे झटका देकर, झकझोर कर जागने का स देश दे देती। मुह हाथ धोये बिना ठण्ड के दिनो मे चाय तक न पीने देती। उईराम का कहना था, यह जोर जबरदस्ती है, यह जुल्म है। चाय जैसी गर्म चीज को मुह लगाने के लिए पहले मुह धोना। यानी ठण्डा होना। वे पत्नी से गर्म पानी की फरमाइश करते तो वह गर्म हो उठती—'दातो को गरम पानी से माजोगे तो यह ठण्डा पानी मुह न लगा पाओगे। अगर यह बत्तीसी अलग होती तो मैं काम करने वाली से एक एक दात झाड बुहार कर, मजवा कर

तुम्हे पहले प्लेट मे देती, फिर एक एक मसूडे को लटका कर तब एक घूट चाय का पीने देती। और आज ठण्ड कम है।'

"कम, किसने कम की, कैसे कम हुई—" उईराम ने ज़ोर से पूछा तो उनकी पत्नी ने जवाब दिया, "यह कोई सब्जी भाजी नही, जो कोई कम तौल देगा। कोई भाव तौल भी नही कि कह दू, मुझे ज्यादा भले ही दे दो, मेरे पति के लिए ठण्ड थोडी कम कर दो। ठण्ड तो ठण्ड है, लगती है, प्रभाव डालती है।'

"प्रभाव। अरे प्रभाव ऐसे डाला जाता है ? यह प्रभाव न हुआ बर्फ भरी बाल्टी हो गया। उडेल दी सिर, मुह, नाक, आख, पर। तुम्हे पता भी है ठण्ड होती कैसे है ? यह तो हर समय डराती, धमकाती है। देखो तो शरीर कैसे काप रहा है मेरा ।"

सेविका ने देखा—उईराम का शरीर कपडो के बोझ तले लदा हुआ कुछ ऐसे काप रहा था कि सारे कपडे भी साथ मे ही काप उठे सेविका बोली, "पहले बताओ तो कितने स्वेटर पहन रखे हैं ?"

उईराम ने दस्तानो के भीतर छुपी उगलियो के ऊनी पजे से एक उगली बढाई तो सेविका को जैसे गिनती भूलने लगी। उईराम ने पूरे सात स्वेटर पहन रखे थे। एक किसी घटिया कम्पनी के बनियान पर, फिर बिना बाह का स्वेटर, दूसरा स्वेटर कमीज़ पर, तीसरा उस स्वेटर के ऊपर एक बाह वाला फिर एक, दो, तीन, बिना बाह के ऊपर एक पतला कोट एह एह। करते हुए वे अब भी काप रहे थे। सेविका खिडकी से बाहर देखने लगी तो उईराम बोल उठे क्या देख रही हो ?

यही कि तुम्हारी खिडकी के बाहर कही बर्फ तो नही पड रही और उसकी हसी छूट गई तो उईराम ने ऊपर का पतला कोट उतार दिया बोले—प्याज की परतो की तरह पतले और हल्के से ये स्वेटर आढ रखे हैं। एक से भी ठण्ड नही रुकती। लाओ, चाय का प्याला दो

सेविका ने उन्हे बाहर की ओर धकेला, "पहले दात साफ करो, मैं चाय लाती हू।"

उईराम के सामने नलका था, दत मजन था, एक अदद ब्रश था और टोपी के चारो ओर से घिरे मुह से होठ और दात आसानी से बाहर झाक रहे थे। उन्होने ब्रश पर दत मजन छिडका। ऊनी पजो से असली हाथ निकाला,

ब्रश उगलियों मे पकडकर अपना मुह खोला। दातो पर मजन लगाया। फिर कुल्ला करने के लिए बेरहमी से नलका खोल दिया। ठण्डा बर्फ पानी उई। एक उगली से छूते ही उईराम कहकर वे पानी को एकटक ताकने लगे। पानी बहता जा रहा था लगातार अनवरत। उसका कर्म बहना था, वह कमरत है। परवाह नही, उसका उपयोग हो रहा है कि नही। कोई प्रयोग करे न करे, उसे कोई सरोकार नही। लोग कितने ही उपदेश पाकर ऐसी कमठना की बात करते है, बहता हुआ पानी, खुला हुआ नल, दौडने की छूट सब कुछ सब कुछ तो है—

आह! उई पत्नी ने चार ठण्डे छीटे मुह पर डालकर उनकी चिन्तन की धारा मे जैसे ककर मार दिया। उन्होने ब्रश किया तो चुल्लू मे पानी लेकर दात साफ करने लगे। पानी के चुल्लू मे आते ही चुल्लू भर पानी मे डूब मरने के खतरे का जैसे अलार्म बज गया हो। चटपट उस पानी से छुटकारा पा लिया। बत्तीसो दात एक ही बार मे धो लिए—'चलो अब कल तक तो पानी को मुह लगाने की छुट्टी।' यही सोचकर उन्होने ठण्डी सास ली तो ध्यान आया कि सास का ठण्डा होना भी कितना खतरनाक है। सुडक-सुडक करके उन्होने दो प्याले चाय के डकार लिए तथा फिर रजाई मे यो घुसने लगे जैसे कोई सियार अपनी माद मे जा रहा हो—कि पत्नी ने हाक लगाई—'दिन शुरु हो चुका है।"

"कहा? उईराम रजाई मे जा दुबके थे। फिर उन्होने पूछा—"यह दिन कैसे शुरु हो गया भागवान! अभी अभी तो अधेरा था। एकदम सूरज कैसे निकल आया?"

"एकदम ऐसे ही निकला जैसे तुम चाय के लिए निकले थे। चलो आज मेरा व्रत है—आप नहा लो आपकी पूजा के बाद ही मैं चाय पी सकती हू।"

"क्या नहा लू? क्या कहा, मैं नहा लू इस ठण्ड मे?"

"हा, हा, आज तो पानी भी ठण्डा नही है। जल्दी करो। बाल्टी भर रखी है पानी की।"

उईराम को नहाने से चिढ थी। गर्मियो मे भी वे तब तक न नहाते जब तक कोई मजबूरी न होती और ठण्ड के दिनो मे तो हाथ पाव धोते समय भी उनके हाथ पाव ठण्डे होने लगते थे। पत्नी का यह कथन सुनकर उनकी अजीब

दशा थी। बोले—व्रत तुम्हारा है तो तुम नहाओ, मैं क्यो नहाऊ?"

"मैं तो नहा चुकी और आपको अभी नहाना ही पडेगा। पडित जी आते होगे। उनके सामने मुझे शर्मिन्दा मत करना। स्टोव मे तेल नही, गैस खत्म है, दोपहर तक गैस आएगी, जैसे तैसे चाय बनाई है। आप नहा लो तो पूजा पर बैठना होगा।"

उईराम को काटो तो खून नही। वे जानते थे पत्नी सेविका एक बार कुछ कह बैठी तो वह पत्थर की लकीर हो जाएगा। वह जब भी पीछे पडती है, हमेशा हाथ धोकर ही पडती है। जो आदमी हर बात के लिए हाथ धोकर पीछे पड सकता है, वह किसी को भी नहाने के लिए मजबूर कर सकता है। उन्होंने मुह पर मफलर लपेटकर अब स्नान के बारे मे गम्भीरता से सोचना शुरू कर दिया—इस स्नान का आविष्कार किस कमबख्त ने किया होगा—जरूर यह किसी स्त्री की साजिश होगी। आदिकाल मे आदम के जमाने म कभी नहाने का जिक्र तो नही आया, फिर यह किसकी करतूत होगी। हव्वा ने ऐसे ही आदम के पीछे पडकर उसे नदी तट पर लाकर डुबकी लगवाई होगी उई। उईराम। ठण्डे पानी मे डुबकी?

"क्या सोच रहे हो जी?" सेविका ने उन्हे चिन्तन मे डूबा देख कर हाक लगाई। उईराम बोले, "चिन्तन मे पानी होता तो मैं उसमे भी कभी न डूबता। क्यो नहाते है लोग? क्यों सारे शरीर को कष्ट देते हैं शरीर जो कपडो से ढका है, हाथ से पाव, सिर से एडी तक जो ढका है, जिस पर धूल की एक पर्त भी नही चढ पाई। कहते हैं—आत्मा चोला बदलती है—तब चोला ही बदलने की बात होती है, आत्मा नहाती है तो नही कहा जाता। नहाता तो वह शरीर है, जिसे आत्मा त्याग देती है। उस मृतक शरीर को चिता मे ले जाने से पहले नहलाया जाता है। जीवित लोग तो बहुत कम नहाते हैं। इस नहाने का वणन कही नही आता। राजा महाराजाओ के किस्से पढे, कहानिया पढी, किसी ने कभी नहाने का वणन या जिक्र नही किया। करें भी क्यो? कोई नहाया हो तो न।" उईराम कहते चले गए। पत्नी रसोई से फिर चिल्लाई—"ऐ जी, गए कि नही।"

"गया।" कहकर वे कपडो, चप्पलो समेत बाथरूम मे घुस गए। सामने साबुन की हरी टिकिया देखकर आखें लाल हो उठी।

कपडो समेत नहाना ठीक रहेगा। उई पाव मे जुराबें तो जरूरी हैं, ठण्ड

हमेशा यही से लगती है। उन्होंने फिर ज़ोर से उई उई कहते हुए ठण्डे पानी मे उगली गडा दी। पानी यो चुभा जैसे सुइयो की नोको पर उन्होने उगली गडा दी हो। सारा शरीर सिहर गया। उफ्फ, यह पानी है या कसाई। कभी झटका देता है, कभी हलाल करता है। वाह रे पानी! तू क्या कमाल करता है। अब उन्होंने पाचो उगलिया ठण्डे पानी मे गडा दी। फिर धीरे-धीरे स्वेटर की बाह ऊची की। पानी के छीटे मारे मुह पर, कनटोप लगा रहा। आख नाक, कान पर भी छीटे मार दिये। फिर पाव से जुराब उतारते वक्त बार बार हाथ रुक जाते। हा, पाव तो जरूर धोने है, इन्ही की पूजा होती है। क्या जुराब के बीचो बीच मे से ही पाव नही धुल सकते? फटी जुराब से एक उगली झाक रही थी। उईराम ने उस पर ज़रा सा पानी डाला। फिर बेरहमी से जुराब को खीचना शुरू किया। कसी-कसी जुराबें लिपटी लिपटी सी, चरणो मे ही सदा रहने वाली वे जुराबें, जो 'फट जाए, पर पाव न छोडें का प्रण लेकर पहनी गई थी। अब अलग हो रही थी। उईराम ने झटका देकर जुराबो से पाव अलग कर डाले। फिर ठण्डे पानी को पाँव पर डाल दिया— उई । उईराम की इस चीख मे जो स्वर था, उसी से सेविका समझ गई कि वे सचमुच नहा रहे हैं। अब उईराम ने बाकी पानी यहा वहा डाल दिया, लेकिन उई उई वैसे ही करते रहे। मुह हाथ पाव धोकर वे बाहर यो निकले जैसे उम्र भर के लिए एकबारगी महास्नान कर आये हो। सेविका ने उन्हें हसरत भरी नज़र से देखा। पाव ठीक थे, मुह ठीक था, लेकिन बाहे । उईराम ने झट से बाहो को ढकने की कोशिश करते हुए फटे स्वेटर की अधखुली बाह को आगे की तरफ खीचा। उसे लगा, पत्नी अभी डिटेक्टर से जाच लेगी मैंने स्नान नही किया। नही किया तो क्या! उईराम ने यहा वहा से हिम्मत बटोरी। सामने देखा—कटोरी मे ठण्डा पानी है—यह सारा पानी क्या चरणो मे डाल देगी—सोचते ही वे जमीन से उछल गए। पत्नी बोली— मैं समझ गई थी आपने स्नान नही किया, सिर्फ पानी गिरा दिया है। उई उई चीख चिल्लाकर मुझे जताना चाहा है कि आपने स्नान किया है कहा?

ऐ! अब उईराम मे पत्नी के सामने बोलने की हिम्मत आई। ठण्डे पानी से सामना करने से अच्छा है पत्नी को ज़ोर से जवाब दे देना। हा, वह तो वैसे ही उनपर गरम हो रही है। गरमागरम डाट भी वे गले से उतार लेते थे, लेकिन ठण्डे पानी को देखते ही उनका कलेजा काप उठता। अक्तूबर नवम्बर

से ही उन्हे ठण्ड लगनी शुरू हो जाती थी । वे ठण्डे पानी को प्रणाम कर देते थे, लेकिन गरीबी ऐसी कि गरम चाय भी दिन मे दो बार ही मिल पाती। नहाने के गरम पानी की तो बात ही दूर थी, इसीलिए उईराम को नहाने से अरुचि होने लगी थी । वे स्वच्छना और स्नान पर चर्चा कर सकते थे, स्नान न करने के नये से नये तरीको पर शोध कर सकते थे, लेकिन नहा नही सकते थे । आज पत्नी को यो अपने प्रण पर अटल अडिग देखकर, पूजा के लिए कटोरी मे पानी भरे देखकर वे शास्त्राथ की मुद्रा मे आ गए। उन्होंने कहा, "स्नान क्या है, स्नान किसे करना चाहिए। सद्यस्नात और असद्यस्नान मे क्या अन्तर है । क्या यह शब्द उतना ही आसान है, जितना तुम समझ रही हो। स्नान के लाभ हानियो पर किसी ने शोध किया ? आज तक कभी किसी ने स्नान को इतना महत्त्व दिया जितना तुम दे रही हो ? पूजा से पूव स्नान का क्या अर्थ । वह पूजा ही कैसी, जिसके लिए स्नान करना पडे । अरे पूजा तो वह होनी चाहिए कि बैठने वाले को उसी पूजा मे ही स्नान का फल मिले । लोग पूजा के लिए स्नान न करें, बल्कि स्नान के लिए पूजा करें। पडित आए, पानी का बखान करें, उसका वणन ऐसे करें कि बैठा हुआ व्यक्ति जब उठे तो उसे प्रतीत हो वह स्नान कर चुका है ?"

"अच्छा तब तो आज पहले स्नान पर ही प्रवचन हो जाए—" सेविका ने दृढ स्वर मे कहा और बोली, "पडित जी तो ग्यारह बजे आएगे । तब तक आपका ही प्रवचन सुनूगी ।" कहकर वह वही बैठ गई।

उईराम ने देखा, वह बार-बार उमके चरणो को ताक रही है। बाहो पर नजरें घुमा रही है, सन्देह का साप सरक रहा है अत उसका ध्यान बाट देना ज्यादा अच्छा होगा । इसे ऐसा प्रवचन दू कि यह स्वय कभी नहाने का नाम न ले । दो सूत्र जाप करे और स्नान हो जाए। उईराम ज्ञानी ध्यानी थे। यहा वहा से परिभाषाए बटोरना गहरी गम्भीर खोजबीन करने की उनकी पुरानी लत थी । पति पत्नी दोनो ही हर चीज़ के पीछे लट्ठ लेकर घूमते थे। अत अब वे एकाग्र चित्त होकर प्रवचन शुरू हो गए । उईराम बोले—

स्नान शब्द असल मे नहाना का शुद्ध रूप है। नहाना शब्द को यदि हम गौर से देखें तो यह तीन मुद्राओ का एक रूप है न हा ना। न हा, न न। असल मे यह पानी के साथ एक समझौता था कि गुप्त समझौता, जिसमे पानी बाटने वालो ने, कुछ ऐसा शब्द रख दिया, जो न हा मे था, न न मे।

जब इस सन्धिपत्र को बाचा गया तो वाचने वाले ने इसे ठीक तरह से न वाचा। चूकि यह समझौता पानी का था, इसीलिए स्नान मे पानी प्रमुखता पा गया। उसने इसे अग्रेज़ी के नान तथा नन से जोडकर इसमे कुछ नकारात्मक जोडना चाहा किन्तु खुद पसीने से नहा गया। ऐसी हालत मे उसने इस पानी का थोडा सा प्रयोग शरीर के लिए किया होगा तथा इस शब्द का आविष्कार हुआ होगा।

आविष्कार के बाद हर शब्द की क्या दुर्गति होती है, यह तो सर्वविदित है। शोधकर्ता इसके पीछे हाथ धोकर पड गए। उसकी नई परिभाषाए गढ गए। नहाने वाला कोई मुनि तपस्वी हो जाता था और स्नान तब केवल महात्मा तथा महान विभूतियो के लिए ही होता था।

समय के साथ हर चीज़ का अवमूल्यन हो गया है। इसीलिए अब यह स्नान असाधारण से साधारण हो गया है। मैल कुचैल पोछने के लिए जहा तौलियो की कमी हो, वहा इसकी आवश्यकता पडती है। असाधारण से साधारण होते ही ऐसी गति होती है। तुम मुझे इतना साधारण बना दोगी कि

सेविका को भय था अब यह बैठकर असाधारण तथा साधारण पर घटा भर प्रवचन करेंगे, इसीलिए बोली—"यह प्रवचन मै इसलिए सुन रही थी ताकि तुम नहाने की बातो की चर्चा करो, तुम्हे नहाने पर कुछ गहन गम्भीर सूझ जाए जब तुम किसी भी बात का वर्णन करते हो तो उदाहरण देते हो। हे प्रिय, अब इस साधारण से स्नान का नहाकर उदाहरण स्वय बन जाओ, प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या ।"

"हा, हा, क्या प्रमाण—क्या प्रमाणपत्र। बार बार नहाकर आया हू तो तुम्हे लगता ही नही मैं नहा चुका हू और फिर नहाकर आऊगा तो क्या भरोसा है तुम्हे वह सत्य प्रतीत होगा। इस बार क्या नल मुझे प्रमाणपत्र दे देगा कि मैं नहा चुका हू। यह नल दमयन्ती वाला नल नही, जिसे मैं लिखवा कर ले आऊ या उसका कोई दूत तुम्हे आकर सन्देश दे जाय वे नहाकर आ रहे हैं उनका विश्वास करना।' असल मे जहा शक की दृष्टि हो, वहा विश्वास का पौधा लग ही नही सकता। तुम्हारी नजरें खुर्पे कुदाल की तरह खोदती है, कुरेद देती हैं। अरे ज़रा सी बाह अधढकी रह गई तो तुम्हें सन्देह हुआ। फिर वह सन्देह निस्सन्देह हुआ और फिर वह पक्का पक्का शक बनता

चला गया और तुम्हारा यह शक तुम पर हावी होकर तुम्हे अपने प्राण प्रिय पर सन्देह करने को मजबूर कर रहा है। देखो हम तुम एकप्राण हैं, जब तुम नहा चुकी तो मैं भी नहा चुका। चलो कर लो पूजा। यह पाव धुल चुके हैं, मेरे चरण कमल की वन्दना करो। चरणो को कमल इसीलिए कहा जाता है क्योंकि वे किसी न किसी कीचड से हमेशा सने रहते हैं"—यह कहकर उईराम ने दोनो पाव पसार दिये। "लो तुम पूजा करो, जब तक मैं अखबार वगरा पढ लेता हू, लेकिन साफ कहे देता हू इन चरणो पर ठण्डा पानी मत डाल देना। यह जड हो जाएगे। जाओ प्रिय, यह कटोरी भर पानी गरम कर आओ।"

पर सेविका टस से मस न हुई। उईराम को लगा—इसका कोई व्रत उपवास नही है—केवल व्रत है पति परमेश्वर को ठण्ड मे ठण्डे पानी से स्नान करने पर मजबूर करने का। इसके लिए वह कोई भी कम कर सकती है।

सेविका वहा से उठकर जरा रसोई मे गई तो उईराम को लगा वह गली मुहल्ले के लोगो को बुलाने गई है नही नही, उन सारी पत्नियो को बुलाने गई है जिनके पति नही नहाते। जिन्हे नहाने से परहेज है सोचते सोचते उईराम अपनी कल्पना मे डूब गए। उन्हें लगा कि उनकी पत्नी एक भरी सभा को सम्बोधित कर रही है नहाने के लाभ की सूची लेकर आ खड़ी हुई—"बहनो, आज के युग मे जब मन पर मनो मैल रहती है, एक दूसरे के प्रति दुर्भावनाए रहने लगी है, हममे सद्भाव भाईचारा आदि कुछ नही रहा तो यह मैल अन्तस से निकलकर बाहर तन पर भी छा रही है। यह मैल मलिनता है, कालिख है। धूल हमेशा सिर पर चढकर बोलती है। मन चगा तो कठौती मे गगा और तन गदा तो चुल्लू भर पानी भी नही। आज के युग मे पानी की चाहे कितनी भी कमी हो स्नान के महत्त्व मे कमी नही आई। तन की मैल मन की मल से बढकर होती है। मन की मैल प्रकट नही होती, वह तो भीतर है, उसे सिर्फ भावनाओ से शुद्ध किया जा सकता है पर तन की मल के बारे मे क्या कहे, यह वह मैल है जो चढती है, बढती है, बाहर की सारी मलिनता शरीर पर यो लद जाती है कि अगर कुछ दिन न नहाए तो आपको लगेगा आपने मैल का गटठर अपनी पीठ पर लाद लिया है। शरीर भारी भारी लगता है, अनमना हो उठता है, उदासी छा जाती है, एक बोझ सा आ पडता है। यह बोझ कोई साधारण बोझ नही इस बोझ के गट्ठर नहीं होते। इसे कुली

उठा नही सकता । आग जला नही सकती, चोर चुरा नहीं सकता, सिर्फ पानी ही इसे धो सकता है । इस गटठर को उतार सकता है । मल का ढांचा नमक के बोरे की तरह है जो पानी पडते ही घुल जाते हैं । अचानक शरीर हल्का-फुल्का होने लगता है सर्वत्र कुछ धुला-धुला निखरा-निखरा सा दिखाई देता है ।

उईराम एकदम बुडबुडाए, 'धला-धुला निखरा-निखरा दिखाई दे उसके लिए प्रयत्न करो । उन सारी चीजो को धो दो । वह खुद निखर आएगी । पानी पीते ही पूरे शरीर मे प्रवेश पा जाता है । एक अजीब सी शान्ति मिलती है, सुख प्राप्त होता है । हे मूर्खा, जडो को सीचो तो पत्ते पत्ते तक पानी पहुच जाएगा । इसीलिए पानी पियो—पीकर भीतर पहुचाओ, ताकि वह हाथ पाव दिल दिमाग सब पर दौडकर परिक्रमा करे और मलिन विचारो को धो दे । और फिर तुमने तो पाव धोने का सकल्प किया है । पाव भी जड की ही तरह हैं । देखो मैं वट वृक्ष, मेरी जडे नीचे, हाथ पाव शाखाए । तुम्हारे इस जल का स्पर्श पाते ही अभी मुझपर पत्ते आ जाएगे । ढेरो फूल खिल जाएगे फल टपक पडेंगे और और ।

"और और चिडिया कौए आ आकर तुम्हारे सिर पर घोसला बना जाएगे । देखो तो सिर की हालत । अभी झटको तो बीच मे से पूरे घोसले का सामान निकल आये ।"

"एँ ! तो क्या तुम चाहती हो मैं स्नान करू और उसके साथ सिर भी धोऊ ?" उईराम की आश्चर्य से नजरें फैल गईं । सेविका ने ज़ोर से कहा—"हा हा, और उनके सिर के बालो को ज़रा सा झटका दिया तो उईराम को लगा सिर से सहसा कई घोसले निकलते आ रहे है । उन घोसलो मे कौओ के अण्डे हैं । उन अण्डो मे से कोयलो के बच्चे निकल रहे है । वे कुहू करना चाहते है, पर कौआ उन्हे काव काव काव सिखाना चाहता है दोनो मे ऐसे तकरार होने लगी है, जैसे किसी अध्यापक की प्रबुद्ध छात्र से होती है । हर कोई अपना ज्ञान का गट्ठर लिए खडा है । फिर सहसा उन्हे लगा सिर पर कई कौए चोच मारने लगे है । उन्होने सिर ऊचा किया तो देखा कौए की जगह सेविका का नाखूनी (नाखून वाला) पजा बालो मे था और वह तिनके यो चुन रही थी जैसे उसे तिनके बटोर-बटोर कर नया घोसला बनाना हो । उईराम ने एकदम ज़ोर से झटका लगाया और उस पजे को बालो से अलग

किया कि तभी फिर उसने अपनी सुई चुभो दी – "मैं कहती हू जरा नहा लो, पडित जी आने ही वाले है। अच्छा सिर से न सही सिर को छोडकर बाकी स्नान तो कर सकते हो।"

उईराम बिलकुल राजी नही हुए। अपनी ही बात पर अडिग रहे। बोल उठे—'बाकी स्नान। यह बाकी स्नान क्या होता है ? इस ठण्ड मे शरीर पर पानी पडेगा तो बाकी क्या बचेगा। इस पार्थिव शरीर को क्यो कष्ट दें। यह शरीर अन्तत मिट्टी मे ही मिलना है, ऐसे में इस पर पडी पर्तों धूल हटाने का प्रयास क्यों ? बल्कि इस पर इतनी मिट्टी चढने दो कि इस मिट्टी का उस मिट्टी से अन्तर ही मिट जाए। यमराज आए भी तो उसे मिट्टी का पुतला समझ कर यही त्याग जाय। अरे हा, पुतला तो ।" कहकर उन्होने पत्नी की दृढ मुद्रा को देखते हुए कहा—"अगर तुम्हे स्नान का इतना ही शौक है तो एक काम करो। मेरा एक काठ का पुतला बनाकर रख लो। जब पूजापाठ करना हो, उसी को नहला धुला कर पूजा पाठ करके फिर प्रसाद का भोग मुझे लगवा देना ठीक है—कहकर वे उठे और बिस्तर में दुबकना ही चाहते थे कि पत्नी ने उन्हे बाल्टी भर पानी देकर कहा— 'पानी गरम है, एकदम ऊपर डाल लेना बस। देखो, न नहाये तो पूजा में विघ्न पडेगा। अपशकुन होगा, आपको मेरी कसम।'

क्या, क्या, कसम दे डाली। उई उई करते उईराम तैश मे आ गए। गुसलखाने मे घुसे। शरीर से चिपके कपडो को अलग किया और फिर आव देखा न ताव, पूरी बाल्टी उठाई और सिर पर डाल दी। उई उई रे– उई रे रे ठण्डा, बिल्कुल ठण्डा पानी। अरे सारे शरीर पर सुइया चुभ रही हैं। सिर बर्फ होकर एक ओर लटक रहा है। तौलिए—किसे तौलिए– कहा है तौलिए—कहकर उन्होने बडे से तौलिए से पानी का एक एक कण शरीर से पोछा। सिर को सौ बार निचोडा, पर ठण्डा पानी जैसे पोर पोर से भीतर घुस चुका था। रोम-रोम छिद्र बन चुका था। सैकडो छिद्रो से होता सारा पानी सीधे शरीर के भीतर घुसता गया। एक बूद भी नीचे न गिरी, शरीर पानी पी गया । रोम रोम पोछते। रोम रोम से फिर पानी टपक पडता। सार रोम खडे थे। उईराम को लगा, यह रोम नही, एक एक पानी भरे ताल मे चावल के नन्हे पौधे है, पनीरी उगाई जा रही हैं हाय हाय, मैं तो तबाह

हो गया। मैं मर गया रे। उई उई उई राम। उई कृष्ण। उई अल्लाह। उई वाह गुरु उई उई ।

सारे धर्म याद आए, सारे भगवान याद आए। द्रौपदी का चीर बढाने वाले कृष्ण की वह दुहाई देते हुए बोले, "कष्ट मे तुमने हर किसी की मदद की। जब तुम द्रौपदी का चीर बढा सकते थे तो क्या मेरा वह बाल्टी भर पानी गरम नही कर सकते थे। चीर बढाने मे तो काफी मुश्किलें आई आई होगी। पानी गरम करने मे क्या रखा था ।"

यहकर उईराम ने सारे शरीर पर कपडे लाद दिये। पूरी तरह से मुंह भी ढक लिया। पलकें झपकाने के लिए ही आँख खुली रखने की जरूरत पडी थी, वरना वे आंख देखने के लिए खुली न छोडते। इसी तरह से नाक की दशा थी। अगर नाक का सास लेना जरूरी न होता तो वे इसे भी मफलर मे यों लपेट लेते कि कोई जान न सकता, वह कौन है, कहा से आया है, क्यो आया है—

क्यो आया ससार मे? क्या स्नान के लिए ही।

वे रुआसे हो उठे—बार बार वही प्रश्न कानो से टकराकर आया—प्राणी ससार मे क्यो आया?

तभी गीत गूज रहा था—'बिरथा जन्म गवाया रे प्राणी।' पर उईराम को सुनाई दिया - 'बिरथा हाय नहाया रे प्राणी ।'

हाय! हाय!! कहकर उईराम का रोम-रोम रो उठा। जोर से बोले, "अब सुनो मुझसे, स्नान क्या होता है। ठण्ड से ठण्डे पानी मे स्नान क्यो होता है, झूठ बोलकर पति को धोखा देने वाले, गर्म पानी का हवाला देकर विश्वास-घात करने वाले। सुनो, स्नान क्या होता है—शरीर मे सुइया सी चुभती है—इतिहास गवाह रहेगा जब नगर नही, महानगर मे टेम्परेचर पन्द्रह था, उस दिन उईराम ने ठण्डे पानी से ठण्डा स्नान किया था। रोम-रोम मे छेद हो गए। उनमे पानी भर चुका है। इतना पानी भर चुका है कि अब जीवन मे जब जब स्नान की अति आवश्यकता हुई, धूप, गर्मी, बरसात मे कभी भी, तो रोम रोम से उस पानी के फव्वारे छूटेंगे अब मैं स्नान से उस परम पद को पा चुका हू, जिसके बाद स्नान की इच्छा नही रहती। आवश्यकता नही रहती। हर तरफ हर कोई स्नात ही नजर आता है। मुझे तो लगता है जो डिग्री बी०ए० करने के बाद मिलती है, जो स्नातक होता है, वह पढाई लिखाई

वाला ही स्नातक है, वह कभी नहाया या नही, इस बात का पता लगाना कठिन है। यह डिग्री तो स्नान के बाद, महास्नान के बाद मिलनी चाहिए। आज मैंने जाना है, स्नान कड़ी परीक्षा है। इसमे धैर्य छूटता है, यह बुखार की तरह सिर पर चढता है। इसके लिए मजबूर किया जाता है। तब कोई सहायता कोष मे सहायता नही मिलती, कोई सात्वना शब्द नही मिलते। उई रे! एक एक सहायता कोष खोलो रे, उसमे ऐसी-ऐसी मुद्राए हो, जो पाकर हर कोई स्नात ही नजर आए। सद्यस्नात यानी ताज़ा नहाया हुआ। हाय रे—उई उई अब तो मैं आज ऐसा नहा लिया कि जब जब इस क्षण को स्मरण करूगा, ठण्डे पसीने छूटेगे, ठण्डे पसीने, उई। फिर ठण्डा पसीना भी ठण्डा रे

तभी उन्होने देखा, पत्नी भी मुस्करा रही है, उसकी हसी जैसे दूध से नहाई हो ऐ। कही यह अब दूध से नहाये की पूजा का व्रत ले बैठी तो। उईराम अपनी ही जगह से उछल गए।

सामने पडित जी आ रहे थे। उईराम ने उसे कसाई की तरह देखा। पडित ने आते ही कहा—"अपने पति को बोलो, इन कपडो के बीच से स्वय को अलग करके स्नान करके आयें तभी पूजा मे बैठ सकेंगे ।"

"क्या ?" उईराम पर सहसा जसे बर्फ का पहाड आ गिरा हो। उनकी पत्नी ने पडित जी को लाख समझाया, पर पडित जी अड गए। बोले, "तो यह पूजा के लिए नये वस्त्र धारण करे। शरोर पर पुराने मैले कपडे पुन पहनने से मैल का पुनरागमन होता है यह वस्त्र पुन स्नान के बाद ही धारण करे।"

ऐं! उईराम का खून सूख गया। पडित जी अपनी बात पर अड गए थे। पत्नी ने याचना भरी दृष्टि से पति को देखा तो वे गुर्राये। बोले—"मैल क्या है? मैल किसे कहते है महोदय। मैल तो आपके मन मे है। यह व्रत पूजा पाठ नही, कोई गहरी साज़िश है। कहो कहो सात बार स्नान करने को कहो लाओ लोटे भर भर कर पानी डालते जाओ, आओ आओ गली मुहल्ले के लोगो को बुलाओ, नगर के मुखिया को बुलवाओ। अरे नही, पहला लोटा पानी डालने के लिए किसी नेता को ही बुला लो न! दूरदर्शन, आकाशवाणी, प्रेस वाले कहा हैं? मैं प्रेस कान्फ्रेंस करूगा, इन्हे बताऊगा नहाने का अर्थ क्या है। मुझसे कोई कहे तो आज मैं नहाने पर पूरा शोध ग्रन्थ लिख

दू। मुझे परम ज्ञान प्राप्त हो चुका है। मैं तो बुद्ध से प्रबुद्ध हो चुका हू। ज्ञान प्राप्त करने की आदश स्थिति को पा चुका हू—अब इहलोक परलोक का भेद मिट रहा है। मैं परम आनन्द की स्थिति को प्राप्त हो चुका हू। मेरे पख निकल आए है। मैं हवा मे उड रहा हू" हा, कहते हुए उईराम ने दोनो हाथ पाव की तरह फैलाए, सिर पर पाव रखने ही वाले थे कि ध्यान आया—सिर गीला होगा—पाव फिसल सकते है, इसीलिए चट मुडकर चप्पल पहने फिर उडे यो उडे कि घर के बाहर आ खडे हुए।

पडित जी का मुह खुला रह गया। सेविका की आखें खुली रह गईं। सामने का द्वार खुला रह गया। किन्तु उईराम भाग खडे हुए

सेविका का सिर झुक गया। उसे यो लगा जैसे कोई कमठ रणक्षेत्र से पीठ दिखाकर भाग गया हो। वह लज्जा से गडने लगी थी। पडित ने आश्वासन देते हुए कहा, "बेटी, आजकल तो लोग पच स्नान से भी काम चला लेते ह, लेकिन नये कपडे अवश्य पहनने होते है। चलो बैठो। ठाकुर जी पर ही यह कुर्ता धोती रखकर अजलि मे पानी ले लो। मैं मन्त्र बोलता हू "

सेविका ने पूजा कर ली थी। पडित जी जा चुके थे। उईराम ने पडित को घर से निकलते देखा तो वापस आ पहुचे। सीधे रजाई मे घुस गए।

पत्नी के चेहरे पर एक मुस्कराहट आ गई थी और वह सामने बैठकर गरमागरम चाय पी रही थी। उसका व्रत जो था। उईराम उसकी सुडक की आवाज सुनते ही चुस्की ले लेते। चाय वे माग नही सकते थे क्योकि आज उनकी सेविका का व्रत था और वह जब तक ठण्डे पानी से सात बार नही नहायेंगे, तब तक शायद चाय नही मिलेगी।

14
शीलादेवी ने भौहें बनवाईं

शीलादेवी औरो की भौहे तराशी हुई देखती तो मुह मे पानी भर आता। सोचती एकाध बार अपने धमपति श्री हीरालाल से कुछ पैसे ऐंठ ले और किसी ब्यूटी क्लीनिक मे जा पहुचे। अपनी आखें चार बार शीशे मे देखती और सोचती, ऐसी भौंह बनवाऊगी कि देखने वालो की आखें खुली रह जायें। लोगो की भौह देख देखकर शीलादेवी को लगने लगा था कि उनकी पलकें कुछ ज्यादा लम्बी हो गई हैं। भौंहे बडी होकर मूछो की तरह आखो को ढकने लगी ह और फिर उसने पलकें जो उठाईं तो वह काटो की तरह भवो मे अटक गईं और अब आख एकटक देखने लगी। शीलादेवी ने भौहो के तराशने को पहली बार इतनी गम्भीरता से लिया कि अब यहा वहा वह ब्यूटी क्लीनिक की तलाश करने लगी तथा हरेक के रेट आदि नोट करके अपने श्रीमान से रुपये

ऐंठने की तरकीब ढूढने लगी। खैर, वह दिन भी जल्दी ही आ गया। श्रीमान होरालाल को दौरे पर जाना पडा। वे जाते हुए उसे कुछ रुपये देकर बोले—"जल्दी लौट आऊगा। अपना ध्यान रखना।"

शीलादेवी की खुशी का ठिकाना न रहा। वह बोली—"जल्दी आना पर पहले काम। जल्दी करने की जरूरत नही मेरी फिक्र मत करना।

कहकर उसने रुपये पोटली मे ऐसे बाध लिए, जैसे अभी उन रुपयो के अकुर फूटेंगे। श्रीमान जी के जाते ही शीलादेवी ने अपनी योजनाओ को कार्य-रूप दिया। वह सीधी सामने के बाजार वाले ब्यूटो क्लीनिक की ओर भागी। जाते-जाते उसने अपनी बडी-बडी घनी भौंहो को फिर हसरत भरी निगाहो से देखा जैसे उन्हे अलविदा करने या 'सी आफ' करने जा रही हो। बार-बार लगता था, वह ठीक तरह से त्यौरिया नही चढा पा रही—कोई रौब दाव नही रहा—फिर उसे पडोसिन शिल्पी की तराशी हुई भौहो का ध्यान हो आया, जिसकी भौहो के पास ही एक मोटा काला तिल था। लगता था किसी ने दीवार के कोने मे बिना फूल का एक गमला रखा छोडा हो।

चलते-चलते उसने सोचा, पहले आखें टेस्ट करा लू, कही भौहे बनवाने के बाद आख मे फरक तो नही आ जाएगा। फिर जाने क्या सोचकर विचार छोड दिया। फिर भौंहो पर हाथ फेरा तो लगा उगलिया कही भौंहो मे ही अटक कर रह गई है। उसने झटककर अपना हाथ अलग किया और तेज़ी से क्लीनिक मे जा पहुची। क्लीनिक का दरवाजा खोला तो सामने लगे शीशे मे बहुत सी भुतनिया चुडैले जसे दिखाई दी। शीलादेवी के मुह से सहमा चीख निकलते निकलते रुक गई। उसने देख लिया था बाल बिखराये, बैक कौम्बिग करके आधे छुटे बाल—या क्लिप आदि लगाए हुए वे स्त्रिया हेयर सैट करवा रही थी। खैर, शीलादेवी सामने की कुर्सी पर धम्म से बैठ गई। एक मेम जैसी औरत आई तथा उससे बोली—कहिए।

भौहें चाहिए थी—कैसे मिलेंगी?

मेमसाहब शीलादेवी की बात पर हसी, पर बात समझ गई थी, इसीलिए बोली—सिफ पाच रुपये।

शीलादेवी को प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। सिर्फ पाच रुपये के लिए इतने दिन सोच विचार मे रही, "हाय न हाता तो दो दिन सब्ज़ी न लेती—भौहें ही बनवा लेती।"

तभी मेम ने उसे कुर्सी पर सिर टिका कर आखें मूदने के लिए कहा। आँख मूदने का सुनते ही शीला तुनक कर बोली—"अभी तो तुमने काम शुरु ही नही किया पहले ही आख बन्द करने को कहती हो ?" मेमसाहब बोली, "ठीक है तो खुली रखो आँख। बाल आँखो मे आयेंगे तो मत कहना " कह कर उसने एक लम्बा सफेद धागा लिया। उसका एक सिरा अपने मुह मे डाला, दूसरा सिरा हाथो मे और वह शीलादेवी की आखो पर झुकी। शीलादेवी को लगा, ऊपर से आता हुआ धागा टिड्डी दल की तरह लहराता हुआ उसकी भौहो के खेत पर उतरेगा और सारा खेत चर जाएगा। अभी उस धागे से एक दो बाल ही उखड पाये थे कि श्रीमती शीलादेवी ने 'मार डाला रे'' शोर मचा दिया। मेमसाहब ने धागा मुह मे डाले हुए 'चुप रहो' कहा तो शीलादेवी की आख पर कुछ आ गिरा। शीलादेवी थोडी देर को चुप हो गई। उसने बाल उखडने दिये। थोडी देर बाद दर्द बर्दाश्त से बाहर होने लगा। वह सीधी होकर बैठ गई। अभी तक आधी भौह ही बन पाई थी। शीला का गुस्सा हद से पार हो गया। तुनक कर बोली—"नही बनवानी मुझे भौहें। वापस कर दे जित्ते बाल उखाडे है।"

"ओहो, तो पहले कहती। हम तुम्हारी घनी भौंहो की चोटिया गुथवा देते ।"

"अब वापस चिपकवा दे सारे बाल—मुझे नही बनवानी भौहे "

"नही बनवानी तो जाओ—लोग मजाक उडायेंगे और हा, जरा आईने मे देख भी लो—कैसी लगती हो "धागा उठाए मेम ने उसका ध्यान अधबनी भौहो की तरफ आकर्षित किया। शीलादेवी ने सचमुच देखा, एक भौंह हल्की, एक भौंह भारी तराजू के पलडो की तरह ऊची नीची होती भौहो से वह मायूस हो गई। अत उसने फिर कुर्सी पर सिर टिकाकर आखें मूद ली। मेमसाहब फिर धागा लेकर उसकी भौहो पर टूट पडी। शीलादेवी रोते कराहते अपनी भौंहो के बाल नुचवाती रही—सोचती रही, ऐसा दर्द तो दात उखडवाने मे भी न हुआ था।

"उठो शीलादेवी, भौहें बन गई ।" शीलादेवी को एक आवाज़ सुनाई दी।

ए सुनकर उसे ऐसी खुशी हुई जैसे किसी ने कह दिया हो—शीलादेवी, तुम्हारे लडका हुआ है। बेचारी ने सिर उठाया। फिर कुर्सी के पीछे टिका

दिया, वोली, "थोडी देर बाल पक्के हो जावें तो सिर उठाऊ ?"

"नही बहन, तुम्हारे बाल बहुत पक्के लगे हुए है। एक एक की जडें ऐसी पक्की—कुए से भी गहरी हैं 'एक एक बाल उखाड़ते वक्त मुडेर पर खड़े होकर झाकना पडता था उठो ।"

शीलादेवी को लग रहा था मुह सीधा करते ही बचे खुचे बाल भी गिर जायेंगे । खैर, सामने देखा तो शीशे मे अपनी आखे देखकर हैरत हुई, जैसे कोई नई आखे निकल आई हो। गाठ से पैसे खोलकर देने लगी तो सोचा, भौंहो की जाच परख तो की ही नही फरक क्या आया, कही आखें ज्यादा जगह हो जाने के कारण कम तो नही देखने लगी वह तेजी से बोली, 'भौहो का गारटी कार्ड दे।"

"गारटी कार्ड क्या ?"

"यही कि आखो को ठीक नजर आवेगा—भौंहें टेढी करू या सीधी रखू, इस सब के बाद—क्या करना होगा—इनकी देखभाल का जिम्मा ।"

'लेकिन यह बात पहले तो नही हुई थी। हा, इतनी गारटी देते है दूसरो का अच्छा दिखेगा —तुम्हें देखकर लोग खुश होवेंगे ।"

"तो ठीक है, पैसे भी वही देने आवेंगे तब जो खुश होगे, हा।"

"नही, नही, यह बात नही शीलादेवी। यह चार रुपये का (पलटकर) चिमटा ले जाओ—जो बाल उगें, इससे उखाड लेना।"

"उगेंगे क्यो भला ? मैं अडोसन पडोसन, मुन्ना मुन्नी सबसे कह रखूगी ध्यान रखेंगे और ऐसे चिमटे तो मेरे पास घर मे रखे है पसे लूटने की कोशिश मत करियो, हा ।"

कहकर उसने मेमसाहब को घूर कर देखा

'ऐसे घूरकर मत देखना शीला देवी—अब तुम्हारी आखे ज्यादा चमकेंगी —समझी।"

शीलादेवी ने अपनी कोप दृष्टि को तनिक शान्त करके कहा—"भौंहे बेहोश करके बाल निकाला करो मेमसाहब—तो इतनी तकलीफ न हो ।" और फिर पाच रुपये के नोट को उसकी ओर ऐसे बढाया, जैसे कसाई के हाथ मे अपनी गाय का रस्सा थमा रही हो।

फिर वह धीरे-धीरे वहाँ से चल दी। उसे लग रहा था पूरे रास्ते मे खडे हुए लोग सिर्फ उसी की तरफ देख रहे है। वह भी पलटकर घूर कर देखती,

लेकिन उसे भौंह तराशने वाली डाक्टरनी ने घूरने को मना कर दिया था और बस हसते रहने को ही कहा था। शीलादेवी ने तुरन्त अपने आपको सम्भाला और हसने की मुद्रा अख्तियार कर ली। गुस्से के कारण जो होठो की कठोरता थी, उस पर सहसा दरारें पडने लगी थी, पर वह हसती गई। अब रास्ते भर लोग सिर्फ उसे ही देख रहे थे। घर पर पहुची तो सोचने लगी—"किसी दिन सिर के भी आधे बाल मुडा लूगी" कि तभी उसे श्रीमान हीरा लाल के असामयिक आगमन की सूचना मिली। श्रीमती शीलादेवी को काटो तो खून नही। उसे सहसा घूघट के महत्त्व का भान हो आया। हाय, अभी वह सारा मुह छुपा लेती, पर पति से कैसा परदा। अजीब उलझनें उसे नाचन लगी। सहसा उसने दोनो हाथो से आखो को ढाप लिया। श्रीमान हीरालाल ने प्यार से उसके दोनो हाथो को हटाया तो शीलादेवी कराहती हुई बोली—"कल से आखो मे दर्द था, लेडी डाक्टरनी के पास गई तो वह बोली—आखो के ऊपर भार ज्यादा है—इन भौंहो का भार पड रिया है और यह कह कर मेरी आखो मे दवाई डालने की जगह नासपीटी ने एक एक बाल ऐसी बेरहमी से उखाडा कि क्या कहू ?"

श्रीमान हीरालाल शीलादेवी की हरकतो से यो ही वाकिफ थे। वह आय वाय पैसे खर्च करने मे माहिर है। यहा वहा जा जाकर औरो के फैशन देख देखकर वह बिगडती ही जा रही है। उन्होने गुस्से से आगबबूला हो पूछा—"यह मुह काहे ढक रही हो।"

शीलादेवी भी गुस्से मे आ गई। बोली—'मेरा मुह न खुलवाओ वरना अच्छा न होगा"—और उसने पराटकर जो देखा तो गुस्से से सिर का पल्ला खिसक गया।

हीरालाल ने शीलादेवी की बडी बडी आखो पर पतली लकीर नुमा भौंहें खिची देखी तो हैरान रह गए। इससे पहले कि उनकी आखो मे गुस्सा उतरे, शीलादेवी हल्की आवाज़ मे कह रही थी

"आदमी भी अगर भौहें बनवायें तो कित्ता अच्छा होवे। भौहे न बनवाओ तो भौह के बाल माथे के बाल से जा मिलेंगे हा ।"

15

हम एक हमारा टी० वी० एक
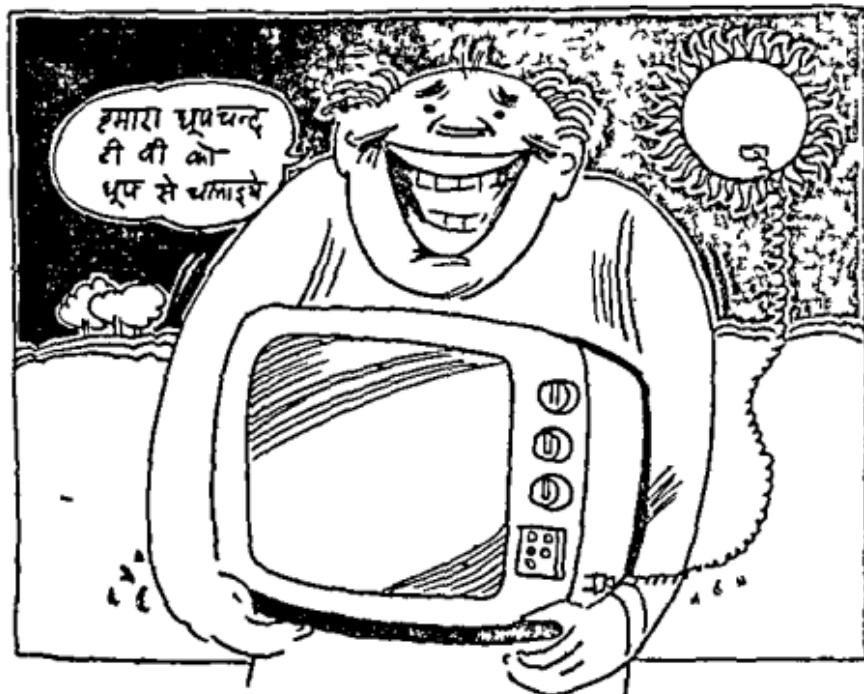
फुनगी को जब से धूपचन्द टेलीविजन कम्पनी वालो ने विज्ञापन का काम सौंपा था, वह फूली न समा रही थी। उसे कम्पनी की ओर से हिदायते देते हुए मैनेजर ने कहा—"कुछ ऐसा लिख दीजिए जिससे चारो ओर इसी टेलीविज़न का नाम हो, चर्चा हो, बच्चे उसी टी०वी० को खरीदने की जिद करें, स्त्रिया इसी टी०वी० को देखने के लिए ही कोपभवन मे जा बैठें और साफ साफ कह दें, यही वर दो। धूपचन्द टी०वी० लाकर दो। ऐसा वर्णन कि हरेक की जबान पर यही चर्चा, यही नाम हो—धूपचन्द टी०वी० लाकर दो जी। लाकर दो।"

फुनगी वहा से चली तो बार-बार मैनेजर के शब्द कानो मे आकर टकराते। लाकर दो जी, लाकर दो। शब्द गूजते ही अर्थ बदलने लगते। अब 'लाकर दो' मे उसे आवाज आई जैसे किसी बैंक मे दो लाकर देने के लिए

विवाद चल रहा हो और फुनगी ने आवाजो को झटककर अपने से अलग कर दिया। नए सिरे से सोचने का सोचा और घर पहुचते ही वह अपने टी०वी० के बिलकुल सामने यो जा बैठी, जैसे उसका सामना कर रही हो

शाम का समय था—अभी टी०वी० शुरू होने मे आधा घण्टा बाकी था, फुनगी ने सामने लगे शीशे की ओर मुह घुमाया तो उसमे टी०वी० नजर यो आया कि उसके मन मे तुलसीदास जी की पक्तिया गूजी—रूप निहारती जानकी कगन के नग की परछाई फुनगी को लगा कुछ भी लिखने से पूव यदि तन मन पूरी तरह उसी चिन्तन मे डूब जाए तो वही चिन्तन साथक होता है, उसी गहरे पानी मे पैठकर ही मानिक मुक्ता निकाले जा सकते हैं अत सबसे पहले घूपचन्द टी०वी० पर एक लेख लिखा जाए। प्रस्ताव से पहले तो प्रस्तावना जरूरी है, अत वह टी०वी० के लाभ हानि की बात सोचते सोचते फिर टी०वी० के सामने आ बैठी उसने विश्लेषण आरम्भ किया तो सबसे पहले अपने रगीन टी०वी० का बुझा बुझा चेहरा देखते ही उसे ध्यान आया वाह, बिना बिजली के तो इसके चेहरे की रोशनी ही गायब है। ज्यो ही बिजली का सम्बन्ध होगा, उसके चेहरे पर रगीनी आ जाएगी। खुशहाली लहराएगी। हरे पीले लाल नीले रग झलमलाएगे। सबध हो तो ऐसे। कनेक्शन मिलते ही हर चीज़ पर प्रकाश पडने लगे। हर चीज में एक रगीनी आ जाए। और फिर घूपचन्द टी०वी० तो धूप से ही चले । आरम्भ म यही लिखना ठीक होगा—" औरो को ज़रूरत होगी बिजली की। हमारे घपचन्द टी०वी० को चलाना है तो धूप से चलाइए यह नन्हा यो चलेगा कि इसके पाव में ठुमकते समय पैजनिया वजेंगी—घर मे दौडता भागता नजर आएगा, आपका चेहरा खिल उठेगा। आप अपने लाडले पर नाज़ करेगी

ऐ, यह लाडला कहा से आया ? ? फुनगी ने स्वय को झकझोरा और कागज कलम लेकर बैठ गई। सामने 'टी०वी०' चला दिया और उसकी आवाज धीमी करके अब वह उसके अग अग का वणन करने ही लगी थी कि सामने एक महिला अग उघाडे बार-बार अपने मित्र के मुह को सिगरेट लगा देती, तभी फुनगी को लगा, वही महिला लम्बी उगलियो से चुटकी बजाती है और सिगरेट मे एक आग सी लग जाती है, इतने ढेर धुए के छल्ले है कि उन्ही धुओ के छल्ले का परिधान उसके अग अग पर नए फैशन, नए डिज़ाइन की पोशाक बनता जा रहा है। फिर सलेटी रग की झालर झलमलाने लगी

और फिर सहसा सब कुछ गायब।

फिर झागदार साबुन का विज्ञापन लिए एक रमणी आ पहुची—आप कौन सा साबुन इस्तेमाल करते है ?

आपसे मतलब ? फुनगी पलटकर जवाब देना चाहती थी, पर हस पडी। सोचने लगी—मैं बताऊ भी तो आप कहा सुनेगी महोदया। आपको तो बस अपनी ही कहने का शौक है। आज हर जगह यही व्याप्त है, जिसे देखो अपनी हाकता जाएगा, और जब किसी और की बारी आएगी तो घडी देखेगा। बगलें झाकेगा और फिर खिसक जाएगा । फुनगी ने सामने विज्ञापन देनेवाली का धुले धुलाये कपडो को पलभर मे साफ कर देने वाला साबुन देखा और सोचने लगी—कपडे धोने के विज्ञापन दिलवाते समय ऐसी स्त्रियो को क्यो चुनते है जिन्होने कभी कपडो को हाथ भी न लगाया हो। काम करने वाली महरी से दिलवायें न, वर्तन माजने और कपडे धोने, फर्श साफ करने वगैरा वाले विज्ञापन। धूपचन्द टी०वी० के विज्ञापन देते समय, अगर कुछ ऐसा हो कि आप जैसा चाहे, वैसा देख पाये। कोई नया बटन लगा दें न। यही सोचकर उसने तावडतोड विज्ञापन लिखना शुरू कर दिया—धूपचन्द टेलीविजन ऐसी धूप से भरपूर कि ज्यो ही आप इसे चलायें, रात के अधेरे मे भी आपका घर धूप से भर जाए। इस धूप की चमकार आपके घर के ग दे पुराने मैले कपडो पर पडेगी तो साबुन की टिकिया का असर करेगी। यही टिकिया टिकुली बनकर कपडो का नया रूप रग निखार देंगी। रूप की धूप बनकर आपके मेकअप का काम करेगी। सामने बैठे व्यक्ति के चेहरे पर ऐसा निखार आएगा, जैसा किसी मेकअप से न आ सका। कपडो के विज्ञापन आप धूपचन्द टी०वी० मे देखिए। हमारे टी०बी० की खूबसूरती यही है—थान के थान कपडो के इसी टी०वी० से निकलते चले जाएगे, आपके घर मे कपडो की बाढ आ जाएगी। आपके रूप के निखार के लिए सारे मेकअप का सामान, नेलपालिशी पजे चमकाने का बेहतरीन नुस्खा होठो की मुस्कान निखारने की लिपस्टिक, आपकी त्यौरिया कितनी ही चढी रहे, उनमे यह लम्बी विन्दी ऐसे सोहेगी, जैसे दो कटी छिपकलियो मे काक्रोच ।" यह सोचते ही फुनगी की जोर से हसी छूट गई। तभी जैसे उसी की हसी नकल करता हुआ एक खिलखिलाता विज्ञापन दिखाई दिया। टी०वी० मे जितने लोग बैठे हैं, सब हसते जा रहे है हा। हा। हा। हा । फुनगी को लगा दीवार हस रही है

पडे-पडे सोफे उछल रहे है सब चीजो मे गति आ रही है, जड चेतन का अन्तर मिट गया है है ? फुनगी विचारो मे खो गई थी।

फुनगी ने फिर देखा —उद्घोषिका मुस्कराने के लिए होठ फैलाने लगी है एक विदूषकनुमा व्यक्ति आकर उसके ओठो की मुस्कान को इचीटेप से मापकर बता रहा है—हल्का सा मुस्कराना हो तो आधा इच होठ खोलिए। ध्यान रहे, आपका कोई दात बाहर न आ रहा हो ।

और हा। खुलकर मुस्कराना हो तो दोनो ओर के होठ फैलाने होगे। होठ ही फैले मुस्कान ही फैले। लिपस्टिक न फैले अत आप ऐसी लिपस्टिक लगाइये जो उमदा कम्पनी की हो। हमारी कम्पनी से उमदा आपको कहा मिलेगा लिपस्टिक लगाइये, उमदा एण्ड सन्ज की लिपस्टिक बेहतरीन होती है

'एण्ड सन्ज ? अरे भई, बहुए लिखते तो बात थी सन्ज यानि पुत्र। आपके पुत्र लिपस्टिक प्रयोग करते ह ?

तभी दृश्य बदला और ढेरो खाने पीने का सामान सामने आ गया था। टी०वी० मे पडी वस्तुए ठीक वैसी लग रही थी, जैसे घर मे ही खाना लगा हो। फुनगी के मुह मे पानी भर आया। जी चाहा, लपककर मटर पुलाव, मटर पनीर हाथ बढाकर उठा ले, खा ले कि तभी अन्य विज्ञापन देने वाली ने हाथ रोकते हुए कहा—अरे रे, पहले हाथ तो धोइए। हाथ धोकर किसी के भी पीछे पडिये तो वह अधिक टिकाऊ रहेगा और इस साबुन मे आप ही क्यो, अपने मेहमानो के भी हाथ धुलवाइए न। इससे ऐसी सुन्दर खुशबू आएगी कि छूटेगी नही। जिस चीज को छुएगे, वही खुशबूदार। खाना सब्जिया, सब मे यही खुशबू आने लगेगी तो आप खाना नही खा सकेंगे— इस खुशबू से उबकाई आती है। ऐं ऐं। करती हुई फुनगी चौंकी। अपने भटके हुए ध्यान को बटोरा, सोचा इतना सब सोचने के बाद भी धूपचन्द टेलीविज़न पर एक पंक्ति नही लिखी। अगर यही एक प्रस्ताव के रूप मे लिखा जाता तो छात्र क्या लिखते,

"यह टेलीविज़न है इसमे आने वाले हर आदमी की आख, कान, नाक, दुम नही, नही, दुम नही होती। दुम तभी होगी जब उसके साथ उसका पुछल्ला कुत्ता होगा—कुत्ता भी ऐसा हो तो वाह!"

सामने टी०वी० पर एक कुत्ता भौंक गया था और वह भली प्रकार भौंक,

सके, इसके लिए उसे एक अच्छी कम्पनी की गला खखारने की गोली दी गई थी—

फुनगी ने सोचा टी०वी० चलता रहा तो ध्यान यहा वहा बटेगा, औरो के विज्ञापन देख देखकर नकल लगाने को जी चाहेगा। नकल हालाकि हमारे खून मे है, हमारे पूर्वजो ने उसे हमे दिया है, लेकिन फिर भी जब कोई नकल लगाते पकडा जाए तो पूवज छुडाने नही आते। उसने उठकर टेलीविजन का स्विच बन्द किया तो ख्यालो के झरने फूटे। उसने बडा सा विज्ञापन लिखना शुरू कर दिया—"सालो साल चले धूप। धूप का निखार देखिए धूपचन्द टलीविजन मे। धूप के साथ यह शक की परछाईं कैसी ? आप टेलीविजन चलायेंगे तो पायेंगे इसे चलाने के लिए आपको इसे अगुलि पकडकर चलाना नही पडता। बन्द करना हो तो भी कोई तामझाम नही। बस बटन दबाइए, बटन घुमाइए। धूपचन्द टी०वी० के बटननुमा यह स्विच भी कितने सुन्दर हैं, जसे किसी षोडशी ने कुर्त्ते पर चादी के बटन टाक दिए हो न किसी धागे की जरूरत न किसी सूत्र की ही। बस सूत्र यही है कि धूपचन्द टेली-विजन बनाने वाले इसमे कुछ ऐसी नई नायाब चीजें दे रहे है कि कुछ ही सालो म यह अलादीन का चिराग बन जाएगा। हर आदमी इसमे मुहमागा प्रोग्राम देख पाएगा। इस टी०वी० की खूबी यह कि इसका बिल आए तो लौटा दीजिए। धूप का बिल नही आता। इसके प्रति ऐसा मोह जगेगा कि आप सारे कामधाम छोडकर इसी के सामने बैठी रहेंगी। इसी को एकटक निहारेंगी। बच्चे स्कूल नही जाना चाहेंगे। दफ्तर जाने वाले लौट लौट कर इस टी०वी० को देखने आएगे। आज के युग मे जब काले गोरे का भेद मिट रहा है, रगीनिया बढ रही है, तो आप उन रगीनियो से क्यो वचित हो। फिर इस टेलीविज़न के पैसे भी तो आसान किस्तो मे चुका सकते हैं आप। छोटी छोटी किस्तें। आप चुक जाए पर किस्तें न चुकें—ऐसी ऐसी किस्ते सिफ हमारी ही कम्पनी दे सकती है, धूपच द टेलीविजन मे आम की सी सम्भाव-नाए। दादा खरीदे पोता उसकी कीमत चुकाए।

फुनगी बस इसी आखिरी पक्ति पर आकर यो अटकी, जैसे किसी रिकार्ड पर सुई बार बार अटक रही हो। वह अगले ही दिन टेलीविज़न कम्पनी के मैनेजर के पास जा पहुची। पल्ला सम्भालते हुए बोली—ऐसी पक्ति लिखी है, जसी आज तक किसी ने न लिखी हो। आज के इस बढती महगाई के

जमाने मे रगीन तो क्या काला टी०वी० भी खरीदते समय हर व्यक्ति सोच मे डूबा रहता है। डूबिए किन्तु डूबते को उबारने के लिए हम हैं यहा आपका भविष्य सुधारने के लिए। घूपचन्द टेलीविजन का भुगतान। बहुत आसान बेहद आसान। छोटी छोटी किस्तो मे अदा करें। अभी आए खरीद करें। धूपचन्द टेलीविजन मे आम के पौधे की सम्भावनाएं हैं। दादा खरीदे, पोता उसकी किस्तें चुकाए।

ऍ! मैनेजर ने सिर पीट लिया। बोला—"आप तो हमारी टेलीविजन कम्पनी का भट्टा बिठा देंगी। यह पोता कौन है वाट पोता? यानि यानि सारे टी०वी० दादा ही खरीदेंगे। दादागिरी से खरीदें और कम्पनी का भट्टा बिठा दें। आखिर आपको यह दादा तक पहुचने की क्या जरूरत है। जो महगाई के कारण टी०वी० खरीदें, न खरीदें की कशमकश मे हैं, जो सोच मे डूबे हैं उन्हें तिनके का सहारा हम नही दे सकते। जहा आप औरों के ही हित की बात सोचती हैं, सोचती रहेंगी वहा हमारे अहित की बात होगी—आप कृपया विज्ञापन दें तो कोई नया सदेश दें। समानता स्वतन्त्रता एकता भी आ जाए और एक ही टी०वी० खरीदिए। घूपचन्द टी०वी०। क्या खूब बिकता है यह बस यही कीजिए, किस्तो का जिक्र मत कीजिए। दादा पोता का बखेडा मत खडा कीजिए बल्कि जोर देकर कहिए, समानता आपका जन्मसिद्ध अधिकार है। औरो के घर मे रगीन टी०वी० आपके घर मे कुछ भी नही। बचत करके एक बार घूपचन्द सैट को घर ले आइए, आप की हर शाम रगीन हो जाएगी, एकता का सन्देश दीजिए। कोशिश कर देखिए अगर आप कुछ भी लिख पाए तो।

फुनगी को जोश आ गया। एकता, समानता, शामे रगीन करने की बातें तो ध्यान ही न आ रही थी।

घर पहुचते ही उसने लिखना शुरू किया तो लिखती चली गई। अनवरत लगातार एकता समानता रगीनियो की बातें। एकता का सूत्र उसके हाथ मे आ लगा था। बार-बार एकता मे बल है, का वाक्य गूज जाता उसने लिखा—

हम कितने ही एकता के पाठ पढाए, एकता नही आ सकती। एकता वही होगी जहा सारे एक होकर एक ही छत के तले बैठकर एक ही टी०वी० देखें'

हम एक, हमारा एक ही टी०वी०। छोटा परिवार हो तो एक ही टी०वी० काफी है, वरना पूरा कुनबा भी एक छत तले, एक ही पखे के नीचे, एक ही कायक्रम, एक ही टी०वी० को देखेंगे, तो एकता का सूत्र और भी मज़बूत होगा। एकता की लाठी से आप सब की भेस हाककर ला सकते है एकता एकता एकता

फिर एकता की हाक लगाते लगाते सहसा पलट कर बोली—हाय कहा है वह आठ कनौजिये नौ चूल्हे की रीत। चूल्हा चाहे एक ही जलाए, घर मे नौ टी०वी० जरूर लावें वह भी धूपचन्द टी०वी०। इसके रूप रग, नाक नक्श ही कुछ और है। इसकी गारण्टी हम दे सकते है इसमे आने वाला हर प्रोग्राम शाक मारेगा लेकिन टी०वी० शाक नही मारेगा ।

शाक प्रूफ ! वाटर प्रूफ। हा वाटर प्रूफ का उदाहरण ढूढने के लिए उसने फिर अपना टी०वी० चलाया। टी०वी० मे पानी का समन्दर ठाठे मार रहा था—लेकिन मजाल है एक बूद भी पानी बाहर टपका हो या

वह गदगद हो गई रस से सराबोर होकर अब वह धूपचन्द टेलीविजन के कार्यालय की ओर बढ रही थी।

16
कुत्ते के साथ आत्मचिंतन

यो तो मैं कुत्तो को मुह लगाने के पक्ष मे नही हू लेकिन जब आत्मचिंतन व आत्मदर्शन की बात आती है तो लगता है चिंतन के क्षणो को सिर्फ कुत्तो के साथ ही काटा जा सकता है। यही वह प्राणी है जो आपके पीछे पड जाय तो आप बडी से बडी बाधा दौड कूदते फलागते पार कर डालें। मीलो की यात्रा दौडते-दौडते कर लें। एक छलाग मे ही आप साधनावस्था से सिद्धावस्था पर पहुच जाये। सच कहू तो कुत्ता इतना कुत्ता भी नही होता कि उसे पूरा कुत्ता कहा जाये। उससे कही बडे और दिग्गज कुत्ते तो हमारे अपने बीच होते है जिनका काटा पानी भी न माग पाये। किन्तु कुत्ता सिद्धान्तवादी है। प्रथम चरण मे वह भौककर अपना आक्रोश जताता है द्वितीय चरण मे वह झपटता है और तीसरे चौथे चरण मे ही जाकर कही वह पूरी तरह से कुत्ता हो पाता है (क्योकि कुत्ते के चार चरण होते है और मनुष्य के दो)

जब से मैंने कुत्ता पाला है मेरी कुत्तो के प्रति धारणायें बदल गई है । यह तो गाढे का साथी, आडे का साथी है । उसकी खोजपूर्ण आखो मे जो गम्भीरता है वह अन्य प्राणियो मे कहा (आपको यकीन न हो तो उससे आखे चार करके देख लीजिए । जब वह हडडी की तलाश मे निकलता है तो भाड भखाडो मे से भी वह हडिडया ढूढ लाता है—तब लगता है वह हड्डी नही अनमोल ज्ञान की मणि है जिसे प्राप्त करने मे वह इतना तत्पर हो उठता है कि उसे और कोई सुधबुध ही नही रहती । वह बार बार मिथ्या झाड झखाड को अपने चार पाव से लताड कर अपना अभीष्ट (हडडी) प्राप्त कर लेता है । चिन्तन व आत्मदर्शन के लिए यही आदश स्थिति है । ध्यान केन्द्रित मन केन्द्रित । अपने लक्ष्य को प्राप्त करने की इच्छा उत्कट होते ही हम बडी से बडी बाधा दौड को ऐसे पार करते है जैसे हमारे पीछे कोई पागल कुत्ता छोड दिया गया है । हम बेतहाशा भागते ही चले चले जाते हैं । उसका भौकना हमारे पाँव मे बिजली की सी गति प्रदान करता है ।

कुत्ता भी मनुष्यो की तरह मात्र भौंकने का व्रत लेकर पैदा हुआ और उसी व्रत को निष्ठा से निभाता है । भौंकना है ! जिस पर वह झपटता है उससे वह चोरी का माल नही छीनता सिर्फ उसे ही बोटी बोटी कर देने का दृढ निश्चय उसका एक मात्र निणय रहता है । कुछेक लोगो पर वह यो ही झपटता है । हमारी तरह वह काटनेवालो की सूची वाा बनाकर किसे काटने मे प्राथमिकता दी जाये आदि का सिरदर्द भी मोल नही लेता । सच कहे तो वह स्थितियो को सूघ-सूघ कर औरो की नब्ज पहचानकर मात्र भौकता ही है, काटने की स्थिति तो चरमावस्था की प्राप्ति है और फिर जो उसे टुकडा डालकर उसे समझौते का हाथ बढाये उसके सामने वह फिर गऊ सरीखा सीधा बनकर दुम हिलाने लगता है, सारा वैर भाव भूल जाता है । हाय मानव जाति मे दिनोदिन वैरभाव की दीवारें खडी की जा रही हैं । इस देश का क्या होगा । यह दीवारे भी ऐसे ऐसे कमचारी क्यो नही बनाते जिनकी बनी हुई दीवारें जरा सी आधी पानी बरसात मे ढह जाती है । समूची मानवजाति के प्रति चिन्तित हो उठने की स्थिति केवल कुत्ते के साथ घूमते समय ही ध्यान आती है ।

या कुत्ते को गौर से निहारिये तो उसकी जीभ लटकी लटकी रहती है लेकिन फिर भी वह लार नही टपकाता मुह खुला रहता है दात नजर आते

हैं किन्तु वह हसता नही। औरो का मजाक उडाने की प्रवृत्ति उसे छू भी नही पाई। लगता है वह कह रहा है—

सम्बन्धो के मोह पर दात गढाना व्यथ है। कुत्ते की तरह अकेले जिन्दगी काटिए।

भौकने के लिए न मच जरूरी है न माईक। न कोई भीड न तालिया। सन्देशो के पर्चे बाटने की भी जरूरत नही। इश्तहारो के तले रेत और सीमेंट के मिले जुले कारनामो पर पर्दा डालने की भी आवश्यकता नही। आपको तो सिर्फ अपनी ही बात कहनी है। अत यह मत सोचिए सुनने वाला कौन है पात्र सुपात्र है अथवा नही। आपका स देश तत्ते जल की नाई उनके कानो मे कुछेक पुराने फोडे उभार कर उन्हे आपकी बात सुनने पर मजबूर करेगा।

एक जमाना था जब पात्र सुपात्र अपने गुण ज्ञान और कर्म से पहचाना जाता था। आज ऐसी बात नही। दिनों दिन वैरभाव की दीवारें खडी की जा रही हैं लेकिन इन्हे ढहाने के लिए कोई भी तत्पर नही हो रहा। बाहरी वैरभाव समाप्त होता है तो मन मे पर्त दर पर्त इकट्ठा हो जाता है।

आजकल तो आदमी की पहचान ही उसके कुत्ते और कुत्ते की नस्ल देख कर की जाती है। अत कुत्ते की ब्रीड देखिए आत्मचिंतन कीजिए। उससे साक्षात्कार कीजिए कही आपको पाकर उसका अकेलापन और अधिक तो नही बढ गया। कुत्तो की भी एक अपनी एक शैली है, भौंकने का एक अलग ही तरीका है। बिल्ली की तरह दबे पाव बढकर वह अपने शिकार पर नहीं झपटता बल्कि उसे भौंक-भौक कर ठीक वैसे ही सूचना देता है जैसे गलत रास्ते पर जाने वाले बच्चे को मा-बाप चेतावनी देते रहते है। कुत्ता बार बार कहता है "मुझसे बचकर रहो वरना मै काट बैठूगा।" किसी को काटने या गला काटने से पूर्व कितने लोग है जो घण्टो भौकते हो, दूसरे पक्ष क व्यक्ति को तक देते हो और उसे बार-बार भाग जाने को कहते हो।

वसे कुत्तो के मामलो मे प्राय यह लगता है कि मनुष्य को काटना उसे हमेशा महगा ही पडा। प्राय वही पागल हुआ और ऐसी स्थिति मे पहुचने से पूर्व यदि किसी को आत्मचिंतन के कुछेक क्षण प्राप्त हो जाए तो वह भाग्यशाली है। हम तो इनसे भी गये बीते हैं जो ऐसे चिंतन से भी वचित है। कुत्ते की बागडोर थामे हुए यानि उसे चराने के लिए ले जाते समय

यही चिन्तन बार बार काटता है और कुत्ते के पीछे बेतहाशा भागना पडता है।

किन्तु कुछ हाथ नही लगता। कुत्तो से सावधान के बोर्ड लटकाने से क्या लाभ ! लाख सावधानी बरतने पर भी जब कोई काट डाले, बोटी-बोटी कर दे तो किसे दोष दे। लेकिन फिर भी कुत्तो के साथ लगातार रहने से उसके प्रभाव का पानी चिकने घडो पर भी ठहर सकता है। वह दिन दूर नही जब लिफाफा देखकर मजमून भापने वाले लोग आपके कुत्ते की हरकतो से ही आपके मन की बात जान जाएगे और तब आप लाख भौके आपकी बात सुनने वाला कोई न होगा।

17

आखिरी स्वयवर

प्रिय पाठको ! मैं आज आपको एक कहानी सुना रही हू । इस कहानी के मुख्य पात्र है राजा धर्मवीर प्रसाद नारायण सिंह और उनकी एकमात्र इकलौती कन्या नीलम प्रभा । राजा साहब अपने टूटे हुए एन्टीक कहे जाने वाले फर्नीचर से भरे ड्राइग रूम मे बैठकर हुक्का गुडगुडाते है और आज से पद्रह बीस वरस पहले पहुच जाते है। उन्हें ध्यान ही नही रहता कि राजा महाराजाओ के दिन लद चुके हैं । वह तो स्लीपिंग ब्यूटी की कथा की तरह लगता है साते हुए मे अभी जाते है और उन्हे विश्वास ही नही आता कि समय बदल चुका है। वे स्वय को बदल नही सकते । आज भी वह शुद्ध केसर कस्तूरी तेल की मालिश करते है और अपने शरीर को बारीकी से निहारते हैं । बाथरूम मे टब मे बैठकर आध घण्ट तक उसके सूराख को बन्द करने मे लगाते है जिससे पानी बार बार बाहर निकल पडता है । बहुत बार उन्होने इसी बात पर

अपने नौकर रामू को ढेर सी गालिया दी हैं लेकिन बेचारा रामू करे भी तो क्या। बीस पच्चीस साल पहले का टब अमेरिकी बाजार मे तो बेचा जा सकता है, लेकिन भारतीय बाजार मे इसकी मरम्मत भी नही हो सकती। राजा साहब को कौन समझाए—'हे भग्नावशेष किले के शेष-स्तम्भ! इस टब को यदि एण्टीक बाजार मे बेच दो तो इतना पैसा आ जाएगा कि नया टब ही नही सारे ड्राइग रूम का नक्शा बदल जाए।' पर राजा साहब घर के सामने खडी टूटी पचर आस्टीन कार की तरह सभी चीजो को समझे बैठे हैं। उनका दिमाग सातवें आसमान मे चीखता है या नशे मे धुत, किसी मस्जिद मे बैठे जिन्दगी का कलाम पढते नजर आते है। राजा साहब की इन आदतो और बेहूदगियो का शिकार यदि कोई है तो उनकी इकलौती बेटी नीलमप्रभा।

स्कूल से कालिज तक राजा साहब ने उसे हवा नही लगने दी। अर्थ यह हुआ कि एक नौकर हमेशा साथ आता जाता रहा। वह नीलमप्रभा का आठो पहर का चौकीदार, स्कूल मे भी बाहर बैठे रहता और छुट्टी का घण्टा बजते ही, उसे वापिस लेकर घर आ जाता। नीलमप्रभा ने आधुनिक छपी हुई साडिया तो पहनी है लेकिन बाईस तेईस साल की उम्र के बावजूद उसे पता नही, वह सब कहा मिलती है। बाजार गई भी, तो रौबदार मूछो वाले पापा की आखें उसे घूरती रही कि कही वह इधर उधर तो नही देख रही। ठीक ऐसे ही नीलमप्रभा की मा महारानी साहिबा कडी नजरो के तले नजरबद रही। मजाल है जो कभी बिना घूघट डाले वह ड्राइगरूम मे आ पहुची हो। नीलमप्रभा पुराने राजशाही परदो के झीने हुए तारो से अक्सर ताकती रही कि पापा चिकने चुपडे खूबसूरत लौडो से किस तरह बाते करते है। उस लडके की आखें भी परदे की तरफ होती है पर पापा इस सबसे बेखबर, मजे से, रियाया पर किये गये अपने जुल्मो-सितम के किस्से बखानते है या फिर शिकार की कहानिया गढकर सुनाते हैं। नीलमप्रभा जानती है कि ड्राइगरूम मे जितने सीग लगे हैं, वह रियासत के सरदारो ने भेंट किये थे। राजा साहब से कभी एक गीदड भी नही मारा गया, क्योकि दिन उनका अपने चमचो की बातचीत मे गुजरता था, रोज रात शराब के प्याले के साथ पुतरियो के नाच मे। फिर जाने कब आधी रात हो गई और किसने किस तरह पापा को

उठाकर आलीशान विस्तर पर सुलाया—न पापा जानते हैं न नीलमप्रभा जानती है।

अब राजा साहब धर्मवीर प्रसाद नारायण सिंह स्वय बीते हुए जमाने के टूटे फर्नीचर की तरह बचे हुए है, लेकिन कहते है साप का सिर कुचल दिया जाता है पर उसकी ऐंठ नही जाती। राजा धर्मवीर प्रसाद नारायण सिंह की ऐंठ अभी बरकरार है और उसे बनाए रखने के लिए वह रोज अपनी मूछो को एक छटाक तेल पिलाते है ताकि वह चमकती रहें और मीधी रहें।

किस्सा यो शुरू होता है कि राजा साहब को सनक सवार हुई कि अपना रौब फिर एक बार गालिब किया जाए। तो उन्होंने घोषणा की कि वे अपनी इकलौती प्यारी बेटी का विवाह ठीक प्रचलित परम्पराओ के माध्यम से ही करेंगे यानी स्वयवर रचाएगे। स्वयवर ! नीलमप्रभा की सहेली ने एक बार पूछा था कि नीलमप्रभा मुह बाए रह गई थी और पूछ रही थी स्वयवर क्या होता है ? तब उसे किताबों के पन्ने लौटाने पडे थे, फिर उसने राजा जनक, राजा नल तक के दरबार के स्वयवर के वणन रुचि से पढे थे। बहुत ढूढने, पूछने पर भी उसे इस बात का पता न चल पाया कि आखिरी स्वयवर किसने रचाया था। एक दिन जब वह किसी सहेली से पूछ रही थी तो पापा ने सुन लिया था और रौबदार आवाज मे कहा था—

'इतिहास गवाह रहेगा कि आखिरी स्वयवर महाराजाधिराज धर्मवीर प्रसाद नारायण सिंह ने रचाया था।'

लिहाजा पडितो को बुलाया गया। शुभ घडी तिथि निकाली गई। तय हुआ कि बैसाख सुदी पूर्णिमा दिन रविवार, समय आठ बजे रात, नगर के एकमात्र सभागृह रवीन्द्र भवन मे भूतपूर्व महाराजाधिराज धर्मवीर प्रसाद नारायण सिंह की एकमात्र पुत्री नीलम प्रभा का स्वयवर होगा।

पहले मुनादी होती थी, घोडे छोडे जाते थे। एक राज्य से दूसरे मे सदेश भेजा जाता था। राजा साहब ने अब बदले हुए कुछेक प्रतिमानो को स्वीकार किया, यानी अखबारो मे बडा बडा विज्ञापन दिया। आकाशवाणी से घोषणा करवाई। दूरदशन केन्द्र से विशेष रूप से स्वयवर का विज्ञापन जनता को दिखाया गया।

स्वयवर की शाम थी। पूरा रवीन्द्र भवन सजा हुआ था। आने वाले प्रत्याशियो के लिए कीमती जडाऊ कुर्सिया रखी गईं। मच पर राजा साहब

बैठे। सामने जड़ाऊ कुर्सियो पर दर्जन भर छोकरे बैठे देखकर उनका दिल धक से रह गया। कुछ हिप्पीकट मे, कुछ जीन्स मे, कुछ लडकियो की तरह, कुछ शिखण्डी, तो कुछ ठेठ अंग्रेजो के समय के भारतीय अफसर की तरह। एक को देखकर तो उन्हे याद हो आया कि जब उनकी रियासत कोर्ट आफ वाड्ज मे चली गई तो कोर्ट आफ वार्डज मे नियुक्त अफसर और कोई नही यही आदमी था। कुछ तहसीलदार की तरह बैठे छोकरो को देख उन्हे थोडी आशा भी बधी थी। उसकी मूछें देखकर उनकी प्रसन्नता का ठिकाना नही रहा था। तभी उनकी नजर जीन्स पहने आदमी पर जा पडी जो उन्हे इम्पोर्टेड चिम्पैंजी की तरह लग रहा था।

स्वयवर देखने के लिए जिलाधीश, ससद सदस्य, समाज सेवी, डाक्टर, लेखक, इजीनियर अखबार प्रतिनिधि कैमरामैन, रिकार्डिंग मशीन हाजिर थी। अध्यक्ष पद भी बन गया और केन्द्रीय शासन के उपमन्त्री ने अध्यक्ष पद का भार भी सभाल लिया।

पिछले जमाने मे चारण भाट आया करते थे जो राजकुमारो का लम्बा-चौडा परिचय दिया करते थे। परिचय के लम्बे चौडे प्रसग कटजाने के कारण अब इन तथाकथित राजकुमारो के साथ कोई भाट चारण तो था ही नही, उनके तथाकथित राजा पिता भी दशको मे लुके छिपे से बैठे थे, क्योकि वे अपने बेटो की हरकतो से पूरी तरह वाकिफ थे और उनके मन मे डर था तो सिफ यही कि उनकी कोई पहचान का निकल आया तो पोल खुल जाएगी।

स्वयवर की रस्म शुरू होने लगी। तय हुआ कि हर प्रत्याशी को अपना परिचय आकर माइक पर देना होगा। राजा साहब ने सामने कुर्सियो पर फिर घूर कर देखा तो कुछेक कन्याए दृष्टिगत हुई। वे हडबडा कर बोले—यह क्या तमाशा है। स्वयवर मे लडकिया क्यो आई हैं ? रामू ने उनके कान म कहा—'महाराज, यह युग नारी पुरुष की समानता का युग है, विशेषकर पोशाक और बालो के बारे मे। अत यह लडकियो की तरह दिखाई देने वाले लोग पुरुष हैं, आप आश्वस्त रहें।'

इधर अध्यक्ष महोदय ने राजा साहब को इस तरह त्रस्त देखा तो माइक पर बोल उठे—'हमारा निवेदन है कि सामने की कुर्सियो पर केवल प्रत्याशी ही बठें, स्वयवर मे भाग लेने वाली महिलाए मच पर आ जाए तथा अपनी-अपनी माला सभाल लें।'

अध्यक्ष की बात सुनते ही लोगो ने ठहाका लगाया। बैठी हुई महिलाओं मे खलबली मच गई। अध्यक्ष महोदय को सहसा अपनी गलती का एहसास हुआ। इससे पहले कि सभी खिन्न क्षुब्ध, त्रस्त महिलाओ मे मच भर जाए, उन्होंने खडे होकर भूल सुधार की, क्षमा याचना की तथा पडित कथावाचक सियाराम पडित को कार्य समारम्भ करने का सकेत किया। सियाराम पडित ने स्वस्ति वाचन किया। कन्या को आशीर्वाद देते हुए वेदमन्त्रोच्चार के द्वारा कन्या तथा उसके भावी पति के दीर्घायु होने की कामना की।

तत्पश्चात् राजा साहब स्वय माइक के पास आए तथा अपने भाषण म उन्होंने इस स्वयवर का खास मकसद बताते हुए कहा—

'नारी कितने महिला वर्ष मनाए, आखिर उसे रहना तो पुरुष की बाहो मे ही है। सही औरत वही है जो घर के परदों पर अपनी बीती भूली जिंदगी के अक्स देखती है। क्योकि हमारे शास्त्रो मे कहा गया है जो कन्या एक बार पति के घर जाती है, उसकी फिर वहा से लाश ही निकलती है। इसीलिए महिला वष के जितने उद्घोप हो, जितनी अधिकारो के लिए दुहाई मचाई जाए, उसकी मुक्ति पुरुष के हाथो मे ही है इसके अलावा कही नही।'

जो मुक्त हुई, बाजारो मे देखी गई। भटकती हुई पाई गई। गुमराह की गई। मुझे एक किस्सा याद आ रहा है। रोज बहारे मजलिस सजती थी। एक खूबसूरत कलि नाचती गाती और फिर न्योछावर हो जाती थी। आज की बहारे मजलिस भी कि तभी उन्हे राघू ने वस्तुस्थिति का ध्यान दिलाते हुए कहा, 'महाराज, आप बहक रहे हैं—बहारे मजलिस नही, बेटी का स्वयवर है।'

राजा साहब ने तुरन्त स्थिति सभाली और बोले— लेकिन आज बहारे मजलिस नही सजी। आज स्वयवर है। इतिहास के आखिरी राजा की पहली और आखिरी बेटी का आखिरी स्वयवर है।'

और तब उन्होने अपनी लाडली के गुणो का बखान करते हुए आखिर मे कहा, 'और मैं यह भी स्पष्ट कर दू कि आज तक मैंने अपनी बेटी को जिस जतन से रखा है, उसे, ले जाने वाले को भी उसी जतन से रखना होगा।'

(तभी सभा मे किसी ने फिकरा कसा—'कन्या के लिए वर चुना जाएगा कि पिता—?')

राजा साहब ने भाषण जारी रखा। वे बोले—'मैंने अपनी बेटी को बाहर

की हवा तक नही लगने दी। अत मैं स्पष्ट कर दू कि इसका जिससे विवाह होगा वही इसका पहला और अन्तिम प्रेमी होगा। मेरी बेटी को जरा भी कष्ट हुआ। किसी ने जरा भी कष्ट पहुचाया तो मैं उसकी जान ले लूगा। राजपाट तो पहले ही नही रहा। इस जेल की जगह, सरकारी जेल मे समय काट लूगा, पर उसे छोड़ूगा नही।'

धमकी सुनकर मनचले नौजवान, जो स्वयवर की सौगात सजाए बैठे थे, काप उठे। भाषण के बाद राजा साहब फिर बोले, 'अब मैं अध्यक्ष महोदय से कहूगा कि वह स्वयवर का उद्घाटन करें ?'

कोई दूसरा होता तो सोच मे पड जाता। पापा ने शब्द का प्रयोग कितने खतरनाक ढग से किया था (उदघाटन यहा हुआ तो स्वयवर की जरुरत ही कहा रहेगी।)

पर मन्त्री महोदय ने समय नही लिया। शान्त भाव से वह माइक के सामने आए। आते ही उन्होने स्वभावानुसार आदरणीय राजा साहब, बहनो, भाइयो, कह कर कथन शुरू किया। वह बोले—

'आज का दिन पुनीत परम्परा का स्मरण दिलाता है जब एक कन्या अपने जीवन साथी का चुनाव पिता की उपस्थिति मे, अपनी पसन्दगी से करती थी—उन आदमियो से, जिन्हे उनके पिता ने बुलाया (मन्त्री की जगह यदि कोई लेखक होता तो 'किराए पर बुलाया' कहता) फिर उन्होने राजा का गुणगान किया, प्रशस्ति गाई। दोस्ती के किस्से सुनाए और साथ ही यह भी बताया कि वह मन्त्री महोदय राजा के यहा नौकरी कर चुके है। और उन्हे खुशी है कि वह अपनी पुरानी वफादारी निभा रहे है। फिर उन्होने नीलम प्रभा के बारे मे बताते हुए यह भी कह दिया कि उसे तब से जानते है, जब वह अभी निरी बच्ची थी, कितनी शैतान थी—कहते-कहते वह भावुक होने लगे और बोले आज उसी के स्वयवर की वेला मे मेरा गला भर्रा रहा है मेरा आशीर्वाद है इसे जो भी वर मिले वह इसके साथ सुखी रह सके। वर के प्रति सहानुभूति के साथ—आगामी जीवन की शुभकामनाए देते-देते मन्त्री महोदय बैठ गए।

अन्तत सारे दर्शक बेसब्री से जिस घडी का इन्तजार कर रहे थे, वह घडी आई और सजी धजी नीलमप्रभा हाथ मे सुगन्धित चन्दन की छाल की खादी भण्डार से खरीदी वरमाला लिए, पण्डाल की ओर बढी। उसके गले

मे नौलखा हार था, हाथो मे सोने की ढेरो चूडिया। कमर मे भारी तगडी और पाव मे पाजेब थी। फूलो से शृगार किए हुए वह लजाती-सकुचाती आगे बढ रही थी। सखियो ने उसे घेर रखा था ताकि जहा आख उठाने की जरूरत होगी, वहा वह सब प्रत्याशी को पूरी तरह से देख-दाख लेंगी। नीलम प्रभा पहली कुर्सी की तरफ बढी और वहा रुक गई। उसे यो देखकर जो नजरें अब तक कन्या की ओर थी, वह अब वर की ओर लग गईं।

पहला बालक हिप्पी कट जीन्स पहने सिगरेट के गोल छल्ले कन्या की रूप राशि पर फूकता हुआ उठा और माइक के पास जा पहुचा। महाराजाधिराज के तेवर देखने लायक थे 'लौंडा हमारे सामने सिगरेट पीता है, यह राजसी ठाठ की तौहीन है।' पर राजा धर्मवीर प्रसाद नारायण सिंह दात पीस कर रह गए। बालक अपना परिचय देता चला जा रहा था—'हा, तो मैं एम० एल० ए० पिता की इकलौती सन्तान हू। वह छ महीने मे रिटायर हो जाएगे। हा, तो हम इसी साल बी० ए० की परीक्षा मे बैठे हैं। एज़ यू नो अग्रेजी मनोविज्ञान हमारा विषय रहा और हमारी इन विषयो के प्रति दिल चस्पी बनी रही तो हम यह परीक्षा एक बार नही कई बार देंगे। एज़ यू नो ।'

अभी उसने इतना ही कहा था कि दूसरे पॉसिबल वर ने आवाज़ लगाई—'लड़की के बाल काटने के कारण तेरा रेस्टीकेशन भी तो हो चुका था। अब यह साहब बी० ए० पास नही कर सकते ?'

'अबे क्या कहा '

दूसरा लडका ताल ठोककर खडा हो गया और बोला—'याद नही, जनता पब्लिक स्कूल मे तो तेरा रेस्टीकेशन हुआ था। उन दिनो तेरे पिता ने तहसीलदार के आगे कितनी बार नाक रगडी थी तब कही जाकर तुझे तीन साल बाद परीक्षा मे बैठने दिया गया। फर्स्ट इयर मे तीन बार फेल हुआ, सेकेण्ड इयर मे ।'

'अबे मेरी भाजी क्यो मार रहा है ?'

इस गरमागरमी पर अध्यक्ष महोदय माइक पर चिल्लाए—'भाइयो, एक दूसरे पर कटाक्ष न करो। जिसे जो कहना है माइक पर आकर कहे।'

तभी दर्शको मे से एक ने आवाज़ लगाई—'लेकिन यदि बगुला भगत अपने सफेद कपडो की तारीफ, जीनियस बनने के लिए करने लगे तो रोक

लगनी चाहिए।' एक और आवाज़ आई—'झूठ बोलकर बेचारी कन्या को चक्कर मे डालना नही चलेगा। स्वयवर है मजाक नही।' थोडी देर तक शोर होता रहा। राजा धर्मवीर प्रसाद नारायण सिंह खडे हुए और बोले—'स्वयवर मेरी लडकी का है या तुम लोगो का। यहा कोई बदतमीज़ी बर्दाश्त नही होगी। और जैसा मन्त्री जी कहे वैसा ही होगा।'

लडकी फूल माला लिए हुए खडी थी। लोगो मे असीम उत्साह था। राजाधिराज को रह-रहकर उत्तेजना होने लगती थी। नीलमप्रभा बेंत की तरह लचीली खडी थी और बार-बार हैरत से देखती। आखिर यह सब तमाशा क्या है।

खैर, जीन्स बालक अपना परिचय दे न सके। कन्या वरमाला समेट कर आगे बढ गई।

दूसरे पॉसिबल वर ने कन्या को अपनी कुर्सी के पास रुका हुआ देखकर बडी फुर्ती दिखाई और लपक कर माइक पर जा पहुचा और बोला—आपने कवि रगारग की यह मशहूर पक्तिया तो सुनी ही होगी—

हाथो मे वरमाला उठाये हुए
कन्या ने कहा शरमाए हुए—
'आपसे मेरा व्याह तो हो सकता है
यदि पहले यह बता दें मुझे
(कितना फड कितनी ग्रेच्युटी है—
—और) आपका बीमा कितने का है?

लोगो ने ज़ोर से तालिया पीटी। वह महोदय तालिया सुनकर और जोश मे आ गए—एक और कवि ने लिखा है कि

————अर्ज़ है
प्यार है या कोई मर्ज़ है—
मेरा बुखार देखो—मेरी दवा करो
बेहोश हो रहा हू, बैठो हवा करो
मुझे ढूढने की खातिर हर इक को ताक कर
बेपर्दा होके मुझको मत फिर खफा करो

शायर महोदय की दशा, दर्शको का बात बात पर तालिया पीटना देखकर

राजाधिराज ने सिर पीट लिया। वह वही खडे होकर चिल्लाए—'बन्द करो यह सब।'

ऐं! मन्त्री महोदय भी जैसे नींद से जागे थे। उन्होंने भी कहा—'बद करो यह सब।'

'हा' तो मैं कह रहा था मैं कवि हू, दर्शको को सामने देखते ही कविता कहने का लोभ आ गया। हा तो मैं कवि हू। मैंने फिल्मी गीत, इल्मी गीत, घडे-बडे लोगो की कविताओ से मसाला इकट्ठा किया – नारे ले-लेकर नये गीत बनाए और भगवान झूठ न बुलवाए—ऐसी फडकती चीज लिख दी है कि क्या कहू—मुझे अपनी इस प्रतिभा का ज्ञान ही न था कि अपनी ओर से बिना एक भी पक्ति जोडे हुए मैं अपने आपको कवि घोषित कर सकूगा। खैर मैं महाराजाधिराज महोदय को यह स्पष्ट कर दू कि मैं हर बात, हर स्थिति, हर चीज पर एक पल मे कविता बना सकता हू। यह तुक्के रेडीमेड गार्मेंटस की तरह मेरे पास हमेशा तैयार रहते हैं। अत उनकी कन्या को कभी कोई कमी महसूस नही होगी— उनकी कन्या कविता है, कविता—कहने सुनने का मौका एक आपसी मौका ही होता है और इस पर अर्ज किया है—

कुर्सी वाले तेरे दस्तूर निराले
अब अर्जी हमारी मजूर कर ले
मेरी अर्जी मे लिखी है अज पिता
मेरी अर्ज मे लिखी है मज पिता
म्हारी मर्ज तो मजूर कर ले

लोगो ने तालिया पीटी। वन्स मोर की आवाजो ने राजाधिराज धर्मवीर प्रमाद नारायण सिह के कान खडे कर दिए। उन्ह लगा कि लोग स्वयवर के लिए भी वन्स मोर की आवाजें कसनी शुरू कर देंगे। वे अपनी सीट से उठे कि तभी कवि महोदय अपना राग बन्द कर अपनी सीट की तरफ इस शान मे बढे जैसे वरमाला उन्ही के गले मे पडेगी। लेकिन नीलमप्रभा वरमाला समेट कर आगे बढ गई।

तीसरा पासिबल वर उठा और हीरो की तरह कमर लचकाते, गदन मटकाते सीटी बजाते हुए माइक के पास पहुचा—'मैं फिल्म प्राड्यूसर हू।'

लोगो ने तालिया पीटीं। नीलमप्रभा 'ओह ओह' कहकर जोर से तालियां पीटने लगी। वरमाला नीचे गिर गई तो उसकी सखी ने झटपट वरमाला

उसके हाथ मे थमा दी और वह सब उसे वही छोड-छाडकर माइक के पास जा पहुचा—'जी, मैं फिल्म प्रोडयूसर, यानी उनका असिस्टेंट हू। राजेश खन्ना, देवानन्द, अभिताभ बच्चन—मेरे पीछे चक्कर काटते है। हेमा मालिनी, ज़ीनत अमान वगैरह कान्ट्रेक्ट के लिए विनती करती, हाथ जोडती गिड-गिडाती हैं, लेकिन आज तक मैंने इन लोगो को किसी फिल्म के लिए साइन नही किया।'

नीलमप्रभा की आखें फटी रह गईं।

फिल्मी छोकरिया मेरे पीछे चक्कर काटती है। प्रोड्यूसर का असिस्टेंट होना कोई माखौल नही।'

'और मै कह रहा था मैंने इन्हे साइन नही किया, यानी इसे हम यू भी कह सकते हैं कि मैं इनके आगे गिडगिडाता, चक्कर काटता रहा, इन्होने आटोग्राफ तक नही दिए—साइन तक नही किया।'

'नानसेन्स!' महाराजाधिराज खडे हो गए। चिल्लाए—'हमे ऐसे वर की ज़रूरत नही।'

तथाकथित असिस्टेंट प्रोड्यूसर बोल उठा—महाराजाधिराज को मैं याद दिला दू—स्वयवर उनका नही, उनकी सुपुत्री नीलमप्रभा का है। नम्बर दो यह—कि इन्होने इस समय जो डायलाग बोला है—यह डायलाग गलत है। ऐसे समय मे हमारी फिल्मो के पिता हृदय रोग ग्रस्त हो जाते हैं यानी इच्छा-नुसार हम किसी का हार्टफेल, किसी की सीरियस हालत आदि दिखाकर स्वयवर से कन्या का अपहरण भी करवा देते है—

'मुझे याद है जब ज़ीनत अमान के साथ मुझे एक्सट्रा रोल मिला था तो

'शट अप।' मन्त्री महोदय बोले। महाराजाधिराज चिल्लाए—लेकिन प्रोड्यूसर महोदय कहते गए

'मैं अभी मात्र छोटा-सा असिस्टेंट हू, लेकिन आपका धन मिलने पर मैं भी प्रोड्यूसर बनकर बडे बडे अभिनेताओ, अभिनेत्रियो को चक्कर कटा सकता हू। मुझे आपकी पुत्री से भी अधिक आपमे, आपके धन मे दिलचस्पी है।

'और हा—मैं आपकी कन्या को सभी फिल्म तारिकाओ से मिलवाने का प्रबन्ध करूगा। इनकी उनके साथ फोटो खिचवा दूगा और इस दौरान मे '

'इनकी पहचान उनके कुत्तो की नस्ल और कुत्ते काटे के इलाज से भा हो जाएगी। क्यो ?'—महाराजाधिराज को इतना नजदीक पाकर उसे लगा उनका हाथ माइक से (उसकी गर्दन) पर आ जाएगा। अत वह घबडा कर वहा से नीचे उतरा तो दशको मे ही कही गुम हो गया।

नीलमप्रभा खोई-खोई आखो से फिल्म प्रोड्यूसर को ढूढ रही थी।

चौथा पासिबल वर, मसूरी मे आई ए एस की ट्रेनिग लेने वाला लौंडा था। बड़े सयत भाव से मच की ओर बढा—भाइयो, बहनो, कह कर कुछ हिचका और फिर बोला—'भाइयो, तथा एक को छोडकर बाकी बची हुई बहनो—

आपको यह जानकर खुशी होगी कि मैं आई ए एस की ट्रेनिग कर रहा हू। वहा का मौसम आजकल काफी अच्छा है। मौसम से भी ज्यादा अच्छे हैं कुछ लोग। खासकर यहा के क्लास फोर कर्मचारी जो हरेक की मदद करते हैं—रूपम पास और अन्य जगहो से लौटने मे हम जानबूझ कर देर से आते तो वह हमेशा हमारी रक्षा, हमारे सबूत सफाई पेश करने मे हाथ बटाता रहा। यहा पर आकर हमने मिल जुलकर रहने की भावना, प्यार की भावना सीखी है। प्यार का तो मुझे पिछले तीन-चार साल मे अनुभव भी है, लेकिन शादी का कोई सुनाने लायक अनुभव नही हो पाया। इसीलिए सोचा है—यह अनुभव भी काम आएगे। मेरे विचार से ऐसा अनुभवी कडिडेट यहा एक भी नही है।' महाराजाधिराज को अपनी सीट से उठकर माइक की ओर लपकते देखा तो वह चिल्लाया, 'अगर आज मुझे माला न मिली तो मैं आपको देख लूगा, इसी जगह कलेक्टर बनकर आऊगा और आपको बन्द करवा दूगा और और' कहते-कहते गिरते सभलते, वह वहा से नीचे उतरा और तेजी से वाक आउट कर गया। मन्त्री महोदय ने उन्हे समझाया भी—कि वह एक खादी भडार से माला खरीद कर उसके घर भिजवा दे। उसने मात्र माला के लिए ही कहा है—परन्तु महाराजाधिराज न माने।

अब जो पासिबल वर खडा हो रहा था, वह किसी क्षेत्र से हारा हुआ नेता टाइप व्यक्ति था। आते ही माइक पकडा और चिल्लाना शुरू कर दिया—'भाइयो, मैं विश्वास दिलाता हू कि मैं कन्या के लिए जगह-जगह कुए खुदवा दूगा, खाईं खुदवा दूगा। उसके (बीमार रहने के लिए) अस्पताल बनवा दूगा जहा वह अपनी सखियो के साथ रहेगी। पिता के घर तक पहुचने के लिए

सडकें बनवा दूगा ताकि महाराजाधिराज की कन्या आम रास्ते से न जाए—उनके घर तक एक लम्बी सुरग खुदवा दूगा ताकि माल की हेरा फेरी मे राजा साहब को दिक्कत न हो। कन्या के पितृ क्षेत्र तथा मेरे क्षेत्र मे आयोजित इस चुनाव सस्थान को यह आडम्बर क्यो बनाया। स्वयवर क्यो रचाया। इतने सब की क्या जरूरत थी। कन्या का वोट गुप्त रहना चाहिए था। वोट प्रेम की तरह होता है गुप्त रहता है। वोट दिल है जिसे देते समय हमे प्रत्येक को नाप-तौल जाच परख करनी पडती है। इस सबके लिए स्वयवर क्यो भाइयो। मेरे चुनाव क्षेत्र से खडे होने वाले इतने ढेर सारे व्यक्ति यहा क्यो बैठे हैं ? क्या मैं जान सकता हू ?

मन्त्री महोदय उठे। सात्वना स्वर मे बोले—कुछ दिन रामायण का पाठ कीजिए। आपकी मानसिक स्थिति इन दिनो अच्छी नही रही।

वह जाते-जाते भी बक रहे थे—वोट लेने के लिए दिल जीतना जरूरी है। दिल जीतने के लिए भाषण देने पडते हैं और भाइयो, मुझे भाषण देने से मना किया जा रहा है—मुझे बताओ, मैं

महाराजाधिराज को आगे बढते देख वह बेचारे मच से उतरे तो आखें चढी थी, चेहरा भी उतर गया था—अपने ही चेहरे का यह असामजस्य उन्हें समझ नही आ रहा था।

अगले पाणिग्रहण वर को देखकर महाराजाधिराज की आखो मे गुस्सा उतरने लगा। माइक पर पहुचते ही उसने कहा—'जब मैंने स्वयवर का विज्ञापन देखा तो सोचा, यह सब क्या कह रहे हैं। जो स्वय को वर समझते हैं, वह चले आए। और इन सब को देख-देखकर हैरत होती है—स्वय वर बन-बन कर आ बैठे हैं, गले मे माला डालने वाली कन्या टुकुर-टुकुर देख रही है। राजाधिराज को विज्ञापन देने के लिए शायद ठीक लोग नही मिले वरना इसके लिए—आज के बढते युग मे बहुत अच्छा विज्ञापन दिया जा सकता था।—जरूरत है एक वर की। वर श्रेष्ठ प्रवर। यह पुरुष या स्त्री कोई भी हो सकता है। नही, नही इसके लिए पुरुष होना आवश्यक है। आवश्यक ही नही अत्यावश्यक है पुरुष के लक्षण—दाढी, मूछ, बढे या छोटे बाल। बाल कर्ज मे जकडे हो या जैसे भी। अधिक शरमाता न हो। लडकियो को देखकर पसीने न छूटते हो, चूडिया न पहनता हो, गर्दन लम्बी लचीली मजबूत जो वरमाला का भार सभाल सके। नौकरी, आय, आयु का कोई बन्धन नही।

कम उम्र के दो, अधिक उम्र का एक ।'

महाराजाधिराज का जी चाहा कि इस विज्ञापनदाता का सिर फोड दें। वह गुस्से से कापते हुए अपनी सीट से उठे। नथुनों से फुकारते समय उनकी मूछें ऊपर-नीचे होती साफ दिखाई देने लगी। आखो से चिंगारिया बरस रही थी। विज्ञापनकर्ता ने भाषण मे अब राजाधिराज की प्रशसा का पुट जोडना आरम्भ कर दिया—"खैर यह सब तो विज्ञापन की बात है—राजाधिराज श्री धर्मवीर प्रसाद नारायण सिंह का यह स्वयवर, यह चकाचौंध और इतिहास के पृष्ठो मे स्वर्ण अक्षरो से लिखा जाने वाला यह अजूबा चमत्कार अपनी सानी नही रखता।"

राजाधिराज तनिक ठिठक कर पीछे को लौटे। उनके नौकर रामू न उनको पकडकर पुन सिंहासन पर आसीन किया। विज्ञापनकर्ता तनिक फुर्ती दिखाने लगे, 'हा, तो मैं कह रहा था कि राजाधिराज का सारा राज्य फुक गया, उनका हृदय सुलग रहा है। सुलगाने के लिए दम मारने के लिए बेहतरीन बीडी नम्बर तीन सौ तैंतीस—स्वयवर मे आए भाई-बहनो से अनुरोध है—दिल फुके या जले, आप हमारी बीडी नम्बर तीन सौ तैंतीस मुह म लगाइए—आपकी भीतरी जलन से सुलग उठेगी, हृदय का गुब्बार धुआ बन-बन कर बाहर " विज्ञापनकर्ता डबल स्पीड पर चालू हो गया था। रामू ने उसे उसी गति से मच से नीचे धकेला तो भी वह औधे मुह पडा बकता रहा—बीडी नम्बर तीन सौ तैंतीस के निर्माता धुआ कम्पनी के मशहूर डायरेक्टर श्री पतूमल मसालादास बिश्नोई एण्ड सन्ज।

धूल झाडते हुए—नीचे खडे हुए भी उसने बोलना न छोडा, 'स्वयवर के बाद पूरी जानकारी के लिए मुझसे मिल।'

नीलमप्रभा का दिल छलनी छलनी होने लगा। हैरान थी जब यहा धनुष तक नही तो इतनी परेशानी क्यो खडी की जा रही है। वरमाला उठाये हुए उसके कोमल हाथ थकने लगे थे और जी चाहता था उसे हवा मे उछाल दे जिस किसी के गले में पडे, उसे पति स्वीकार करके इस सारे आडम्बर से छुटकारा पा ले।

कि तभी हडबडाया हुआ पडित खडा हुआ और बोला—'महाराजाधिराज विवाह का मुहूत टल गया—भाषणो मे शुभ घडी बीत गई है। अब इसके बाद पूरे छ मास तक विवाह नही होगे तारा डूब रहा है '

ऐ। ऐं। ऐ।

सबकी आखें खुली रह गईं। महाराजाधिराज अपनी कुर्सी पर निढाल हो गए। केन्द्रीय मन्त्री उनके पास पहुचे। इधर मच खाली पाकर एक दो व्यक्ति माइक के पास आ पहुचे

भाइयो स्वयवर के लिए अगले स्वयवरो के लिए आपको यदि भाषण लिखवाने हो तो इस 'कम्बख्त राम हाजिर जवाब' को कान्टेक्ट करें। भाषण अभी से लिखवा लें वरना अगली बार रेट बढे हुए होगे।

उधर विज्ञापनकर्ता ने सभी दशको को बीडी के पर्चे बाटने शुरू कर दिए।

कवि महोदय ने अब माइक खाली देखा तो लपक कर बढा और चिल्लाया—

स्वयवर से तो नही इन्कार मुझे
तुझे चुनना है मेरी सरकार मुझे
मुझे चुन ले तो तेरी किस्मत बने
तेरी बिगडी बने, मेरी बिगडी बने
इतना कहना है मेरी सरकार मुझे

मच पर यह सब देखकर केन्द्रीय मन्त्री शीघ्रता से आए और बोले—'भाइयो हम सब अभारी है महाराजाधिराज के कि उन्होने हमे स्वयवर मे बुलाया और अपने-अपने बारे मे कुछ कहने का मौका दिया। आशा है—वह ऐसे मौके देते रहेगे—महफिलें सजी रहेगी—स्वयवर होते रहेगे। मैं आप सबका धन्यवाद करता हू।' —यह कहकर मन्त्री जी राजा जी को भीतर लिवा ले गए कि तभी नीलम प्रभा मच पर आ गईं बोली, 'स्वयवर के लोगो से मेरा अनुरोध है, नम्र निवेदन भी कि वे मुझे समय-समय पर मिलते रहेगे और इसे मेरा आखिरी स्वयवर न समझेंगे।"

18

उसका भाषण

नवेली का पति जब से मन्त्री बना, उसके पैंतरे बदल गये। अचानक ही वह भी महान हो गयी थी। महिला सभाओं की अध्यक्षता हो या पाठशालाओं के उद्घाटन समारोह हों, किसी की पुण्य तिथि हो या जयन्ती, लोग नवेली को बुलाने आ जाते। मन्त्री शकालु जी बाहर दौरे पर रहते थे, कई काम नवेली ही निपटा लेती थी, लेकिन पढ़ी लिखी न थी, भाषण देने का शौक बचपन से ही था। अब तक उसने पति को सैकड़ों भाषण दे दिये थे, लेकिन आम सभाओं में भाषण देने का मौका न मिला था। शकालु जी को पहले ही शंका थी कि अब नवेली नये गुल खिलाना शुरू कर देगी, इसलिए

उन्होंने अपने सेक्रेटरी की पत्नी महामाया जी को समझा बुझा कर नवेली को पढाने तथा यदि कही आना जाना पड तो साथ जाने की ताकीद की। महामाया ही नवेली के सारे निमन्त्रण अस्वीकार कर देती थी, लेकिन अब महिलाओ ने महामाया की जगह नवेली से सीधे सीधे बात कर ली और उन्हे झडा फहराने के लिए पाठशाला मे बुलवा लिया। उन्होने अपने नये स्कूल की ईंट रखवाने का कार्यक्रम भी रख दिया था। नवेली नई साडी पहने माग मे सिंदूर भरे हुए पूरे जोर शोर से झडा फहराने निकल पडी। तभी मन मे ध्यान आया, आज तक कभी झडा नही फहराया, क्या पता वहा न फहरे फिर अपना फहराता साडी का आचल देखकर उसकी खुशी का ठिकाना न रहा, फहराने का अभ्यास तो साडी के पल्ले से ही हो जाता है। यही सोचकर उसने फिर साडी की ओर देखा उसे साडी से आचल तक के सारे गीत स्मरण हो आये आचल किसी झाडी मे अटका नही कि जैसे रिकार्ड की सुई लग गई, छाड दो आचल से लेकर लम्बी हाक लगाई जाने लगी और घडी घडी दिल धडकने के गीत, कान के कुडल मे लटक गये। आचल छुडाने को हाथ बढाया तो एक काटा हाथ मे चुभ गया, उह काटा चुभने पर खून की लाल बूद अगुली पर उभर आई। पर उसने उस उगली को अगूठे से दबा दिया, जैसे कोई उभरती बात दफना रही हो और मुस्कराते हुए आगे बढी। महामाया जी हर बात पर उन्हे ताकीद कर देती। भाषण देने का गुर समझाती। आत्मविश्वास का पहला सबक नवेली ने घर मे ही सीख लिया था। पिता ने समझाया था 'तन कर खडे हो जाओ, जो बात कहनी है, ठोक पीट कर कहो और उसे स्थापित कर दो। जनता को मूर्ख समझो, तभी मच पर खडे रह सकती हो।' अत नवेली ने इस दिशा मे अनेक बार अभ्यास किया था। घर मे भी जब वह किसी विषय पर बोलने लगती तो पति को जनता मान कर बोलती, किसी की एक न सुनती। आज फिर वही मौका था। फिर पाठशाला मे जाना, झडा फहराना, भाषण देना आदि तो उसके बाये हाथ का खेल था, यही सोचकर उसने बायें हाथ से पर्स दाये हाथ मे कर लिया था और महामाया के साथ आगे बढती गयी। स्वागत समारोह मे उसे पता था, हार ही गले पडेगे अत उसने इस हार के आगे सिर झुका दिया। अब झडा फहराने के लिए खडी हुई तो ध्यान आया, अगर झण्डे की गाठ न खुली तो कितनी इज्जत खराब हो जायेगी। पर्स मे वह हमेशा एकाध ब्लेड रखती थी। उसने चुपके से

उगलियो मे ब्लेड छुपा लिया । आगे वढी, फटाक से धागे पर उगलियो म छुपे ब्लेड से वार किया और गाठ खुलने से पहले ही झण्डे के ज़रा से भाग स फूल झरने लगे । नवेली ने अब बन्धे हुए झण्डे की ज़ोर से रस्सी खीची तो वही हुआ, जिसका डर था । झडा न खुल पाया । एक छात्र ने तब आकर झडा खोल दिया और राष्ट्रगान आरम्भ हो गया । अब महामाया ने नवेली को भाषण देने के लिए कह दिया । नवेली ने कागज का टुकडा हाथ मे उठाया । बढने ही वाली थी कि प्रिंसिपल महोदया ने भाषण शुरू किया । स्कूल का परिचय दिया और बोली, "यहा बच्चो को जूते वर्दिया बाटनी हैं, एक एक करके छात्राए आयेंगी और आपके कर कमलो से लेती जायेंगी ।" तालिया बजी । छात्राए आ रही थीं । जूते वर्दी बटने लगे थे—थोडी ही देर मे सब खाली हो गया, लेकिन साथ ही नवेली के हाथ से भाषण लिखी पर्ची छूट गयी और जाने कहा गुम हो गयी । पर्ची क्या छूटी, लगा लगडे से लाठी छूट गिरी है । अपग की बैसाखी गिर गयी है—यही तिनके का सहारा लेकर ही उसके भीतर विश्वास की लहरें ठाठें मार रही थी । महामाया ने यह स्थिति देखी तो बोली,"घबरायें नही । कुछ पाठशाला की तारीफ, जूते वर्दी की तारीफ, आजकल की पढाई, अध्यापको आदि पर बोल दें । पाठशाला से फिर राष्ट्र पर उतर जायें । झडा फहराता रहे आदि दो चार वाक्य कहकर भाषण खत्म कर दें ।"

"नही, पहले राष्ट्र की बात होगी, फिर बाकी बातें " और यह कहती हुई नवेली माइक की ओर बढ गयी ।

' बहनो आज के शुभ दिन पर आपने मुझे झडा फहराने का मौका दिया, यह आपके सौभाग्य की बात है । झडा देश का सौभाग्य चिह्न है, हमे उन चिह्नो पर चलना है ।

जब यह झडा फहराता है, मन भी लहरा उठता है, हालाकि लहराता मन नजर नही आता, लेकिन उसमे भी एक गाठ लगी होती है, जिसे अगर खोल दें, बशर्ते कि गाठ ठीक बन्धी हो ।

"हा, तो मैं आज बेहद खुश हू क्योकि आज यह मौका मिला । मैं जानती थी, आज आप सब को जूतिया मिलेंगी मेरे पति शकालु प्रसाद को भी कई बार बडी बडी सभाओ मे यह मिली हैं । मेरे कर कमलो से जूतिया बटी, पर याद रहे यह जूतिया कर कमलो के लिए नही, पैर कमलो के लिए हैं । कमल जूते नही पहनता, तभी तो कीचड सना रहता है । आपके पाव पर कीचड न

लगे, आप कीचड न उछालें—यह इस दिशा की ओर एक प्रयास है

"आपके स्कूल की शानदार विल्डिग देखकर मुझे गरीबो की टूटी फूटी झोपडियो का ध्यान हो आता है—क्या यह शानदार विल्डिगे झोपडी मे नही वदल सकती, क्या यहा मेरे गरीब भाई रहने नही आ सकते ? क्या ? क्या? क्या ?

"अभी मुझे आपकी दूसरी पाठशाला की ईंटें रखने जाना है। मैं ऐसी शानदार ईंटे रखने की सोच रही हू, जिससे वहा की ईंट से ईंट वज उठेगी।

"वैसे मुझे एक वात समझ नही आती। जव ईंटें बजती है तो इनके साथ कोई धुन, कोई गीत क्यो नही वनाया जा सकता—मैं सगीत विशारदो से कहूगी, इस बाजे के साथ नई धुन बनायें ताकि देश को कुछ नया मिले।

"आज पाठ्यक्रम बदल रहा है। न वदलता तो भी इतना ही मुश्किल रहता—आप और हम अगर आज आठवी कक्षा की परीक्षा मे बैठे तो पास न हो सकें ।

"खैर, मैं वधाई देती हू। आशा है आप समय-समय पर मुझे बुलाते रहेगे, बल्कि आपको चाहिए, अपने समारोहो के उद्घाटनो का आप मुझे स्थायी उद्घाटक वना लें। मुझे अव अभ्यास हो गया है किसी भी कार्य के लिए, अभ्यास और अनुभव ही योग्यता का प्रमाण वन जाते हैं। फिर आप इन्हे प्रमाण-पत्र के रूप मे छपवाते फिरें। यो नकली-जाली प्रमाण-पत्र बढते जा रहे हैं, लेकिन प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या आइए चलें, अब हमे एक नये भवन की ईंट रखनी है वल्कि मैं तो कहूगी, केवल मैं ही ईंट क्यो रखू, यहा की दो हजार छात्राए सौ अध्यापक गण मिल कर चलें। दो-दो चार-चार ईंटें हाथ मे ले लें। हम समानता के अधिकार मे विश्वास रखते हैं। अत आइए, सव मिल कर ईंटें रखें। एक ऐसे देश का निर्माण करें, जहा न कोई बडा हो, न छोटा, न खरा, हो न खोटा। खरा खोटा तो असल मे सिक्का होता है। अपना सिक्का जमाना है तो धाक का सिक्का जमाइए जिसमे चित भी मेरी, पट भी मेरी । यह सिक्का वह सिक्का नही, जिसे उछाल कर पारी तय की जाय वैसे अगर टैस्ट मैच मे "

महामाया तेजी से उठ कर आगे बढी, दबे स्वर मे बोली, 'आप बहक रही हैं यहा झडा फहराया गया है '

"हा, हा, तो आइए, हम इसी झडे के नीचे इकटठे हो जाए ईसी की

छाया मे बढें, पलें, पनपें, यह वह बरगद है जिसकी छाया मे मा की शीतलता है, आचल की छाया का सुख है, लेकिन आजकल की माताए भी जाने क्या होती जा रही हैं, न कोई ढग से लोरी सुना कर बच्चे को सुलाती है, न हृदय से लगाकर प्यार देती है, अपने फैशन मे मस्त मग्न। पाउडर लिपस्टिक और और " कहते कहते नवेली सहसा अपनी लिपस्टिक ढूढने लगी। उसे लगा था हरेक शब्द के साथ लिपस्टिक के रग छूट गये होंगे।

प्रिंसिपल ने तभी आगे बढकर धन्यवाद दे दिया था क्योकि वह जानती थी कि यदि नवेली जी को पस मे से लिपस्टिक मिल गयी तो वे छात्राओ को लिपस्टिक न लगाने से लिपस्टिक लगाने तक की पूरी यात्रा का ब्यौरा दे देंगी। महामाया ने नवेली जी को कहा—"अभी आपको दूसरी मीटिंग म जाना है, अत जल्दी करें

तभी एक लडकी आकर एक पर्ची दे गई। नवेली को लगा भाषण वाली पर्ची दे गयी है। उसकी हालत वह थी जैसे परीक्षा देते वक्त वह बहुत सी बाते लिखना भूल गयी हो, उसे फिर मौका मिल गया हो। वह फिर से माइक की ओर बढी और अब असली भाषण शुरू होने लगा था। नवेली ने पर्चे को उलट पलट कर फिर देखा। एक छात्रा पन्द्रह अगस्त का प्रस्ताव आकर दे गयी थी। प्रस्ताव पर बडा सा लिखा था, 'पहले घर जाकर अपने भाषण का रट्टा लगायें, ताकि अगली बार फिर आपको बुलाया जा सके।'

नवेली उलटे पाव लौट आयी थी। पर्चा फाड कर फेंक दिया था। महामाया साथ साथ चल रही थी कि तभी उसने धीमे से पूछा—

"पर्चा फाड क्या दिया ?"

नवेली मुस्कराते हुए बोली, "उस पर्चे पर असल मे प्रिंसिपल महोदया ने लिख कर भेजा था, स्कूल के लिए चदा अवश्य देकर जाइए। हमने वह पुर्जा इसीलिए वही फाड कर फेंक दिया था। हम बताना चाहते थे कि चदा पूरे देश का है। स्कूलो के लिए कोई अलग चदा नही—जो सिर्फ स्कूल के आकाश पर चमके "

महामाया ने यह सुना तो सिर पीट लिया। फिर नवेली के साथ कार म जा बैठी। नवेली ने पस से शीशा निकाल कर अपना चदा सा मुह निहारा। फिर अपनी फीकी लिपस्टिक गाढा करके अगले कार्यक्रमो के बारे मे सोचने लगी।

19
सिर दर्द पुराण

सिर दर्द की कहानी उसी दिन शुरू हुई जिस दिन आदम को ईव और मनु को श्रद्धा मिली। सर्वविदित है कि हर महापुरुष को बनाने मे किसी न किसी स्त्री ने योगदान दिया। इसी तरह हर सत्यवान के सिरदर्द के पीछे भी एक न एक सावित्री का हाथ रहता है। यह बात और है कि आज के युग मे सिरदर्द जानलेवा नही रहा और एक साधारण-सी वस्तु हो गया है। विज्ञापनो सिरदर्द, सबघो का सिरदर्द, महगाई का सिरदर्द। सारे दर्द एक सिरदर्द बनकर रोजमर्रा की जिन्दगी चाट रहे है और धीरे-धीरे रेंगते रहते हैं। रेंगने मे विनम्रता का स्वर होता है। चाटने मे खुशामदी चटखारा। लेकिन सिरदर्द के साथ जुड़ते ही दोनो शब्द अपना अर्थ ऐसे खो बैठे है जैसे चलते-चलते किसी ने जेब काट ली हो।

खैर! तो सही सिरदर्द पैदा करने के लिए वैज्ञानिको की स्त्रियो को ही

श्रेय दिया जाना चाहिए । उनका सिरदर्द ऐसा सिरदद बना कि बेचारे प्रयोग और परीक्षणो पर उतर आए होंगे । वैसे सुना तो यह गया है कि वज्ञानिक अपने प्रयोग के लिए चूहे, खरगोश और बन्दरो को श्रेयस्कर समझते रहे । लेकिन चूहो मे सिरदर्द पैदा करके उन्हे गोली खिलाकर दद की तरगें पैदा करना तथा दर्द गायब होने के परीक्षण करना सभव नही रहा होगा। बदर-बदरिया या खरगोशो के पारस्परिक सबधो पर प्रश्न चिह्न लगाकर भी कोई वैज्ञानिक सही निष्कर्ष पर नही पहुच सकता। कहते हैं कि सिरदद की टिकिया की ईजाद करने वाले की दृष्टि मे भी कोलम्बस की ही खोज भरी ललक थी।

उसने सही सिरदद पैदा करने के लिए सही मावित्री की खोज मे काफी उम्र भाख मारी और जब तथाकथित सावित्री ने उसके जीवन को सिरदद बना डाला तो यह परीक्षण करने प्रयोगशाला मे जा बैठा । वहा पहुच कर कुछ देर अकेले बैठने के कारण सिरदद अपने आप गायब होने लगा तो वह चिंतित हो उठा। पत्नी को कही से पुन फोन किया । पत्नी भी रत्नावली तथा कालिदास की प्रिय पत्नी के वश की ही थी । उसने फोन पर वह खरी खोटी सुनाई कि पुन सिरदर्द की शिकायत शुरू हुई। लेकिन यह सिरदद कुछ ही देर मे फिर गायब हो जाता था। हारकर वह परीक्षण और प्रयोग के यत्न घर मे ले गया। पत्नी का चीखना-चिल्लाना, झपटना एक लगातार का क्रम बन गया। उसने तब परीक्षण किया । घर मे घूमनेवाले चूहे, पाले हुए कुत्ते सब पर परीक्षण किए ' दर्द की तरगें अब उनके सिर के भाग से उठती थी ।

वैज्ञानिक की खुशी का ठिकाना न रहा । उसने देखा विशेष द्रव उनकी शिराओ मे ज्यो ही पहुचता है, चूहे उछल-कूद करने लगते हैं, कुत्ता फिर से भौंकना शुरू कर देता है। अत उसने सिरदर्द का इलाज खोजा और गहरे पानी बैठकर दर्द की टिकिया ढूढ निकाली। वैज्ञानिको की सभा मे जब उसने अपने अनुभव बताए तो एक वरिष्ठ वैज्ञानिक ने समझाया कि इस सिरदर्द का सबसे बडा कारण जो भी हो, उसे मूल से मिटाने की चेष्टा करनी होगी। कारण ही हर अनर्थ पैदा करता है । फिर उसकी जडें निकल आती हैं । प्रत्युत्तर मे वैज्ञानिक बगलें झाकते हुए बोला, 'कारण तो स्त्री थी लेकिन स्त्री को कैसे मिटा सकते हैं, वह तो स्वय पुरुष को मिटा सकती है । उसने

क्तिने तख्त पलट दिए, कितने ताज के बादशाहो को मोहताज कर दिया। आपको यह सोचना चाहिए सर। कारण होगा तो कार्य होगा, कार्य होगा तो खोज होगी और यही खोज ही हमारी उपलब्धि है।' तभी वैज्ञानिक को स्मरण हो आया अब तक घर न लौटने के कारण उसकी खोज भी शुरू हो गई होगी। वह अपनी सारी खोजबीन के पुराण, वैज्ञानिको की सभा मे वैसे ही छोड कर चलता बना। जानता था कि जो स्त्री हर बार नया सिरदर्द पैदा कर सकती है, वह नई खोज की प्रेरणा भी तो देती है।

20

उनकी श्रीमती जी

कहते हैं पति के उच्च पद पर पहुचते ही श्रीमती सौभाग्यवती का भाग्य ऐसे जमा जैसे किसी उम्दा कपनी की शू-पालिश से जूतो मे चमक आती है और शीश बनकर आत्मदर्शन करवाती है। पति उन्हे पहली बार पाच सितारा होटल मे ले गये। खुद तो वे चापलूसी के क्षेत्र मे पुराने खिलाडी थे और हरेक बडे होटल मे टुकडे तोड चुके थे। हा तो होटल मे उन्होंने श्रीमती को समझाया कोई ऐसी वैसी हरकत न करना। कुछ जरूरत हो तो घटी बजाना वैरा आ जायेगा। श्रीमती घबरा कर बोली घटी तो वही घर मे छूट गई, झुनझुना ही ले आती, प्रिय यदि मै पहले से जान जाती कि यहा आकर

मुझे घंटिया बजानी है।

श्रीमान जी हसकर बोले प्रिय तू बहुत भोली है देखो मैं बैल बजाता हू बैरे को बुलाता हू। और तब बैरे को बुलाकर उन्होने कहा मेमसाहब को कोई चीज़ ज़रूरत हो ला देना। सारी पेमेन्ट हम कर देंगे। बैरा चला गया और श्रीमान भी मीटिंग मे चल दिये।

श्रीमती की बाछें खिल गईं। उसने घटी दबाई बैरा एकदम हाज़िर। घटी वाह ! वाह !! यह तो अलादीन का चिराग है। बोतल से जिन निकल कर आता है और सारी इच्छायें पूरी कर जाता है। श्रीमती ने चाय मगाई, बिस्कुट नमकीन पकौडे और तदूरी मुर्गा भी मगवा लिया और रानी बनकर बैठ गई, दो पल मे ही सारी चीज़े सामने थी। और कुछ मेमसाहब ! बैरे ने पूछा ?

'मेमसाहब' सुनते ही श्रीमती पर अग्रेजी का भूत सिर पर सवार होकर बोलने लगा और वह उसे थैंक्यू थैंक्यू कह कह कर धन्य धन्य होने लगी।

श्रीमान जी को पूरा सूट मिला था यानी एक ओर को बिठाने का कमरा बाहर भी था पति के आने से पहले श्रीमती ने चाय की ट्रे मे पडी सारी चीनी पुडिया बनाकर रख ली। टोस्ट मक्खन के साथ आये जैम को प्लास्टिक के लिफाफे मे पलटकर अल्मारी मे बिछे अखबार के कागज तले छिपा दिया। उसका जी चाहा बैरे से पाच किलो बढिया देसी साबुन और देसी घी मगवा लें क्योंकि श्रीमान जी को जिस ऊचे पद पर सीढी लगाकर चढाया गया है वहा से उनकी सीढी खिसकाई भी जा सकती है। यानी कोई भी नौबत कभी भी आ सकती है।

तभी श्रीमान जी आये, पत्नी के चेहरे पर मुस्कराहट देखकर उनकी खुशी का ठिकाना न रहा। अगले दिन वे फिर सुबह सवेरे चलते बने। तब तक श्रीमती ने एयर बैग मे बढिया किस्म के चम्मच समेट लिये थे, कमरे मे पडे गिलास उठा लिये थे लेकिन यह क्या ? पति महोदय उलटे पाव लौट आये। सारा शरीर खुजाने लगे। कोट पटक दिया और हाय तौबा मचा दी क्या हुआ कहकर जब उसने पति के कोट पर चीटियो की बारात देखी तो उसका माथा ठनका। हा उसने गलती से जैम की एक पुडिया पति की जेब मे रात को डाल दी थी ताकि जहा कही जायें जेब मे कुछ मीठा पडा रहे इससे हर काम सिद्ध होगा।

श्रीमती एक एक चीटी को उनके शरीर पर चिपके हुए देखकर भगा रही

थी। उसने तो सुन रखा था जितना गुड डालोगे उतना मीठा होगा आज पता चला जितना मीठा होगा उतनी चीटिया भी बढती जायेंगी और चिपको आन्दोलन चलायेंगी।

श्रीमान जी कमरे मे भागते फिरने लगे तो पाव से एयर बैग टकराया। चम्मचो के साथ गिलास खनक उठे। उनका भी माथा ठनका और बोले "तुम यहा एक दिन मे ही नाक कटाने पर उतारू हो गई हो। ऐसे करो बोरिया बिस्तर समेटो और लौट चलो।"

श्रीमती ने पति की आज्ञानुसार सामने बडे पलग पर लगा मखमली बिस्तर समेटने के लिए हाथ बढाया ही था कि श्रीमान जी ने बढकर अपनी भोली श्रीमती का हाथ थाम लिया, फेरे लगाने लगे और समझाने लगे तो वह भी हाथ झटक कर बोली मुझे मूख मत समझो। तुम तो पहले से ही यहा आकर गुलछर्रे उडाते रहे और मुझे घर की चार दीवारी मे बद करके रखा। साफ कहे देती हू अब घर जाऊ गी तो ऐसे ही रहूगी बैरे खानसामे ही रोटिया पकायेंगे, हा।

आखिर जब मरद इतना अच्छा काम कर लेते हैं तो खाली औरतें ही चक्की क्यो पीसती रहें ! तुम्हे ऊचा ओहदा मिले या कुछ भी। मेरे लिये तुम हमेशा वही रहोगे और सुबह सवेरे मुझे चाय दोगे। श्रीमती मे यो जागृति आते देखकर श्रीमान जी की आखें खुली की खुली रह गईं। सोचने लगे यह तो नई मुसीबत मोल ले ली। हाय इसका भारतीय कन्या का वह सती साध्वी का रूप सिफ पीतल पर चढा सोने का मुलम्मा था, उतरने लगा। वे अपना काम आधा छोडकर वहा से कूच कर गये।

कहा जाता है श्रीमती उनके हाथ की ही चाय पीती है उन्ही के हाथो का बना खाना उसे खास पसन्द है। अत जब भी उसके मन का मुर्गा कुकडू कू की टेर लगाता है मुर्गा प्लेट मे सजा हुआ सामने आता है। तिरिया हठ की मशाल को ऊचा बनाये रखने के लिये श्रीमती ने ऊचे पद पर, पहुचे हुए पति को भी ऐसा पाठ पढाया है कि जब वे एकाध दिन कही दौरे पर जाते हैं तो श्रीमती उनके विरह मे तडपती है भूखो मरती है तारे गिनती है पर ओर कोई भाड नही भोकती। उसका कहना है आखे खोलने का यह नुस्खा हर कोई ऐसे प्रयोग करे कि सबकी आखे खुली रह जायें।

21

साहित्य में मिठाई वर्णन

जब जब साहित्य मे मुस्कराहट की मिठाई का वर्णन आया तो प्रतीत हुआ कि लोग मुस्कराहट से नही मिठाई से ही प्रभावित हुए होंगे। इसीलिए उह मुस्कराते दोनो होठ मिठाई के 'दोनो' की तरह प्रतीत हुए होगे। उनके अवचेतन मन मे कोई ऊची दुकान अवश्य रही होगी। और अगूर खट्टे है की तरह फीके पकवान की उन्होंने घोषणा की होगी।

यह रूप सौन्दर्य की अनुकृति है, किसी मूल कृति का यह अनुवाद है। सच कह तो साहित्य भी मिठाई वर्णन के बिना फीका बेस्वाद है।

हे मेजबान। मेहरबान। कही देखे आपने साहित्य की दुकानो मे मिठाइया के लजीज लच्छेदार वर्णन, उपमान ! कोई साहित्यकार हलवाई न हुआ। कोई हलवाई साहित्यकार न बन सका।

चद्रमुखी के रसगुल्ले जैसे गोल मुह को देखकर उसके मन मे फूटे तो लड्डू, उस प्रसाद का वणन न कर सका। मन मोदक खा खाकर भूख मिटाये। किन्तु वणन के समय मन के दलदल मे रह रहकर बस कमल ही खिल पाये। खाने खरीदने वालो का हाल हमेशा खस्ता ही रहा हो तो वे खस्ता चीजें खरीदने और कहा जाते।

हाय ! बेचारे मन को मार कर यो न बैठ जाते। अपनी अपनी हाक कर ही चुप हो जाते।

किसी ने उनका जरा मुह मीठा करा दिया तो साहित्यकार भावो मे बहने लगे और बेसिर पैर की कहने लगे।

ऐसे मे औरो के मुह का जायका बिगाडने वाले पर कोई भी बिगड जायेगा और सहृदय व्यक्ति के मन मस्तिष्क का हुलिया टाइट करने को हाथ बढायेगा।

अत हे ! केवल वणन को ही महत्व दे। अक्ल के दुश्मन वणन के पीछे लट्ठ लेकर घूमते है। लट्ठ यानि लाठी की महिमा से वे पूणतया अवगत

है क्योकि इसी के बल पर वे औरो की भैंस अपने खूटे पर बाध सकते हैं।

मिठाई के ऊचे भाव। वाह क्या कहने ऐसे ऊचे भावो तक आपकी कल्पना भी पहुचते पहुचते लडखडा जाती है। ऐसी ऊची चीजो के सिर्फ रूप गुण की प्रशसा ही की जाती है।

हरेक मिठाई का अपना ही दर्शन है। अपनी ही शैली है अपना ही वर्णन। कुछ लोग इसे वर्णन का विषय ही बना कर ठडी सास लेते हैं। सच कहू तो ऐसे वर्णन कर्ता ही वे मूसरचद हैं जो न खुद खाते हैं न औरो को खाने देते हैं।

मिठाइयो के यो बढते भाव देख देखकर मन मे यह ध्यान आये। ऐसा न हो आने वाली पीढिया मिठाइयो के नाम ही भूल जाय।

कोई आर्किटैक्ट बैठ कर जलेबियो के डिजायन समझाये, कोई ताजमहल बनाने वाला हथौडा छैनी लेकर दूध से छैना अलग करके रसगुल्लो के गोल गुम्बद बनाये।

सगमरमर की चौकोर स्लैबनुमा आधारशिला देखकर कोई कहे, एक जमाना था जब ऐसी ही सफेद बर्फी के चौकोर टुकडे जगह जगह दिखाई देते थे। लोग प्राय उसे खाने को पडते थे। हा उन टुकडो के इद गिर्द हलवाई की दुकानो पर भी ऐसी ही भीड़ जमा होती थी। दाने दाने पर मुहर लगी होती थी। जब जेबें खाली होती तब मिठाई मोह से मन को हटाने के लिए 'मोह व्यर्थ है' का सदेश कानों में तत्ते घोल की तरह डाला जाता। मन को सभाला जाता।

आज के युग मे जब जलेबी – रसगुल्ला और इनके भाई भौजाई, साले सालिया, चाचे-ताई, सब दुकानो पर सजे हैं तो इनके चमचमाते रूप का वर्णन कर दें क्योकि इनका यह रूप नश्वर है, मुस्कराहट क्षणिक, इसे जब हम प्लेटो मे सजा कर शब्द ब्रह्म का भोग लगवायें। शायद यह प्रसाद शाश्वत बन जाय।

अत पढने सुनने देखने वालो को ताकीद की जाती है कि जलेबी रसगुल्ला आदि मिठाइयो के वर्णन के लिए अपने पास एक तार की चाशनी चढायें। मन को उसमे पूरी तरह डुबोयें। डुबो डुबो कर उसे परखें आप जब स्वय को ही किसी स्वादिष्ट मिठाई की तरह लगें तब, इस लेख का भी आपको स्वाद आयेगा। और सचमुच आप पर चीटिया आने लगेंगी तो लेख व लेखक सचमुच धन्य धन्य हो जायेगा।

22

अथ जलेवी प्रकरण

हालाकि जलेबी वणन का विपय सिर्फ उन लोगो के लिए है जो मधुमेह के शिकार है जिन्हे मीठा खाना मना है, जो मीठे बोल सुनकर, मीठे वर्णन पढकर राल टपका लेते है। जिन्हें वार-वार मन को समझाना पडता है जलेबी मोह व्यर्थ है इससे आखें मूद लो यह तुम्हे रोगी बनाकर खुद मीठी बनी रहेगी। तुम्हारे जीवन का जायका बिगाड कर कडवे सच की तरह वार-वार गले में अटकेगी

अत औरो को खाते-पीते देखकर ठडा पानी पीने वालो की श्रेणी मे बैठ जा। अपना पत्तल बिछा दे और पराई चुपडी देखकर ठडी आहे न भर।

मन को मार। मार के इस सौ डको से पीडित मन को आहत हतोऽस्मि की स्थिति से उबार। वर्णन पढ-पढकर। अर्जुन मन को ताकीद कर अगूर खट्टे है—वरना उचक कर, जिराफ की-सी गर्दन लम्बी करके, इनके गुच्छे तोडना कौन-सा मुश्किल है।

सामने प्लेट मे पडी, मुह बाए—टुकुर-टुकुर ताकती जलेबी पर आखें गडा दे—ताकि आखो की भूख मिट जाय। उसे न छू पाने की विडम्बना आडे न आये। उसे कच्चा न चबा पाने की अपनी विवशता पर लात मार दे बल्कि स्वय त्यागी बनकर औरो को इस ओर प्रवृत्त कर दे क्योकि यदि सभी त्यागी बन जाएगे तो त्यागी का समीकरण, त्याग की बात का क्या होगा। यानी हमारे वर्णन और हमारी इस रसभरी बात का क्या होगा?

जलेबी—सुन्दर सुकोमल रस से सराबोर कोमलागी है। मुह का स्वाद बदल देने को ही औरो के मुह लगी है। इसके रूप से आखें सेंकने वाले को भी उतना ही लाभ होता है जितना खाने वाले को होता है जो इसे खाने को पडते है उन्हे बाकी हर चीज़ का स्वाद भूल जाता है। अपनी ही जीभ बार-बार होठो पर फेरते हुए—वह चटखारा लेने को आतुर न हो—थोडी देर मन को समझाए। अपना ध्यान जलेबी पर ज़रा अटकाए।

गेरुए वस्त्र पहने हुए कटावदार अनेको रूप रग डिज़ायन आकार। हुलिया देखकर ही अपना हुलिया बिगड जायेगा, यदि इसे खाने वाला इसका दाम न चुकायेगा। दात तले आते ही फिस्स बोल गई रस छलकाया—और डोल गई। आह इसके यह झरोखे। यह लम्बी सीखचे सलाखें। इसी को देख-देख-कर ही लोगो ने खिडकियो रोशनदानो मे गेट के बाहर लोहे की डिज़ायनदार जालिया बनवाई होगी। जलेबी ही मूलरूप से प्रेरणा का स्रोत रही होगी। कहते है एक ज़माना था जब यह हाथी दात की बनती थी। इनपर नक्काशी पच्चीकारी होती थी और गोरी कलइयो मे चूडिया बन बनकर यह गोल घूमती। गोरी इसे देखती रहती, इसे चमती। फिर इसे लम्बाई मिली, सीखचो मे यह ढली। विरहन ने इन सलाखो पर सिर पटक-पटक कर विरह गीत गाये—भूखे-प्यासे रहकर—नमकीन आसुओ से इन सलाखो को वह खाने को पडती तो एक हलवाई का मन यो डोल गया उसने ऐसी सुन्दर लम्बी जलेबिया बना-बनाकर खाने वाली नाज़नीन को दी। नाज़नीन ने उसके झरोखो से झाक-झाकर देखा और फिर उसे टुकुर-टुकुर ताकते हुए, कुतुर कुतुर काटते हुए

—कच्चा चवा गई—क्या नया स्वाद है जलेबी उसे भा गई—और तव से जलेबिया—गली-गली हाट पर—अपने पूरे ठाठ पर हैं !

सजी-सवरी—रस से भरी-भरी—अगडाइया लेती हुई आमन्त्रण देती हुई—पडी रहती है और कहती है देखो तो—कैसे रस छलक रहा है—मुझे पाने को तुम्हारा मन ललक रहा है—

इस ललक को ललकार बना दो—। मैं तुम्हारी हू स्वीकार करो—चुनौती की तरह ।

मैं मिलूगी तुम्हें किसी मान मनौती की तरह !

मिठाइयो मे सबसे खस्ती हू सस्ती हू—हल्की-फुल्की हू मदभरी मस्ती हू—

उह ! गरमागरम—हू होठो से न लगाना ।

ऐ मिया ! वडी 'वी' छोटी 'वी' से फुरसत मिले तो जले'बी' के पास आ जाना ।

23

रसगुल्ला वर्णन

गोरा चिट्टा रस का भरा। सफेद रग देखते ही मन हो गया हरा। छत्तीस व्यजनो मे है पर नैंतीस व्यजनो मे नही। जी मैंने ता स्वर मात्रा वाल व्यजनो की बात कही। वह व्यजन जिनमे जव आपको ज़िन्दगी का पहला सवक पढाया जाता था। और उम्र भर के लिए मन क से कौआ कनकौआ ही गाता था। वैसे ही व्यजनो के मेल से बना हुआ यह रसगुल्ला वणन वा विपय हो गया है। आइये वणन को पढ-पढकर ही अगुलिया चटखारिये। इसका वीज नही, पेड नही, खुशी की यह नवेली सौगात है, त्योहारो का फल है—वाह क्या बात है।

दूध का फटा हृदय छेना छेना हो गया। उसमे अला-बला मिलाकर इसे उगलियो पर नचाया, हथेलियो पर गोल किया। नौ रसो के रस की चाशनी बनाई ताकि इसे हाथ-पाव मारने को पानी मिले। बच्चो की तरह उसमे छपक-छपक तैरे—डुबक-डुबक आनन्द ले। फिर थोडी देर मे चाशनी मे यो डूबा, ज्यों कोई मनीषी चिन्तन मे डूब गया, चाशनी, चाशनी न रही गोल गेंद सा नन्हा सा यह गुल्ला—गुल्ला न रहा। दोनो एक हो गये एकरस। तेरा तुझको अपण के स्वर ही वातावरण मे गूज उठे बरबस। आत्मसमपण के क्षणो म पगो, देह चाशनी के रग मे रगो, हाल है वह जी का। एक-दूसरे के बिना जावन अथहीन फीका, चरित्र उजला दूध घुला। कोई भी मक्खी नाक पर आ सकती है। हर उजले चरित्र पर दाग लगा सकती है। इसीलिए इसके बारे मे मुह से एक शब्द भी न निकालें। लपक कर उठा ले समूचा निगल डाले।

इसे माता कौशल्या ने बनाया यशोदा ने बनाया। इसे रामचन्द्र ने खाया श्री कृष्ण ने खाया।

माता कौशल्या ने सीता को बनवास के समय विदा देते समय कहा था बन मे रसगुल्ला गुलाबजामुन बना-बनाकर समय काट लेना—दुख सुख की तरह इन्हें भी मिल-जुलकर बाट लेना।

सीता जी ने जब गोरे रसगुल्ले और काले-जामुन बनाये, तो उन पर मक्खिया न आयें, इसीलिए सखियों से कहा, 'सखि व्यंजन परे हैं, जरा विजन डुलाय दें।'

तब सखी ने प्लेट मे गोरे सावरे यानि, कारे गुलाबजामुन देख-देखकर सीता की चुटकी लेते हुए कहा—

नाम तो बताय सखि प्लेट सजे है दोऊ
रस भरे—रस बोरे सावरे हैं गोरे है
सीता सकुचाय कहे गोरे भाये देवर को
सावले पिया को, पिया सावले जो मोरे है

राधा भी अपने कृष्ण को रसगुल्ले ही खिलाती थी। सावले कृष्ण के लाल होठो मे जब सफेद रसगुल्ला आ जाता तो राधा का मन हरा-हरा हो जाता। और तब बिना बरसात के ही असमय निकले हुए इस इन्द्रधनुप को देख-देखकर मन का मोर नाच-नाच उठता। हो सकता है यह पुराने जमाने

मे भी रहा हो। इसी का रूप-रग देख-देखकर लोगो ने पूरी धरती को गोल कहा होगा।

आर्किटैक्ट ने इसी से प्रभावित होकर गोल गुम्बद बनाने के सकल्प लिए होगे। खिलाडियो ने भी यही खा-खाकर गोल किये होगे। सच कहूँ तो हलवाई भी कोई बहुत बडा खिलाडी रहा होगा और मिठाइयो के क्षेत्र मे उसने वाह! यह गोल किया होगा।

हीग लगे न फिटकरी फिर भी रग आवे चोखा। है न इसका स्वाद अनोखा।

लीजिए किसी और को उपहार भेजिए या नववर्ष की सौगात भेजिए—यही यह पन्ने। यानी मिठाइयो के वणन के पन्ने।

आपके मित्र आये हैं। लीजिए मिठाइया प्लेटें भर भरकर मत दीजिए। स्वाद ले लेकर वणन कीजिए। सुनने वाला यदि सहृदय है तो उसे भी उतना ही स्वाद आयेगा। वणन सुन-सुनकर वह राल टपकायेगा और फिर जब आप किसी के घर जाएगे सारस और लोमडी की दावत की तरह—मिठाइयो का वणन सुनकर न अघायेंगे।

न कोई गरीब रहेगा न कोई छोटा होगा। हरेक के पास अपना-अपना वर्णन का 'कोटा' होगा।

हे विद्वान। इस वणन मे चार हज़ार कैलरीज हैं—अब अपना ब्लड शूगर टैस्ट करा कर अवश्य देख लें।

24

चाय वर्णन

रूपकचन्द और देवकी की जोडी भी क्या खूब बनी थी। एक कवि था तो दूसरा दार्शनिक। देवकी ने दर्शनशास्त्र मे एम० ए० किया था और रूपकचन्द ने गृह विज्ञान मे डिप्लोमा लिया था। दोनो आपस मे बहस करते भी तो उसमे तक सगत बाते होती। बात से बात यो निकलती चली जाती कि उसका ओर-छोर ही कही छूट जाता। दोनो का प्रेम अटूट था। रूपकचन्द मास्टर थे, देवकी दफ्तर जाती थी, इसीलिए जब देवकी लौटती तो कभी कभी उसे चाय पीने की इच्छा होती। रूपकचन्द उसके चेहरे की हवा-

रत पढ लेते थे और उसकी फरमाइश पूरी करने की जरूर कोशिश करते। सिर्फ चाय बनाने मे अनाडी थे।

उस दिन जब देवकी दफ्तर से आई तो थककर सोफे पर निढाल सी पड गयी। रूपकचन्द बडी मेहनत से चाय बनाकर लाये। देवकी ने लपककर चाय का प्याला उठाया। एक घूट पीते ही जैसे उबकाई सी आने लगी। रूपकचन्द ने सोचा, चाय के साथ कुछ खाने को भी दे दें। घटा भर रसोई की सारी चीजें उलट पुलट करते रहे, अन्तत एक डिब्बे मे कुछ दाने मूगफली के नजर आये। रूपकचन्द ने उन्हे बडे प्यार से प्लेट मे डाला और देवकी के पास आये तो देखा देवकी अब भी चिन्तन मे डूबी है। वह चाय की प्याली को टुकुर-टुकुर ताक रही है। चाय की प्याली भी जैसे एकटक देवकी को निहार रही है । रूपकचद बोले, "चाय ठण्डी हो रही है, ठहरो मैं और बना लाता हू ठण्डी चाय अगर कोल्ड टी होती तो शायद इसे लोग चाव से पीते—अच्छा ठहरो, मैं गर्म चाय लाता हू "

और पल भर मे ही रूपकचन्द एक और गरम चाय का प्याला ले आये। फिर बोले, "गर्म उफनती चाय है, उफनती चाय है, इसमे खो गई तो भी जीभ जल जायेगी ।"

देवकी ने फिर खोई-सी मुद्रा मे चाय को मुह लगाया, पर हाय । जी मिचलाने लगा। उसने चट से चाय का प्याला मेज पर रख दिया तो रूपकचन्द चाय का तत्वज्ञान देते हुए बोले, "चाय भी क्या पेय है ।"

"हा," देवकी चिन्तन की मुद्रा मे आ गयी। बोली—"चाय भी सचमुच क्या पेय है। गरम पानी, ठडा दूध और चीनी की मिठास, तीनो का जो क्षण भर पहले अलग-अलग व्यक्तित्व था, अस्तित्व था, वह एकदम समाप्त हो गया उफनता हुआ वह पानी जब ठडे दूध के छीटे पाकर और चार चम्मच चीनी डाले जाने पर, अपना-अपना अस्तित्व खोकर अपना सत्यानाश होते देखते हैं, तो इन सब का सत्यानाश करने के लिए यह चाय की पत्ती डाल दी जाती है। अब पानी पानी नही, चीनी चीनी नही, दूध दूध नही, चाय की पत्ती ने तीनो का सर्वनाश कर उसे एक ही नाम दे दिया, चाय। अब यह सभी एक ही नाम, एक ही सज्ञा पा चुके हैं—एकाकार होने की स्थिति मे आ चुके हैं परम गति को प्राप्त हो चुके हैं, परम गति—चरम गति, जिसमे तू तू नही—मैं मैं नही तत्वमसि। बस चाय ही सत्य है—शेष सब विलय हो चुका

है। अब इनका रूप रग, आकार-प्रकार एक विकार को प्राप्त हो चुके हैं—इनका अस्तित्व चिराग लेकर भी ढूढे तो नही मिलेगा ।।

वर्णन सुनते ही रूपकचन्द की जैसे सहसा जीभ जल गई थी, लेकिन वे ऐसी-वैसी बातो की परवाह नही करते थे, बल्कि वर्णन के समय बातें को और तूल दे देते, ताकि पीने वाला चाय भूलकर केवल उसके वर्णन मे ही खो जाय। उसे भान ही न हो, वह कहा बैठा है, किसके पास है, उसका स्वागत होना चाहिए लेकिन उसके सामने यह जो चाय पटक दी गयी है, उसके साथ कुछ खाने को भी है या नही। देवकी तो अपनी थी, इसीलिए वे उसकी बात का समर्थन करते हुए बोले, "चिराग के तले अ धेरा होता है देवकी सच कहू तो चाय के बारे मे तुम्हे कभी शोध करना ही हो तो सोचो यह कितनी अकेली है। हमेशा किसी-न-किसी चीज के साथ ही इसे दिया जाता है, वरना खाली चाय पीने वाले की नजरें फैली रहती है। इसका अकेलापन कितना खाली है। यानी यह खालीपन है—अकेली चाय का मजा ही नही आता। फिर इसके अस्तित्व पर ही गौर करो देखो तो जब जैसी मरजी इसे ढाल लो। प्याले मे ढाल दो तो प्याली भर चाय, गिलास या मग मे या रकाबी म कही भी ढाल दो—यह उसी सज्ञा से पुकारी जाती है हालाकि यह है तो चाय ही। हम इसे भिन्न पात्रो मे ढालकर ही मुह लगा सकते है। देखो प्याली से अब भी भाप निकल रही है— इसकी भाप से ही इसके गर्म होने का एहसास होता है। इसे ठडी मत होने दो, वरना इसका यह ठडापन तुम्हारे मन मे पुन प्रतिक्रिया करेगा। इसकी प्रतिक्रिया प्राय उलटी ही होता है। किसी को ठडी चाय दे दो तो वह गर्म होने लगता है, यह तो अभी भी गर्म है।"

पति को यो चाय के प्रति सच्ची लगन से समर्पित देवकी का मन रोते-रोते को हो उठा। वह बोली, "प्रिय ! ऐसा प्रतीत होता है यह चाय नही कुछ और ही है इसमे तत्ते पानी का स्वाद है, ठण्डे दूध की ठण्डक है, चीनी का मिठास ही मिठास है। पत्ती के आते ही इन सबका सतुलन गडबडा गया। सब अपने आप को मिटाकर एक हो गये। भिन्नता मे अभिन्नता, अनेकता मे एकता का सूत्र यही है। अगर यह सब भिन्नता मे विश्वास रखते तो क्या किसी को मात्र तत्ता पानी प्याला भर पीने को दिया जा सकता था ? लेकिन गौर से देखो तो लगता है आज अनजाने मे ही एक ऐसे पेय का आविष्कार

हो गया है, जिसे नया नाम दिया जाता है। आविष्कार हमेशा अनजान म हो जाते है। भटकता हुआ कोलम्बस अमरीका खोज सकता है तो नित नये प्रयोग मे उलझे रहने वाले हम लोग भी तो कुछ खोज सकते हैं। देखो प्रिय इस पेय के लिए पानी का प्रयोग हुआ, यह उवलता सत्य है, इसमे चीनी है, यह मधुर सत्य है, चाय की पत्ती ने इसे नया रूप दिया तो दो बूद दूध की, इसे नया निखार देने लगी यह निखरा हुआ सत्य है। सत्य ही ईश्वर है, अत इन सारे सत्यो के अनुपात मे हम 'सत्य ही ईश्वर है' तथ्य को हाथ मे लें। इसी परम सत्य को प्राप्त करे। यही इस पेय ने दर्शन दिया है इसका नाम चाय से पलट कर 'दर्शन पेय' रखें तो अधिक उपयुक्त होगा। दर्शन पेय यानी दर्शन देते समय वह साकार हो उठा है, पीकर भगवान स्मरण हो आया। अन्यथा भगवान का स्मरण करने के लिए कितनी सभाए जुटती हैं, ध्यान को बटोरा जाता है, यहा वहा से आ-आकर साधु महात्मा मन को एकाग्र करने के सौ-सौ उपदेश देते है, तब भी मन यहा वहा भटकता रहता है। आज इसी पेय के दशन मात्र से मैंने वह सव प्राप्त कर लिया, जिसे अन्यथा प्राप्त करना असम्भव था। मैने सुन रखा था कि लोग खाना खाने से पहले भगवान को याद करते थे, उस तथ्य का परम सत्य आज ही समझ आ सका है। मुझे लगता है खाना खाने से पहले ही आख मूद कर प्रार्थना करने वाला व्यक्ति यही प्रार्थना करता होगा 'हे भगवान आज का खाना खाने योग्य हो वरना मुझे शक्ति दो कि मैं तीखे-फीके कटु सत्यो से आखें मूद सकू और आपका नाम लेकर इस अवाछित पदाथ को गले से उतार सकू'।'"

रूपकचन्द ने सम्मुख पडे उस दर्शन पेय को आख भरकर देखा तथा बोले, "तुम ठीक कहती हो प्रिय, अव हम हर आने-जाने वाले को मात्र 'दशन पेय' देंगे मात्र दर्शन से आखो की भूख हट जायेगी मन अनमना हो उठेगा, उसे देखते ही किसी को उबकाई आयेगी, किसी का जी मिचलाने लगेगा। उसके बाद वह यहा बैठने की इच्छा ही न करेगा। उसकी इच्छाए यो समाप्त होंगी कि फिर शायद कोई इच्छा ही शेष न रहे। हर किसी को बस यह अपनी अन्तिम इच्छा बताता फिरे। उसे ऐसा झटका लगे कि बेसिर-पैर की हाकने लगे। इस दर्शन पेय से ऐसा ही दर्शन उपजे। सच कहू तो सारे दशन, दर्शनो की ही माया महामाया है। आखिर यह चाय भी तो इसी अभिप्राय से आरम्भ की गई होगी। लोग चाय की लाख कहानिया गढें, मैं तो यही

कहूगा यह पेय पदार्थ हमेशा से दो प्रेमियो मे बाधा बनाकर खडा हुआ। प्राय प्रेम के प्रसगो को पढते समय देखा गया है, कन्या कह देती है—'मैं चाय बनाकर लाती हू' या फिर कन्या की मा चाय बनाकर आ टपकती है और कबाब मे हड्डी की तरह प्रतीत होती है—यदि यह दर्शन पेय होगा तो कही आने जाने की असुविधा नही। लगे हाथ मैं तुम्हे इस तुरत दर्शन पेय का नुस्खा भी-बता दू-। मुन्ने की दूध की बोतल का बचा हुआ दूध था, गीजर से गम-गम पानी आ ही रहा था, तुम्हारे सुबह की चाय वाले गिलास मे काफी सारी चीनी लगी थी, मैंने सारी मक्खिया उडाकर, दूर-दूर तक उडाकर चाय बनाई थी और इस कप मे डालकर लाया था ।

रूपकचन्द के इस स्पष्ट कथन का प्रभाव यही हुआ कि देवकी ने कानो को हाथ लगाया और दर्शन पेय के महान आविष्कारक को प्रणाम करके पाव पटकती सिर पीटती हुई स्वय रसोई घर मे आ धमकी। पति का कथन अक्षरश सत्य था, गिलास पर अब भी मक्खिया भन्ना रही थी और ढूढने पर भी घर मे न चाय की पत्ती थी, न ही दूध का नामो-निशान।

वह खाली पानी उबालने लगी। पानी पहले गुनगुना हुआ, फिर खौल पडा, उबल गया था देवकी इस तत्ते पानी को चाय की सज्ञा देने के लिए सारे डिब्बो की उलट-पलट करने लगी थी। कही पत्ती का पत्ता भी न था और चाय केवल वर्णन का विषय हो चुकी थी।

25

रूपकचन्द समोसा

रूपकचन्द दफ्तर मे जब अपने मित्रो से रसोई घर के किस्से सुनते तो उन्हे विश्वास ही न आता कि हर कोई घर जाते ही या तो बाल बच्चे सभालता है या फिर जाकर रोटी पानी का प्रबन्ध करने के लिए रसोई मे घुस जाता है। देवकी ने तो कभी मौका ही न दिया। एकाध बार चाय की नौबत आई भी तो ऐसी बनाई कि बेचारी सिर पीट कर रह गई। यही सोच कर रूपकचन्द के मन मे अपनी देवकी के लिए मोह उमड आया। हा ऐसी पत्नी कहा मिलती है जो बराबर की तनख्वाह कमा कर लाती है, पीर बावर्ची भिश्ती खर सब कुछ होकर भी अपने आपको तुच्छ नगण्य समझती हो। धन्य हू मैं, धन्य धन्य हू मैं। पिछले चार साल से मजाल है झडप हुई हो, मैंने जो कहा, वही

मान गई। मेरे बहाने को बहाना न समझा। अपने सारे बहाने त्याग दिये ' वह तो देवी है। उसकी तो मुझे पूजा करनी चाहिए, जिस देश मे नारी की पूजा होती है, वहा देवता का वास होता है। वाह ! वाह ! मुझे देवता होने का श्रेय मिलेगा, पर मैं क्या करू ? रूपकचन्द चिन्तन मे डूबे थे कि तभी शीलचन्द आ पहुचे। शुद्ध पतिव्रता व्यक्ति। पत्नी उन्ही से व्रत रखवाती थी। वही चौका चूल्हा करते। पत्नी इतनी प्रिय थी कि उसे रसोई मे घुसने न देते। आज शीलचन्द को देखते ही रूपक जी की बाछें खिल गयी। वह व्यक्ति जो आज तक उन्हे दब्बू, जोरू का गुलाम और जाने क्या क्या लगता था, सहसा उन्हें महान प्रतीत होने लगा। शीलचन्द ने आते ही औरताना बातो का पुलिन्दा खोला और अपने घुघराले बालो की लटें सुलझाते हुए बोले, "भई रूपक। कल तो मैंने समोसे बनाये वाह ! क्या लाजवाब बने थे। उनकी सहेलिया तो इतनी इम्प्रेस हुईं कि कहने लगी, हम भी अपने पतियो को आपके पास भेजेंगी। आपको ट्रेनिंग क्लास लेनी होगी। मैं बोला—अब हमारी कम्पनी तो बन्द होने ही वाली है। दो मास बाद हम सब जब हाथ पर हाथ धरे मुह लटकाये बैठेंगे, तब यही काम शुरू करेंगे। न हो मेरी पत्नी तो मेरे काम से इतनी खुश है कि अपने ही स्कूल मे गृहविज्ञान मे सहायक अध्यापक के रूप मे रख लेगी। अजी कल तो समोसो को खाते ही उसने यही कह दिया—

'समोसे समोसे तो मेरी पत्नी को भी बहुत पसन्द है। बताना तो कैसे बनाते हैं ?" रूपकचन्द एकदम बोल उठे। शीलचन्द ने सुना तो उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। बोले, "तुम सीखोगे बनाना ?"

"हा," नये विद्यार्थी रूपकचन्द ने उत्साह दिखाते हुए कहा।

शीलचन्द की खुशी का ठिकाना न रहा। उन्हें लगा—अब हर रोज रूपक चन्द को नये से नये व्यजन बनाना सिखा सकता हू। मेरा ज्ञान देखकर यह बडी से बडी डिग्रिया भूल जायेगा। समाधियो से लेकर सिद्धि को पहुचने वाले सिद्ध पुरुषो को भूल जायेगा। जो मुझे हमेशा देखकर यहा वहा होने लगता था, अब मेरी ओर ताक लगाये रहेगा। मैं कब खाली होऊ, कब उसे नया व्यजन सिखाऊ। बल्कि हो सकता है, मेरा आधे से ज्यादा काम भी निवटा दे ताकि मैं खाली ही रहू ?

"क्या सोच रहे हो शीलचन्द ?" रूपकचन्द ने पूछ ही लिया

समोसे की भूमिका बताते हुए बोल उठे—

"समोसा वह तिकोना पदार्थ है जो छत्तीसो व्यजनो का सिरमौर है। इसका आकार ही तिकोना है। या यो कहें न्यूनकोण का त्रिभुज तीन भुजाए। मैंदे की बनी आहा हा हा—बस । मैदा गूधो, आलू उबालो, छीलो, भर दो। कडाही मे घी गरम समोसा तैयार " और यह कहकर शीलचन्द ने अपने लचपैकेट से दो समोसे निकाल कर साक्षात उदाहरण सामने रख दिया था और कह रहे थे—"परसो ही बनाये थे कल भी खाये, आज भी, अभी दो दिन और चलेंगे। एह एह करते हुए शीलचन्द ने फिर दोनो समोसे अमूल्य निधि की तरह वापस लचबाक्स मे डाल दिये थे और सामने वास को आत देख मुह उठाये सीधे यो चल दिया, जैसे मुह मे समोसा रखे हुए रेस लगाने को तैयार हो।

रूपकचन्द पर समोसे का भूत यो सवार हुआ कि दफ्तर से घटा भर पहले की छुट्टी ले ली। रास्ते से मैंदा, आलू, मसाले खरीदे। एक कागज के टुकडे पर सारी विधि लिखी हुई थी। अत उसे बार-बार टटोला और मन ही मन ठान लिया—आज देवकी के घर आने से पहले ही समोसे तैयार कर देगा। समोसे आलू पर मैंदे की परतें जैसे जैसे किसी को यूनीफाम डाली जाय वाह वाह। समोसा वणन भी यो करूगा कि खाने वाले से ज्यादा सुनने वाले को स्वाद आये। छप जाय तो गृहविज्ञान के पाठ्यक्रम का अग बन जाय। मैं तो अब कागज कलम लेकर इसका रूप सामने रख कर इसे बनाकर, वह रूप सामने रखूगा जो अपने आप मे इतना लजीज, इतना स्वादिष्ट होगा कि उसका रूप वणन पढने वाला, सुनने वाला और समोसा खाने वाला तीनो को एक ही समान रस की प्राप्ति होगी। हा, मैं तीनो को सामने बिठला कर रूप वणन करने को कहूगा, स्वाद वणन करने को कहूगा यह वर्णन सुनते ही सब को कैसा-कैसा प्रतीत हुआ यह जानना चाहूगा कि तभी रूपकचन्द को तीन बन्दरो का ध्यान हो आया था, जैसे तीनो ने उसके बनाये समोसे चख लिए हो। एक ने आखे बन्द कर ली। दूसरे ने तौबा करके मुह बन्द कर लिया। तीसरे ने कहा—अब समोसे का नाम भी न सुनूगा और कान बन्द कर लिये। और तभी जैसे किसी टहनी से छलाग लगाकर एक चौथा बन्दर आ गया। उसने कहा—कैसी गन्ध आ रही है और वह नाक बन्द करके बैठ गया हो ।

'अरे—रे देखकर तो चलो ' 'रूपकचन्द रास्ते चलते किसी की आवाज सुनकर चौका। कल्पना को झटक दिया। घर पहुचते ही देखा—देवकी अभी न लौटी थी, बल्कि एक चिट्ठी छोड गयी थी—'आने मे देर हो जायेगी ।' वाह, तब तो समोसे भी तैयार होगे और रूपकचन्द सीधे रसोई मे जा घुसा। फिर ध्यान आया—कपडे बदल ले वरना मुश्किल होगी। उसने चटपट कुर्ता पायजामा पहन लिया। फिर एप्रिन बाधा, कमर कस ली और आटे की परात मे किलो भर मैदा उडेला, खूब मसाले डाल दिये। घी डाला और हाथ से गूधने लगा तो गुस्सा आया। मैदे की पकड यो थी कि पाचो उगलिया जकडी जा रही थी। बार-बार वह उगलिया अलग करता। हाथ धो लेता, लेकिन फिर वही । आखिर उसने काफी सारा घी उडेल दिया था और मैदा गूध कर रख दिया। आलू उबल चुके थे। उनके पतले छिलके से उतार उतार कर यों रखे, जैसे शरीर से खाल उतर रही हो। बिलकुल खाल का जैसा रग ही तो है इस पर रोमछिद्र नही वरना मुश्किल होती। अब आलू थाली मे आ पडे थे और रूपकचन्द अपने हाथो से उनका भुर्ता बनाने लगे। भुर्ता बनाने के लिए गुत्थमगुत्था होना जरूरी होता है। रूपकचन्द को लगा दोनो आलू सहसा हाथ से उछल कर अखाडे मे पहलवानो से आ खडे है। एक दूसरे का सिर तोडने को आतुर है। उसने जोर से सीटी बजाकर दोनो को जैसे 'हाल्ट' कहा और फिर दोनो के सिर पर जोरो से हाथ मार कर सिर कुचल कर रख दिया था। अब आलू आलू न था। आलू अपनी सज्ञा खो बैठा, अस्तित्व खो चुका था। उसका रूपाकार मिट चुका था। जैसे मिट्टी का शरीर मिट्टी के लिए ही बना हो, अब वही मिट्टी मे मिलेगा। ऍं मिट्टी। रूपकचन्द का मजा किरकिरा हो गया। लगा मुह मे सहसा कुछ खाते-खाते ककर आ गया हो। उसने वही थू थू की तो ध्यान आया, अभी तो पदार्थ बना ही नही, पहले से थू थू होने लगी और बेचारे ने थूक गटक ली। सामने पडे मसालो को देखा। सब अपने हाथो से डाल दिये। फिर जीरा हाथ मे लेकर मैदे मे छिडकने की बात सोचने लगा था तो लगा इतने सारे मैदे मे जरा सा जीरा तो यो होगा, जैसे ऊट के मुह मे जीरा दिया जाय। सोचते ही मैदे का ऊट एकदम सामने आ खडा हुआ था और रूपकचन्द ने उस ऊट सी गदन के आगे लगे मुह मे जीरा डालने को ज्यो ही हाथ बढाया तो नजर हाथ मे बधी घडी पर जा पडी। पाच बज गये। घण्टे भर मे तो देवकी आ जायेगी। अब उसने जरा

जल्दी जल्दी काम करने का सोच लिया। उसने कड़ाही मे घी डाल दिया, नीचे आग जलाई, फिर सामने पडे मैदे को देखा, फिर कागज का टुकडा निकाल कर समोसे के लिए लोई बनाने लगा। लोई यानि पेडा—हथेलिया म घुमाइये कागज पर लिखा पढकर रूपकचन्द हसा। हा ! हथेलिया न हुई कमानी बाग हो गया। घुमाइये घुमाइये एह एह करते हुए उसने देखा, सारा मैदा हाथो को फिर चिपक रहा है। बार-बार हाथ धोने के कारण मदा और अधिक ढीला हो रहा था। हाथ वह इसीलिए धो रहा था क्योकि पिछली बार कुछ बर्तनो मे जब आटा सूख गया था, तो उन्हे दिन भर भिगोये रखने पर भी आटा न छूट सका था, फिर हाथो मे चिपका तो उन्हें दो दिन भिगाना पडेगा—हाय राम। हाथ है पाव तो नही कि आटा चिपके तो एक टाग म, पानी मे खडे होकर धूनी रमा लो । फिर उसे लगा, पानी मे खडे होकर तप साधना करने वाले योगी तपस्वी ही नही, गृहस्थ भी होते होंगे। मेरे जसे नौसिखिये, हाथ पाव मे आटा सना सूख जाता होगा तो बहाने से पानी मे जा खडे होते होंगे। तभी उसे अपने पर स्वय हसी आ गई। सामने पडी कडाही मे पडा तेल खौलने सा लगा था। रूपकचन्द ने आग बुझा दी। मेहनत से मदे के छोटे छोटे पेडे बना कर रखे, फिर बेलन के तले एक एक को रखा। बेलना चाहा, कोशिश की, वह गोल हो जाय, पर हाय कोई कोना दायें तो कोई बायें हो रहा था। हाथो से सहला-सहला कर ठीक किया। फिर बीचो बीच से काट कर अब उसका तिकोना रूप बना कर उसमे आलू भरने की बारी आ गई थी—यह तिकोना कैसे होगा ? शरीर मे हड्डियो का ककाल होता है तो रूपाकार मे सुविधा तो रहती है। उसमे रुई भरो, भूसा भरो या मास मज्जा दो, खोपडी गदन बाहे टागें सब तो अपनी जगह पर नियत होते हैं, समोम का भी साचा बना हो तो उसमे भरते जाओ आलू। अरे, जिसका कोई रूपा कार ही नही, उसके लिए यह तिकोनी बान क्यो। अच्छा यह तिकोना त्रिभुज न्यूनकोण त्रिभुज है या अधिक कोण ? हा, इसकी यह नीचे की सीधी रेखा, उस सीधी रेखा पर यह लम्ब की तरह का जोड और उसके खोखलेपन को भरने के लिए यह आलू आलू आहा ह रूपकचन्द ने सफलतापूर्वक आलू भर दिये। जी चाहा, समोसे का वह मैदानुमा मुह कस कर बद करने के लिए उस पर गोद लगा दे। लेकिन नही। शीलचन्द ने पानी से ही मुह बन्द करने को कहा था। हा, हा, जग की रीत ही ऐसी है। चाय पानी से मुह बन्द

करवाने मे देर नही लगतो। वह हाथ मे पानी लेकर समोसे का मुह बन्द कर रहा था कि देखा समोसे के चार कोने निकल आये हैं—एक दो तीन चार, न वह चतुभुज है, न त्रिभुज है, न पचकोण है, न षडकोण, लेकिन जो भी है, है सुन्दर और अब रूपकचन्द ने फिर आग जला दी और बोल उठे, यह 'चौकोन ही हा, आविष्कार तो अनजाने मे ही होते है। मैं अनजान। हो गया आविष्कार। हो गया, हो गया—कहते कहते उन्होने ठडी कडाही मे चार छ आठ चौकोन डाल दिये। सफेद शोरे चिट्टे मैदे से बने वह चौकोन—जैसे कोई गोल मटोल बच्चे पानी मे तैरने लगे हो पर न तेल गर्म हुआ, न समोसो मे हरकत हुई, हा समोसो को मैंने एकदम लुढका दिया—इनका शरीर ठडा बरफ सा हो गया, आखिर तेल को क्या हुआ, नीचे देखा गैस जा चुकी थी। उसका जी चाहा, गैस को हाक लगाये, बुला ले। हाय गैस! कहकर सोचा अग्नि चिन्तन करने से गैस जल जाती, भडकाने से भडक उठनी तो आज सारे हथकण्डे इस्तेमाल कर देता, लेकिन इसे जलाने के लिए गैस ही अपेक्षित है। सारे चौकोन समोसे तेल मे डूबे डूबे रूपकचन्द को एकटक ताकने लगे। उसका जी चाहा, कडाही उठाकर पडोसी के घर जा पहुचे। जरा सी आच चाहिए—कहकर समोसे आग पर पकने रख दे। पर तब। उसे देवकी की इज्जत का ध्यान हो आया। सारी पडोसिनें उस पर हसेंगी या यह भी हो सकता है, सब अपने अपने पतियो को कहे, पति हो तो ऐसा। हरेक स्त्री 'रूपकचद मेक' के पति की वाछा करने लगे। उससे इतनी प्रभावित हो कि पतियो का काम काज छुडा कर उन्ही के हाथ की चाय पियें, उन्ही के हाथ के समोसे खायें एह। समोसे। रूपकचन्द ने फिर समोसे के चारो कोने देखकर ठण्डी सास ली। जी चाहा, शीलचन्द को फोन करके बता दे मैं आ रहा हू—पर कडाही-तेल समोसे-उठाकर उसके घर तक कैसे ले जाऊ।

तभी सामने पडे गैस के दूसरे सिलेन्डर को देखकर रूपकचन्द की खुशी का ठिकाना न रहा। उसने चटपट सिलेन्डर बदला। आग जला दी। घी गरम होते ही समोसो मे हरकत होने लगी, जैसे किसी को नये प्राण मिले हो। रूपकचन्द औनी पौनी उठाये बार बार उन्हे ऊपर नीचे करने लगा। पौनी लगते ही समोसे के आवरण पर जैसे आघात हुआ। जैसे किसी घटिया कम्पनी के कपडे को जरा हाथ लगाओ और वह फटने लगा हो समोसे के आलू बाहर निकलने लगे ऐं ऐं वापस चलो, वापस। रूपकचन्द ने घी मे

कुशलता से तैरते हुए सारे आलुओ को पुन मैदे मे डालने की नाकामयाब चेष्टा की, लेकिन समोसे का शरीर खोखला होता चला गया। रूपकचन्द ने गैस बन्द कर दी। सारे समोसे और तैरते हुए आलू छान छान कर निकाले। फिर उन्हे प्लेट मे यो औंधे मुह रख दिया, जैसे समूचे समोसे हो। समोसे की पीठ उसके सम्पूर्ण रूपाकार का आभास दे रही थी। पीठ भी कितना बडा छलावा है। उससे आकार तो ज्ञात हो सकता है शरीर की काठी का भी ज्ञान प्राप्त हो सकता है, किन्तु यह ज्ञात नही हो सकता कि इसके सामने का रूप कसा है, आख कान नाक कैसे है मुद्रा कैसी है वाह वाह। इन समोसो को देखकर आज देवकी की बाछें खिल जायेंगी। आज जब वह दफ्तर से आकर धम्म से सोफे पर बैठेगी तो मैं उसे यह चौकोन समोसो की प्लेट देते हुए खुश कर दूगा। तब वह मेरे हाथ चूम लेगी खुशी से फूली न समायेगी। ऐसा पति पाकर वह स्वय को धन्य धन्य समझेगी और यही सोच कर उन्होने प्लेट मे वह तथाकथित समोसे रख दिये। फिर उसे दूसरी प्लेट से ढक कर रखा ही था कि देवकी आ गई। सामने पति को एप्रिन बाधे देखकर उसकी हसी छूट गई एकदम बोली—"न जी, आज मेरे न तो सिर मे दर्द है, न ही मुझे चाय चाहिए। मैं तो आते समय समोसे लेती आई सोचा, आज चाय के साथ मिल कर खायेंगे।"

'समोसे'—रूपकचन्द का मुह खुला रह गया। देवकी ने एकदम सामने पडी प्लेट से प्लेट उतारकर समोसो का लिफाफा फट कर देखा। रूपकचन्द एकदम बोल उठा

"आज तक तुमने तीन कोने वाले समोसे ही खाये होगे। चार कोने वाले खाओगी तो चारो खाने चित हो जाओगी ।"

उन समोसो का रूपाकार देखकर उसे पहले ही उबकाई सी आने लगी थी और तीन कोने वाले समोसे चार कोने वाले समोसे को टुकुर टुकुर ताक रहे थे। देवकी चटपट चाय बनाने रसोई मे जा पहुची। उसे डर था कही समोसे बनाने के बाद रूपकचन्द मे देवकी को चाय पिलाने की इच्छा न जाग जाय और तब तत्ता पानी ठडा दूध उसके गले से नही उतर पायेगा। आज के लिए तो यही 'रूपकचन्द समोसा' ही काफी था।

26

एक घोषणा—नए दल की

महिला दल

महिलाओं के नेतृत्व के बिना यह देश शीघ्र ही रसातल को धसकने लगता है इस कटु सत्य के सूत्र हाथ लगते ही मुझे अपने महिला होने का गर्व दुगुना-चौगुना दिखाई देने लगा है। जो लोग इस तथ्य से अवगत नही थे उन्होंने थोडी देर कुर्सी सभालने की कोशिश की पर सभाल न पाये। आपस मे ही एक-दूसरे का सिर फोडने लगे, यह हालत देखकर सिवाय महिलाओ के और करुणा कहा उमड सकती है। यही धारा अब मेरे मन मे उमडी आ रही है। मैं इसी मे प्रवाहित होकर एक नये दल की घोषणा कर देना चाहती हू।

मैंने साफ देखा है कि लोग बहती गगा मे पहले हाथ धो लेते हैं फिर चुल्लू म पानी लेकर यहा वहा ऊल-जलूल बकते है। लोगो को वरगलाते हैं। एक-दूसरे को गालिया दे-देकर एक-दूसरे का भाडा फोडा करते हैं और चार-छ दुमछल्लो को साथ लेकर फिर एक नये दल की घोपणा पर उतर आते हैं। यह सब देख-देखकर मेरी हिम्मत और बढ रही है। आकर्षण को गुरुत्वाकर्पण बना कर मैं भी धरती की तरह हर पके फल पर आख लगाये बैठी हू, कब, कौन आ टपके।

किस दल से नया अकुर फूटे। कितने ही राह के रोडे यहा-वहा पडे हैं। कितने हैं जिन्हें उनके दल ने पारखत्ती दे दी। जिन्हें अहिल्या की तरह पत्थर बनाकर, जड करके छोड दिया। ऐसी ईंटें, ऐसे रोडे मिलाकर ही तो हर भानुमति अपना कुनबा बना लेती है।

मैंने सकल्प कर लिया है इन सबके उद्धार के लिए एक दल बहुत जरूरी है। यह लोग औरो की राह रोक सकें, शोर मचा सकें लेकिन एक बात और भी है। इन रगे सियारो को मैं तभी अपने दल मे शामिल होने दूगी जब यह मेरी हर बात पर हामी भरते हुए 'हुआ-हुआ' की आवाजें निकालेंगे। वे

अपना दिल दिमाग ताक पर रखकर आयें, कलेजा पेड पर टाग दें और बे-खटके मेरे दल मे शामिल हो जायें।

मेरी सिफ कुछ शर्तें कुछ नियम है। कुछेक सिद्धात भी। क्योंकि टिकट लेकर जो लडाई लडी जाय कम-से-कम जब वह कोई नया तमाशा खडा करे तो बाकियो का मनोरजन तो हो। सबसे पहले मेरे दल मे शामिल होने वाला का शुद्धिकरण होगा। मन्त्रोच्चार और हवन के धुए से उनकी तबीयत साफ की जाएगी। फिर उन्हे सिक्को से तोला जाएगा हम चाहेंगे। सिक्को वाला पलडा भारी रहे और दूसरे पलडे मे बैठा हुआ नेता शुद्ध साफ पानी की तरह ठीक वैसे ही ऊपर आ जाए जैसे फिल्टर किया हुआ साफ पानी हो। सारे सिक्के ककर-पत्थर की तरह नीचे ही बैठ जायें।

नास फ्लोर करने वालो के लिए मेरे अपने नियम हैं। उन्हें इस फ्लोर पर स्केटिंग करना तो सिखाया जायेगा पर वे जब इस फ्लोर से दूसरे फ्लोर तक पहुचेंगे तो उन्हे स्केटिंग रिंग से ऐसे उछालकर बाहर फेंका जायेगा कि वे दूसरे स्थान पर औंधे मुह गिरेंगे, हड्डी-पसली तो टूटेगी ही, औंधे मुह गिरे तो नाक-नक्शा ऐसा हो जाएगा कि फिर किसी को मुह दिखाने लायक न रहेंगे।

मेरी इस योजना पर पिछले नौ मास से विचार हो रहा है। घाट घाट का पानी पीने वालो ने ही इस दल की रूप रेखा तैयार की है और समय पूरा होते ही यह पार्टी एक नवजात की तरह जीवन्त हो उठेगी। नौ मास से पहले ही जन्म लेने वाले बच्चे मे कोई-न-कोई दोष शेष रह जाता है अत अभी तक यह दल अपने जन्म की प्रतीक्षा मे रत है हालाकि इसने अपने गर्भकाल मे ही पूरी महाभारत जान ली है और यह निहत्था अभिमन्यु ससार मे आते ही अपना अखाडा सभाल लेने को तत्पर है।

मैं आपके ब्लैक एण्ड व्हाइट ख्वाबो को शीघ्र ही रगीन ख्वाबो मे बदल सकती हू। लेकिन यह दलबन्दी नसबन्दी की नाईं होगी। तब आप किसी और दल को जन्म न दे सकेंगे। आपके विचार नपुसक हो जाएगे। दिमाग (अगर होगा तो) ब्रेनवाश द्वारा उससे आपका शीघ्र ही पीछा छुडाया जाएगा।

आप मेरे दल मे शामिल होना चाहे तो प्राचीन काल की राजा महा

राजाओ की परम्परा को याद करें। स्वयवर के दिनो को दोहरायें। अपने अपने भाट चारण ला लाकर पहने अपने गुण दोष बखानें।

ध्यान यह भी रहे कि सयोगिता ने सारे राजा महाराजाओ को छोडकर वरमाला दरवान को पहना दी थी। (वह दरवान पृथ्वीराज था इस तथ्य से शायद वह बाद मे अवगत हुई हो) अत हर जाति के लोगो को मैं अपने दल मे आने के लिए खुला निमत्रण दे रही हू।

27

सूखाराम का उपन्यास

पिछले दिनो उनकी पत्नी कलावती पर एक ही धुन सवार थी कि उसक पति कही जाकर एकाध उपन्यास लिख आए। हर रोज ढेरो पुरस्कारा का घोषणाए पढ-पढ कर उसे लगता उपन्यासकार होना कोई बडी बात नही। फिर लिखने मे भी क्या रखा है। उपन्यासकार और आम पढे लिखे आदमी मे फर्क ही कितना है। व्यक्ति तो जिस दिन से लिखना शुरू करता है उसी दिन से लेखक हो जाता है। उपन्यासकार और साधारण आदमी मे सिफ कुछ फर्लांग का ही अन्तर होगा। वह बेचारा यहा वहा कहानिया पचा जाता है जबकि उपन्यासकार उन्हे उगल देता है। यही सोचकर वह अपने पति श्री सूखाराम को उकसाना चाहती थी। पिछले दिनो वह एक बडी दूकान पर हीरे के टाप्स देख कर आई थी। आखो मे खटकने लगे, पर खरीदे कैसे जाए? तभी उपन्यास के लिए पाच हजार रुपये पुरस्कार की योजना पर उसकी नजर आ पडी। बस फिर क्या था। वह पति के सिरहाने जा बैठी। दबे स्वर मे बोली, "कुछ सूझा लिखने के लिए ?"

सूखाराम ने सूखा सा जवाब देते हुए सिर हिला दिया। कलावती बोल उठी, "कुछ सोचोगे तभी तो सूझेगा इतनी किताबें पढते हो किसी एक का प्लाट चुरा लो और उस पर नया ढाचा खडा कर दो। देखते नही हमने अपने अस्सी गज मे बने मकान को गिराकर यह जो चार मजिला इमारत खडी कर ली है कोई पहचान सकता है ? मकान के प्लाट और कहानी के प्लाट मे वैसे भी थोडा सा ही फर्क है—सिफ छपी हुई किताबो के प्लाट पर नेम प्लेट टगी होती है। कुछ कहानियो, उपन्यासो के प्लाटो की भी नीलामी या बोली होती या कुछेक किताबो पर 'टूलेट' की सी तख्ती लटकी होती है जिस पर आप कुछ रुपया देकर अपना नाम फिट कर सकते तो कितना अच्छा होता।

"खैर दो सौ पृष्ठ की किताब लिखने मे रखा ही क्या है—तुम कोशिश तो

करो—सोचो तो सही हमारे आसपास कितनी कहानिया रोज घटती है। या वह भी नही सोचा जाता तो तुम अपनी जीवनी लिख मारो कैसे हमारी मुलाकात हुई फिर कैसे शादी ?" सूखाराम ने कलावती की बात काटते हुए कहा, "उपन्यास लिखना है या किसी दुर्घटना का वर्णन करना है ?"

"चुप रहो—हमारा मिलन यदि दुघटना होता तो—तो मैं तुम्हे लिखने के लिए कभी न उकसाती। लिखने वालो से तो मैं भी—खैर—"

"खैर क्या—बात साफ साफ कहो", सूखाराम फिर चिल्लाये।

"बात उपन्यास की है—तुम चाहो तो कुछ किताबे ले जाओ। किसी एकान्त स्थान मे जा बैठो। तुम कहो तो मैं मायके चली जाती हू। मेरे भाई-भाभिया जब तुम्हे धिक्कारें, मैं जब तुम्हे वहा आने पर, यो पीछा करने पर लानत दू तो तुलसी बन जाना, लिखने बैठ जाना। यह नही कि तुम उसका उल्टा ही ले लो और कोर्ट से सम्मन भिजवाने लगो या मेरे मायके आने का फायदा उठाकर यहा हर रोज एक नई लैला को लाने लगो।

"वसे यह भी तो उपन्यास का अच्छा प्लाट हो सकता है क्यो ?"

फिर उसने पति को गौर से देखा और बोल उठी, "न यह प्लाट नही चलेगा। तुम तो हर चीज प्रथम अनुभव के आधार पर करना चाहोगे—और मैं यह कभी बर्दाश्त नही कर सकू गी।"

"तो फिर ?" सूखाराम ने कलावती को लगातार चहलकदमी करते हुए देखकर कहा।

कलावती फिर बोली, "पिछली बार कवि सम्मेलन मे भेजते समय हमने जा कविताए मिल बैठकर बनाई थी उससे हफ्ता भर के प्याज आलू बैंगन तो इकट्ठे हो ही गये थे। तुम्ही कुछ सोचो न। मैंने तुम्हे पिछले तीन सालो म भलीभाति देख परख लिया है, तुम मे मूखता के वही सस्कार है जिनसे कोई कालोदास बन सकता है। डाकू का सस्कार वाल्मीकि से तुम्हे आरम्भ से ही प्राप्त है। मरा मरा कहकर राम राम पर पहुचने का रास्ता सोचो। कहते हैं कविता आह से पैदा हुई होगी आसू बनकर ढुलकी होगी। उपन्यास तो ऐसी कोई तरल चीज भी नही वरना मैं तो तुम्हारे नाम का रोना रो-रोकर ही ताल भर दू। पत्नी कलावती का अनुरोध बढता गया। श्री सूखारामजी असमजस मे थे।" वह ढेरो किताबें बाध-बाधकर रखती चली जा

रही थी। फिर कलावती ने अपना सामान बाधा और बोली तो "मैं जाऊ मायके ?"

"हा तुम तो चली जाओ भागवान !" सूखाराम जल्दी से बोले।

"क्यो चली जाऊ। तुम मे तुलसी के लक्षण होते तो तुम मुझसे लिपट जाते, मेरी राह रोक लेते। मेरा सामान छुपा लेते, मुझे जाने न देते। पर तुम्हें तो लग रहा है तुम्हारी जान छूट जाएगी—मैं नही जाऊगी। तुम भी कही नही जाओगे। यही बैठकर मेरे सामने उपन्यास लिखोगे और हा यह भी बता दू—हीरोइन हीरो, उसके भाई बहन, सास ससुर सब मेरी पसन्द के होगे। मैं चाहूगी तो हीरोइन हीरो से मिलेगी वरना नही और यह हीरोइन न शादी-शुदा हो न कुआरी हो, न रखी हुई हो न छोडी हुई।"

"ऐं! तो तुम पुरुष और स्त्री के बीच की किसी चीज पर उपन्यास लिखने को कह रही हो।"

"हा हा तुम से और लिखा ही क्या जाएगा—लिखो बैठकर।"

सूखाराम जी को काटो तो खून नही। उनके सामने ढेरो कागज रख दिये गये। एक बढिया सी कलम दी गई। पत्नी कच्चे धागे से लटकी तलवार की तरह सिर पर मडरा रही थी।

सूखाराम जी ने एक पल के लिए कलम उठाई। कुछ शब्द लिखे। और फिर कलम की निब तोड दी।

कलावती बौखलाई हुई पास आई। कागज उठाया और पढने लगी। सूखाराम ने लिखा था 'मेरे जैसे व्यक्ति को कलम उठाते देखकर मेरे पात्रो म गरमागरम बहस होने लगी। कुछेक ने आत्महत्या कर ली और जिन्होने नही की उनके लिए मैंने फासी की सजा की घोषणा कर दी है।'

कहते है सोलह कला सम्पन्न कलावती ने इस कागज के पुरजे को बडे एहतियात से सभाल कर रखा है। उसका विश्वास है कि इस पुरजे पर ससार का सबसे छोटा उपन्यास लिखा गया है—और इसीलिए—'लघु उपन्यास' प्रतियोगिताओ मे यही उपन्यास सर्वश्रेष्ठ घोषित होगा। वह किसी प्रकाशक की तलाश मे है जो इस उपन्यास को सही ढग से छाप दे और ऊपर लिख भी दे हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ लघु उपन्यास—यानी श्रेष्ठ उपन्यासो का लघुत्तम।

28

असली बीवी

श्रीमती सूरमा देवी को पता चला था बाल बच्चेदार आदमी पर भी लड़कियां डोरे डालने लगी हैं और वे भी लट्टू होने लगे हैं, तो बेचारी की नींद हराम हो गई। खाना पीना छूट गया। शादी के बीस बरस बाद अब जाकर कहीं आश्वस्त हो पाई थी कि उसके पति श्री असलीचन्द अब यहां वहां मुंह न मार पायेंगे। चारों बेटे जवान हैं, बेटी ब्याह के लायक हो रही है। ऐसे में बाल बच्चेदार आदमी को कौन घास डालेगी। पर अब तो माजरा ही कुछ और हो गया। हर असलीचन्द पर असली का लेबल तो लगा रहेगा पर उनकी खोट और मिलावट की किसी को भनक न होगी। सूरमादेवी ने यह भी सुन लिया था कि इन दिनों जितने भी किस्से हुए हैं किसी ने अपनी बीवी को तलाक नहीं दिया, बाल बच्चों को नहीं छोड़ा—छोड़े भी क्यों, अपना बीबी तो असली ही रहेगी यह सब तो नकली बन कर रह जाएगी। असली, तो खरा सोना है। सोने की बात पर सूरमादेवी को याद हो आया चार उचक्कों के डर से अब हर कोई असली सोना लॉकर में रख देता है नकली का फशन बढ रहा है।

यह सोचकर सूरमादेवी को नकली की महिमा का ध्यान हो आया। उनकी हिचकियां बढ़ने लगी। तभी उसे अपने बेटे-बेटियों का ख्याल आया। वे कमर में पल्ला खोसकर खड़ी हो गई। सोचा अच्छा था छोटी उमर में ब्याह हो गई। इनका मुकाबला करने के लिए अब पूरी टीम खड़ी है। ये अगर ऐसी वैसी हरकत करेंगे तो सारे जासूस इनके पीछे छोड दूंगी हां।

शाम के समय जब असलीचन्द आये तो सूरमादेवी की नकली मुस्कराहट देख भन्नाये। सूरमादेवी ढेरों अखबार के कागजों से लिपटी सिसकियां ले रही थी। असलीचन्द को देखकर उठ खड़ी हुई जोर से बोली, "याद रखना तुमने ऐसा कोई हरकत की तो ?"

उसी दिन से सूरमादेवी ने पति की पूरी खोज खबर रखनी शुरू कर दी। दोपहर को एक लडका खाना देने जाता और जब वह आता तो वह पिताजी की हर हरकत का आखो देखा हाल बताता। एक दिन लडके ने आकर कहा —पिताजी के कमरे मे एक स्टेनो बैठती है। पिताजी उससे हस हसकर बातें कर रहे थे। उसे उन्होंने खाना भी दिया था। यह सुनकर सूरमादेवी का माथा ठनका। अगले दिन वह लच टाइम मे खुद दफ्तर जा पहुची। जा चाहा सब जगह लिखकर रख आये —"ये शादीशुदा हैं—इनके पाच बच्चे हैं। सारे जवान हैं। किसी ने कोई हरकत की तो ठीक न होगा—फिर उसने एक छोटे से पुर्जे पर शादीशुदा का खाना लिखा। नीचे लिखा असलीचद की असली बीबी।"

असलीचन्द शायद किसी मीटिंग मे थे। सूरमादेवी बहुत देर खडी रही फिर लौट आई। मुह से वह असलीचद को कभी कुछ न जताती। यही लगता कि सारा कुनबा उनका कितना ख्याल रखता है।

अगले दिन श्री असलीचन्द सोकर उठे तो सामने शीशे मे अपने आपको देख हैरान रह गये। उन्होंने अपने सिर को टटोला तो पीछे से सूरमादेवी हसते हुए बोली, "आज से तुम दफ्तर माग भरकर जाओगे। सभी शादीशुदा आदमी आगे से माग भरकर रहेगे—"

"ओह नानसेन्स!" कहते हुए श्री असलीचन्द ने अपना सिर नलके की तेज धार के नीचे रख दिया। फिर चिल्लाये, "ये जितनी शादिया हुईं, औरतो को पता था आदमी शादीशुदा है। बाल बच्चेदार हैं। प्रेम अधा होता है न, वह माग का सिन्दूर देखता है न बाल बच्चो की पलटन।"

"हा हा। प्रेम अन्धा होता है। लडकियो को देखते ही आदमियो की आख मे मोतियाबिन्द आने लगता है। मैं सब जानती हू। याद रखो म्यान मे एक ही तलवार रहेगी। यह चमचे छुरिया काटे—ये सब मैं नही रखने दूगी—"

वह चिल्ला रही थी। श्री असलीचन्द आज जल्दी ही दफ्तर चले गये थे। बच्चे माता जी को समझाने लगे, "अपने पिताजी ऐसे नही हैं। उनपर शक मत करो।"

सूरमादेवी के मन मे हर स्त्री की तरह शक की अमरबेल फैलकर हरे भरे बाग को उजाडने लगी। उसने एक बडा सा कागज लिया। उस पर कुछ

लिखकर अडोस पडोस मे भिजवाया। सारी असली वीवियो की एक गोष्ठी वुलाई। वोली, "जिस तरह परिवार कल्याण के लिए जगह जगह नारे लगाये जाते हैं। छोटे परिवार की जगह जगह दुहाई दी जाती है उसी तरह हमे भी कुछ करना होगा—यह देखिये हम इन्ही नारो को देखते हैं—'एक के बाद कभी नही—' दूसरा अभी नही तीसरा कभी नही—नही नही इसमे हम लिख दें दूसरा तीसरा चौथा ब्याह कभी नही। कभी नही—हम एक—हमारी पत्नी एक।

"छोटा परिवार सुखी परिवार, एक ही पत्नी एक ही ससार। असली पत्नी असली प्यार।"

मैंने वीमा कम्पनी से कहा था शादी का वीमा करें अगर टूटे छूटे तो हर्जाना दे पर वे कहते हैं शादी खुद एक दुघटना है—

हा तो बहनो हम चाहेगी हमे असली वीवी कहकर सम्वोधित किया जाय। आज बढती हुई खोट और मिलावट के कारण ही हमे यह दिन देखना पड रहा है। मिलावट के सबसे भयकर परिणाम आखो की मिलावट से होते हैं। आखो से आखें मिलते ही अनर्थ होते ह। हम चाहती है दूध का दूध पानी का पानी हो जाय। आखो से जो आखे मिली हो उन्हे निकाल कर शुद्ध किया जाय।

हमने जव इस घर मे प्रवेश पाया तो पहले हम सबको पडित जी ने हवन म सामग्री की तरह डाल दिया। मन्त्रोचार से हमारी शुद्धि की गई—हम शुद्ध घी की तरह असली हैं।

और उस दिन से वह हर असलीचन्द की नाक मे नकेल डालकर इस रेगिस्तान के ऊट को घर ले जाती है हालाकि वे भलीभाति जानती है कि इस ऊट मे अब भी इतना पानी है कि वह रेगिस्तान मे भी मजे से दिन काट सकता है।

29

एक चूहे के साथ यात्रा

चूहा कितना ही चूहा हो जब वह शेर होता है तो बडे वडो के कान कुतर आता है। फिर भी उसमे एक शालीनता तो है। यदि वह जमीन खोद कर उसके भीतर बिल न बनाता तो शायद जमीन पर आदमी के पाव रखने की भी जगह न होती और वह हमेशा सर पर पाव रख कर यहा वहा की हाकता दिखाई देता। हमने यो तो चूहो से अपनी रक्षा के लिए पक्के सगमरमर के फर्श बनवाये है, दीवारें भी अपने ही किस्म की हैं लेकिन चूहो ने जब हमारे पाव तले से जमीन खिसकाने का दृढ निश्चय कर लिया तो आन की आन मे वे अपने कार्य मे जुट गये। कुछ ही दिनो मे वे भूमिगत होने लगे। ऐसे निश्चय और ऐसे सकल्प वाले व्यक्ति ही प्राय भूमिगत होते हैं। अन्यतम जिन्दगी जीते हैं और अपने सकल्पो को रूप आकार दे देते है। इन चूहो ने जमीन को दीवार के कोनो से खोद खोद कर काम शुरू किया। खोद खोद-कर जैसे वह कोई वास्तविकता उघाडना चाहते हो, दीवारें रेत की है या कही कही सीमेंट की भी। शायद वे खोदकर प्रश्न की शैली को एक नया रूप देना चाहते हो इसीलिए वे अपने हाथ पाव का प्रयोग करते हैं, मुह का प्रयोग करते हैं किन्तु जीभ का नही। आवाज का प्रयोग वे यो भी नही करते। उथल पुथल मचानी भी हो तो उनके हाथ पाव ही इस दिशा मे काफी हैं।

अपने घर मे प्रथम श्रेणी के चूहे जब यहा वहा बच्चो की तरह कूदते फलागते छुपते छुपाते दिखाई देते हैं तो मन मे जाने कैसी कैसी भावना उठती हैं। 'बच्चो की तरह' कहकर इन्हे उपमा हम चाहे दे दें। किन्तु इनके प्रति किसी के मन मे कभी वात्सल्य नही जागा होगा। ममता नही उमडी होगी यही सोचकर सामने ताका तो एक चूहा नन्हे बच्चे की तरह मेरे आचल का किनारा मुह मे डाले करुण दृष्टि से मेरी ओर देख रहा था। और फिर वह एक टुकडा तोड कर वहा से तेजी से भाग गया। मन से चूहे के प्रति एक

प्यार, एक मोह सा उमड आया। चूहे ने शायद मेरे चेहरे के भाव पढ लिए थे और मेरी यात्रा के लिए पडे एक बैग मे वह मेरे सामान का अनिवार्य अग बनकर शायद छुप गया था। मैंने प्रथम श्रेणी सफर का सोचा था लेकिन खाली गाडिया आती जाती देखकर द्वितीय श्रेणी के सफर का तय कर लिया और शाम के समय यात्रा के लिए रवाना हो गई।

रात के समय उस एयर बैग को तकिये की तरह सिर के तले रखा तो वही कुछ उथल पुथल महसूस हुई। सोचा यह उथल पुथल मस्तिष्क मे ही हो रही है पर फिर थोडी देर मे कुछ दौडने भागने की आवाज़ हुई। मैंने सोचा शायद पेट मे चूहे दौड रहे होगे। हमारे सभी सोचने के तार सिर से जुडे होते हैं। इसीलिए यह खलबली सी मच रही है लेकिन यह तो ऊधम सा होने लगा। लगता है यह चूहे कान से ही निकल कर सीधे एयर बैग मे जा छपे होगे।

जी! क्यो नही! इन्हे घुसने के लिए न कही द्वार खटखटाना पडता है, न ही इजाजत लेनी पडती है। यह न तो खत लिखकर ही अपने आगमन की सूचना देते है न कोई तार भेजते हैं। यदि यह कोई भी काम सूचना देकर करते तो हमे कितनी सुविधा होती। इतना ही बता देते कि इन्होने कौन से कपडो को कुतरने का कार्यक्रम बनाया है तो इन्हे इतने ढेर कपडो मे मुह मारने की जिल्लत न उठानी पडती लेकिन वे तो कर्म मे ही विश्वास करते हैं। फल की ओर वे ताकते भी नही सिर्फ उसे व्यर्थ समझ कर कुतर डालते है ।

चूहो को कोई मोह नही। वे निर्लेप भाव से कपडा कुतरते हैं। उन कतरनो से उह अपनी पत्नी या बाल बच्चो के कपडे नही सीने। न ही वे इसका भोजन करेंगे। प्याज के लच्छो की तरह कपडो की कुनरन बडे सलीके से हमारे सामने रख देंगे। उन्हे नाम पाने की भी लालसा नही। वे सम्मुख आने से कतराते हैं। किस चूहे ने कौन से वस्त्र कुतरे इसकी ओर से भी वे बेपरवाह हैं—वे सब चूहे है सिर्फ चूहे। इनमे न कोई पिंकी न टिंकू न कुकु सिर्फ चूहे होना ही उनके लिए काफी है। हाय हम मे भी यह प्रवृत्ति आ पाती। हम भी सिर्फ मानव रह पाते। नाम ने हमे एक दूसरे से उतना अलग कर दिया है कि हम हर व्यक्ति का नामो निशान मिटा देने के लिए उतारू बैठे हैं—सोचते सोचते झन्नाहट होने लगी—

एयर बैग मे हलचल वैसी ही बरकरार थी और समझ नही आ रहा था

मे कुछ धा

"प्रिय

"जैसे

ऐसे ही मु

नकुल, सह

सकता है,

लगते हैं।'

कृष्ण

हू।"

तव र

उद्घोषण

हो? क्य

पर चार

"हा

वोले, "

किनारा

इध

स्थान ढू

बनाकर

अपना न

पुन: व

कर ची

निकलने के बाद किसी ऊची मजिल की तलाश मे भटकती है। और फिर उन्ही ऊचाइयो से छलाग लगाने को विवश कर दी जाती है। जब तक भारतीय कन्याए चूहो से यह सीख नही लेती तब तक उनके मोक्ष और मुक्ति के अभियान व्यर्थ हैं। समाज को गालिया देना फजूल है। शेर का जाल काटने का साहस सिर्फ चूहो मे ही मिलता है। वह अचानक किसी पर उछल पडे तो सम्मुख खडा व्यक्ति चीख पडेगा। इससे पहले कि दूसरा व्यक्ति अपने अस्त्र सभाले चूहा अपना आतक फैला कर वहा से गायब हो जाता है। यह तो हथगोले की तरह फेंका जाय तो हथगोले से ज्यादा शक्तिशाली सिद्ध हो—सिर्फ इसकी पूछ को मुह से सेलो टेप से चिपका दिया जाये तो!

सोचते ही मैंने एक गहरी सास ली। रात का सफर है, पूरे डिब्बे मे सिर्फ दो व्यक्ति हैं एक मैं, एक बाल बच्चेदार और एक टिकट चैकर। ऐसे मे चूहे को बैग से बाहर नही निकाला जा सकता। मैंने उसकी टिकट नही ली और मेरी दृष्टि मे उसकी टिकट न लेना उतना ही बडा अपराध है जितना कि हमारा आपका बिना टिकट यात्रा करना। बाल बच्चेदार व्यक्ति के पके बालो पर खिजाब लगा हुआ है जो उसकी पकती उम्र मे दिल पर लगे खिजाबनुमा जवानी का परिचय दे रहा है। उसने अपना प्रेम का पहला पर्चा वह चार साल का बालक मेरे पास भेजकर अपने आने और मेरे पास बैठने के लिए पुल बनाने का काम शुरू किया है। मेरे पास बहुत दिनो से एक सेलो टेप का बडल पडा है। पर्स की जेब मे। मैंने हाथ डाल कर वह टेप थोडा खोलकर एयर बैग मे डाला है। मैं जानती हू चूहा अपनी थूथनी से इसकी गोद चाटेगा और चिपट जाएगा फिर पूछ पटकेगा तो और गोल हो जाएगा और फिर फिरकी की तरह बैग मे घूमता रहेगा मेरा हथगोला तैयार हो चुका है। यदि भारत मे मेरे जैसी चिन्तन वाली कुछेक बहनें पैदा हो जाय तो वे चूहो के बिल के बाहर ही सेलो टेप लेकर बैठ जाय और चूहे के बाहर निकलते ही उसका हथगोला तैयार करने का काम शुरू कर दें। वे अपने लायक चूहे पैदा न कर सकें तो कोई बात नही लेकिन ऐसे ऐसे हथगोले जरूर तैयार कर सकती है जो उनके लिए एक अस्त्र का काम दे सके और यात्रा के लिए उनका बेधडक प्रयोग कर सकें।

आपने अब तक प्लास्टिक के चूहे या चूहेनुमा लोग साथ ही शायद सफर किया होगा। बिल्कुल खालिस असली और है, जिन्होंने

साडिया और पॅटे कुतरने का रिकाड कायम किया है आजकल देखने को भी नही मिलते। फिर भी आप निराश न हो। चूहो की बढती हुई इस नस्ल को हम आपके थैलो मे डालकर, आपकी जेबो मे भरकर यात्रा का अमर साथी बना सकते हैं। इसे पाकर आप अपने आप मे नई चुस्ती फुर्ती महसूस करेंगे। यानी खोई हुई ताकत वापस पाने के लिए यात्रा ऐसे चूहों के साथ कीजिए जो आपके हाथ मे हथगोले की तरह भी रहे और चूहे की तरह भी। आप जब चाहे उनका मुह बद करवा सकें।

अनेकानेक वैवाहिक विज्ञापन एजेन्सिया पिछले कई महीनो से हमारे इन नये प्रयोगो पर ताक लगाये बैठी हैं। हम इन चूहो को कुछेक लोगो के साथ यात्रा पर भेजकर उनके अनुभवो का एक रिकार्ड स्थापित कर रहे हैं। प्रथम सूचना के आधार पर मैंने यह अपनी रिपोर्ट दे दी है तथा चूहे के साथ यात्रा का वर्णन भी इसीलिए किया है। फिर भी अभी इन चूहो का हुलिया कुछ ठीक करना होगा ताकि यदि इन्हें एयर बैग मे डालकर आपके कोट पेंट की जेबो में भरना चाहे तो यह लक्ष्मी की तरह चुपचाप पडा रहे। राहखच तो बने पर दीवाला न पीट दे। आप से हेलो हाय करने की विनम्रता इसमे आये।

सच मानिये यह विनम्रता एक दिन मे नही आती। इसके लिए प्रशिक्षण जरूरी है। आप जिन चूहो के साथ यात्रा करते हो (वे चाहे चूहे हो चाहे चुहिया) उनके आचार व्यवहार की ठोक पीट अत्याधिक जरूरी है। हमारे यहा हरेक चीज की मरम्मत होती है। यहा तक कि हाथ पाव दात तुड़वाने के लिए भी आपको बाहर नही जाना होगा।

और हा अगर वे चूहे अब तक शेर हो चुके हो तो भी मत घबरायें। हमारे पास वह मन्त्र है जो चूहे को शेर बना सकता है और शेर को चूहा भी। यात्रा करते समय यह मन्त्र आपके मुह मे रहे तो आपके शरीर मे धरती का सा गुरुत्वाकर्षण आयेगा। चूहा एप्पल की (उपग्रह) की तरह बस आपके इर्द गिर्द चक्कर काटेगा और आस पास क्या हो रहा है, क्या होने वाला है। इसकी तसवीरें भेजता जायेगा।

दुर्गुणी की आख

दुगु णी जी को आखें यो ही बैठे वठे कमजोर हो जायेंगी, यह उनकी सोच से परे की चीज़ थी। वैसे उन्हे आखो की कमज़ोरी का एहसास भी न होता, लेकिन उस दिन जव वे धर्मचन्द की दुकान से सुइयो का पत्ता लेकर आईं और सुईं मे धागा डालने लगी तो हैरान रह गयी। पलट कर धमचन्द की दुकान पर पहुची और चिल्लाई—'अरे धर्मचन्द, बेईमानी की भी हद होती है। मैंने सारी सुइयो को टटोल डाला। अये। एक मे भी छेद नही। हाय राम, सुइयो मे भी मिलावट की वात सोची तो क्या सोची लोगो ने। नोक घिसी होगी तो वह तो और तीखी हो गई। वस यही सोचा, इनके पीछे छेद ही व द कर डालें लो देखो सारी सुइया। एक मे भी छेद नही मैंने एक एक मे धागा डाल कर देखा। अरे, छेद होता तो धागा आरपार हो जाता, उह।'

धमचन्द भन्नाते हुए वोला, "उस दिन सामने वाले के यहा मटका पटक गयी थी कि उसमे छेद है। आज यहा आई हो तो छेद नही है कि दुहाई लेकर। क्या जमाना है ।"

दुर्गुणी अव और जोर से वोली, "अये उस मटके मे पानी डालना था, धागा नही। इसीलिए वापस कर गई थी। अव सुई मे मुझे धागा डालना है पानी नही । देखो तो छेद के विना की यह चीज़ उह।" कहकर दुर्गुणी धमचन्द को देखने लगी कि पास ही खडे परमानन्द जी जिन्हे आधी अधूरी वात सुनकर ही वोलने की आदत थी, छेद पर अपने एक्सपट कमेंट देते हुए वोले, "क्या जमाना है, पहले लोग छेद वाली चीजें मुह पर मारने दौडे आते थे अव विना छेद वाली चीज़े फेंकने लगे है। अजी छेद तो दुगु ण है। नाव मे होगा तो नाव डुवो देगा। दिल मे हो तो दिल डूवा। मैं भी तो अपनी पत्नी के गाल पर पडते गढ्ढे पर ही गढ्ढे मे गिरा हू। अये धर्मचन्द जी। वे फिर

जाकर नाक कान मे छेद करवा आई और फिर मेरा धन डूबता गया। मेरी तो पत्नी के हाथो मे जैसे छेद है छेद ।"

दुर्गुणी ने परमानन्द उर्फ सनकी लाल को लाल आखो से देखा तो उनकी घिग्घी बध गई। सामने धर्मचन्द अब तक चौबीस सुइयो मे धागा डालकर खडे हुए थे। दुर्गुणी से बोले, "लगता है आखें कमजोर हो गई हैं। सुइयो के छेद तक नही नजर आते। यह लो जैसे उस मटके वाले ने एक एक मटका पानी का भर के दिखाया था, तभी आप ले गयी थी, मैं एक एक सुई के छेद से धागा आर पार करके देता हू फिर शिकायत न आये यह लो यह लो "कहते हुए उन्होने सारी सुइयो से धागे खीच निकाले और फिर काले कागज मे सारी सुइया छद करके दुर्गुणी की तरफ मुस्कराते हुए ऐसे बढाईं जैसे किसी ने कत्था चूना लगाकर पान की गिलौरी दी है। दुर्गुणी चुपके से सुइया लेकर घर जा पहुची। फिर धागा डालने लगी फिर छेद नदारद। धागे की नोक थूक से गीली करती, उगलियो से सिवइयो की तरह मरोडती, पर नामुराद धागा था कि यहा वहा भटकता फिरता था। उसे लग रहा था कोई बाधा दौड मे से जैसे किसी को सुरग से निकलना तो है लेकिन निकल नही पा रहा।

अब दुर्गुणी ने धागे को थोडी और थूक लगाई। सुई की तरफ ऐसे बढाया जैसे कोई शिकारी अपना तीर साध रहा हो। या कोई जादूगर आग के गोले से निकलने की कमर कस कर रहा हो—पर नामुराद सुई का छेद ही नही। वे अपने बेटे पप्पू से बोल उठी—तूने तो आख की डाक्टरी पास कर ली, पर आख की जाच परख न हुई। मेरी जण आख देख। लगता है, कुछ इन्ही मे खराबी आ गई है, वरना यह कैसे हो गया कि सुई मे छेद हो और मुझे छेद भी नजर न आवे। अये। मैं तो कल से देख रही हू, पीतल की छलनी के भी सारे छेद बन्द हो गये हैं। बाहर जो तेरे पिता ने जालीदार सीमेन्ट की टुकडिया लगवाई थी, वह भी सीधी सपाट हो गई हैं। देख तो मेरी आख को कुछ हुआ है या सारी चीजो के मुह बन्द हो गये है।" और वह सिर थाम कर बैठ गई। उनका बेटा आख का डाक्टर हो गया, लेकिन उनके लिए वही पप्पू ही था।

इसीलिए अगले दिन पप्पू ने उन्हे कह दिया—"दो दिन बाद आख टेस्ट होगी।" दुर्गणी बोली"—मैंने आठवी जमात तो पास कर ली बेटा। अब कौन

से टेस्ट दूगी 'तू ऐसे ही देख ले। कित्ती कमजोर है आख पर लिखा होगा। मैं अब कोई टेस्ट न दूगी हा।" लेकिन उनका पप्पू अगले दिन उन्हे जैसे तैसे मनाकर अस्पताल ले गया, तब उसे ध्यान आया, आस पडोस की औरतो ने खूबसूरत डिजायनदार चश्मे चढा रखे हैं। अब वह भी उनमे शामिल होगी। दुर्गुणी ने सोचा—सोने के फ्रेम मे शीशे जड़वा लूगी। आखें कमजोर हुई तो उन्हे कुछ तो फायदा मिले। पति रामरग के पास ढेरो सोना था। दुर्गुणी ने कान मे छ मुर्किया पहन रखी थी। नाक मे सोने का लोग था। आख का काटा भी उसने सुन तो रखा था, लेकिन आख मे छेद करवाकर वह कैसे आख का काटा पहनती। अब मौका मिला था तो सोच लिया, पप्पू से कहेगी— सिर्फ सोने के चश्मे मे ही फिट होंगे आख के शीशे। उह। आखें भी क्या बला हैं। भूखी रहती हैं, लेकिन कमजोर नही होती। कमजोर होती हैं तो नजर ही नही आता कि क्या हुआ। यो उसे आठवी पास करने के बाद से ही मस्ते उपयास पढने का चाव हो गया था पर आखें किस किस चीज से कमजोर होती हैं, यह वह न समझ सकी।

अब टैस्ट की घडी सिर पर आ गई। आख पर चश्मा चढा कर ऐसे रख दिया कि जैसे कोई स्टैण्ड हो जहा अब चीजें टागी जायेंगी। (वह) पप्पू उस चश्मे मे एक एक करके शीशे चढाता निकालता। सामने का लिखा अ व स द ज साफ होता जा रहा था। बहुत स्पष्ट वाह वाह। कहकर वह खुशी से उछल पडी। जैसे कोई बहुत बडा टैस्ट दे दिया हो। डाक्टर ने अब जैसे टेस्ट के नम्बर दिये हो। शायद तीन और चार नम्बर के शीशे थे। एक पर्चा बना कर पप्पू ने उन्हे घर भिजवा दिया।

अगले ही दिन सोने का पानी चढा चश्मा दुर्गुणी की आख के लिए आ गया था। दुर्गुणी चाहती तो थी कि चश्मे का भी किसी से उदघाटन करवाये पप्पू कह रहा था, नजदीक और दूर का चश्मा अलग अलग बनेगा। दूर वालो को भी नजदीक लाने को कितना अच्छा तरीका है। पप्पू चश्मे के शीशे बार बार ऐसे पोछ रहा था जैसे चमका रहा हो, या तेज कर रहा हो। दुर्गुणी ने भी अपनी आखें बार बार पोछी। कान पोछे। पप्पू ने दो हाथो से ऐनक उनकी तरफ ऐसे बढाई जैसे किसी अमूल्य वस्तु को तश्तरी मे लाकर पेश किया जाय। दुर्गुणी ने पप्पू के आगे मुह झुकाया और ऐनक को सिर आखो पर धारण करने को बढी। आह! कमानी ने दोनो कान कस कर पकड

लिए थे। आखो पर जैसे फ्रेम करा दिया हो। अब उनमे धूल पडने का भी इतना खतरा न रहेगा। नाक पर चश्मा ऐसे फिट बैठा था जैसे यह नाक इसी चश्मे के लिए ही बनी थी।

दुर्गुणी ने अब चश्मा टेस्ट करने का सोचा। सामने देखा तो आगन मे सीमेट की जालीदार झरोखो मे एक एक छेद साफ दिखाई दिया। आगन के बाहर सडक पर देखा—जेब्रो क्रासिंग की सफेद मोटी लकीरें उभर कर साफ नजर आने लगी। हर आदमी का चेहरा साफ सुथरा, हर आदमी ने आज ही जैसे धुले कपडे पहने हो। दीवारो पर नई सफेदी हो गई—यह सब एक ही रात का चमत्कार है। जहा सब तरफ एक जाला सा नजर आता था, वह हट गया। आज तक उसे दूर से आते हुए आदमी के आख कान नाक कभी न नजर आये। लम्बे छोटे बालो से ही अन्दाजा लगा लेती थी कि आने वाला पुरुष है या स्त्री। लेकिन जब से समानता के अधिकार मागने वालियो ने सिर के बाल भी पुरुषनुमा करा लिए थे, तब से बेचारी की यह पहचान भी जाती रही। वह आगे पीछे देखकर ही सामने वाले की नमस्ते का जवाब दिया करती थी। पहले हर आदमी आधुनिक चित्रकला का नमूना था, अब वह (चाहे कितना ही गदा हो) उसे साफ दिखाई दे रहा था। दुर्गुणी खुशी से फूली न समाई। पप्पू भी खुश था कि आज पहली बार उसे अपनी मा की सेवा का मौका मिला था। उसने मा से पूछ ही लिया—"सामने का पेड दिखाई दे रहा है, मा।'

"हा, हा, उसके पत्ते दिखाई दे रहे है, पत्तो की धारिया भी दिखाई दे रही है रे ।"

'ऐं !" पप्पू को लगा मा की आखें जरूरत से ज्यादा तेज हो गयी हैं कि तभी गौर से देखा—अब वह नजदीक का चश्मा साफ करके आख पर चढा रही है पप्पू तुरन्त बोला—"ओहो, पहले उस चश्मे को उतारो, तभी तो दूसरा चढेगा ।"

"अये हा, एक ही नाक जो ठहरी। वरना दो होती तो एक पर पास का चश्मा लटका रहता

पप्पू अभी वहा से गया भी न था कि दुगु णी बोल उठी—"अब ले आना कर्मचन्द की दुकान की दालें पत्थर बीन बीन कर, दाल और पत्थर अलग अलग तुलवाऊगी अब तक वह लूटता रहा है। पत्थरो की कीमत पिछली दालो से घटा घटा कर ही पैसे दूगी ।"

31

दुर्गुणी का पाव

पिछले दिनो दुर्गुणी ने जाने कैसी दवाई खाई थी कि शरीर फूलता जा रहा था। कभी गाल फूले होते तो कभी आखें सूजी हुई। दुर्गुणी अपनी शक्ल शीशे मे देखती तो हसी आ जाती। और किसी के गाल इतने फूले होते तो शायद मुक्का मारकर उन्हे पिचका देती लेकिन यह तो मोटे हो चुके थे जैसे दूध मे भीगी डबलरोटी हो या तीन चार दिन पडे आटे की रोटी हो। बार बार अपना चेहरा देखती। लगता था ज़रूर कही से उसके भीतर हवा भरती चली जा रही है। बैठे बैठे उसे लगता वह पहिया बन गई है उसे फुला दिया गया है अब वह गोल गोल चक्कर काटेगी। कभी मोटर का पहिया कभी स्कूटर का पहिया—हाय राम सोचकर वह फिर मुह फुला कर बैठती तो सोच लेती अब तो गाल ऐसे फूल चुके है कि मुह फूला हुआ है या नही यह अन्दाजा भी नही लगाया जा सकता, वाह !

अब वह खडी होती तो अपने आपको सभालती। देह फूल गई थी लेकिन पाव वही थे। उनमे सूजन आई तो ऐसे कि ऐडियो के ऊपर का हिस्सा फूला हुआ था टाग और पैर को जोडने वाली हड्डिया फूली हुई थी। दुर्गुणी खडी होती तो पैर जैसे भार सभालने से इन्कार कर देते। जाना कही और चाहती थी लेकिन पैर कही और मुडे हुए होते। वह अपने पैरो को सकेत देना चाहती थी पर पैर कहा सुनते है किसी की। वह तो तू तडाक जवाब देना ही जानते हैं। बस बात बेबात पर जवाब देने लगते। आज सुबह से पाव का दर्द बढ गया था जब से उनका बेटा डाक्टर पप्पू दौरे पर गया था उन्हे एक भी बीमारी न थी। आज वह वापस आने लगा था तो बीमारी भी आने लगी। अरे हाय रे ! कहकर वह रोने लगी। दर्द भी जाने कैसे उठता। पैर के ऊपर के हिस्से मे दर्द की लहर सी उठती सारा शरीर झनझना जाता था। जैसे कोई दर्द को छेड रहा हो—फिर वह दर्द आतो मे से होता हुआ मस्तिष्क मे जा पहुचा है। हाय क्या होगा ? कहकर वह अपने पाव को देखने लगी।

इतना नीचे होने पर, हर वक्त जमीन चाटने पर भी देखो तो कैसे ठाठ से रहते है। दो पल मे ही सारी जमीन नाप लेते हैं। सारे शरीर का बोझ ढोना इ हे अच्छा लगता है वैसे अगर आदमी भी चलते समय अपने दोनो हाथ, पाव के साथ जोडकर चलने लगे तो शायद वह ज्यादा तेज़ चले लेकिन हाथ तो कोमल है—अगर मेरे पाव को कुछ हो गया तो ?

तभी दुर्गुणी को अपनी आखो के आगे लाठी टेकते वैसाखी लगाये लोग दिखाई दिये। उसने घबराकर दोनो हाथो से मुह ढाप लिया ज़ोर से रो पडी "मेरे पाव की रक्षा करो भगवान ! यह पाव कभी गलत रास्ते पर नही चले। इन पावो पर मैं अपने आप खडी हुई। अच्छा पति मिला, पुत्र मिला, धन-धान्य, रूप सम्पन्नता सब मिला। लेकिन पाव ही न होगा तो यह सब व्यथ है। पाव के बिना तो कोई चल ही नही सकता, कुछ हो ही नही सक्ता। कायदे से देखो। पेड की तरह तो यह पाव जड हैं। जडो की तरह इनमे ही पानी डालो तो पूरी देह हरी भरी रहे। शुक्र है पाव मिट्टी मे जकडे हुए नही थे वरना कितनी मुश्किल होती। पर हाय मिट्टी मे जकडे होते तो अच्छा था। खराब अच्छे तो नजर न आते। अगर तगडाकर चलना पडा तो —हाय। सोचकर उनके पाव का दर्द और बढ गया। अब वह लौट गई तो लगा दर्द सीधी लकीर की तरह पाव से लेकर आख तक लम्बा है। रह रह-कर टीस सी उठनी। पाव को गौर से देखने लगा पाव थोडा फूल रहा है फिर पिचक रहा है—फिर फूल जाता है, उन्हे हैरानी हुई। जी चाहा सबसे कहे देखो देखो पाव सास ले रहा है पर फिर चुप हो गई। कहे तो किसे कहे। बेटा डाक्टर हो तो बीमार होकर भी तसल्ली तो रहती है। आये तो सही पप्पू। हो सकता है पाव की हड्डी गल गई हो। कौन कहे कोई फोडा हो। आजकल तो हडियो पर फोडे निकल आते है—जाने कैसे कैसे रोग आ गए है। इलाज निकले नही और रोग दिनोदिन सवार हो रहे हैं। पहले भली प्रकार रोग हो, डाक्टर इलाज इन्जेक्शन निकाले तभी तो यह रोग प्रचलित हो। हर ऐरे गैरे को भी अब बडे से बडा रोग होने लगा है। हाय रे पप्पू ! मैं मर गई रे ! हड्डियो के डाक्टर को दिखा दे। कहकर वह चुप हो गई। फिर सोचा अगर हडियो का डाक्टर सिर्फ हड्डियो का ढाचा मात्र होता या फिर ? हा हड्डिया देखने के लिए पहले तो पूरे शरीर की खाल अलग करके किनारे पर रख देता फिर हरेक हडडी उलट पलट कर देखता और उनमे जो

बीमारी होती उस हड्डी को निकाल बाहर करे, सोचते सोचते उन्हे लगा डाक्टर न उनकी पाव की खाल खीचकर अलग करने की कोशिश की है तो पूरी देह की खाल की सीवनें उधड गई हैं। सारी खाल खीचकर ताक पर रख दी है। अब हड्डियो को मोडकर सिर्फ पाव की हड्डिया देखने के लिए पाव को कुर्सी पर टिका दिया है । उस पर लगा अन्तडियो का नीला गुच्छा, उसमे सफेद गोरी चिट्टी हडिडया झाक रही है । वाह क्या कलर स्कीम है । उसमे लाल खून तेजी से दौडता भगता दिखाई दे रहा है । डाक्टर ने एक हडडी नकचूने से निकाल फेकी है फिर टाग की हडिडया, जो पाव के साथ जुडी हैं, मोडकर किनारे पर रख दी । अब उस निकाली हुई हड्डी के माप की नकली हडडी वह पाव मे लगाने की तैयारी कर रहा है कि तभी कौआ आकर सारी खाल चोच मे डाल गया । दूसरे कौए ने अन्तडियो के गुच्छे को नोचकर उसे ऐसे मुह मे डाल लिया जैसे नूडल्ज खाने लगा हो—

हाय रे अब क्या होगा—दुर्गुणी चीख पडी फिर सहसा अपने आपको सही सलामत पाकर उसने भगवान का लाख लाख शुक्र किया। खडी होकर दोनो हाथ जोड प्रार्थना करने ही लगी थी कि पैरो ने फिर जवाब दे दिया । दुर्गुणी चीख पडी कि तभी पप्पू आ पहुचा था ।

अब दुर्गुणी ने अपना सारा दुख दर्द रो-रोकर सुनाया और अगले ही दिन हड्डियो के डाक्टर के पास जा पहुची । अस्पताल मे ही रास्ते मे देख लिया था, 'मालिश की जगह' । वहा डाक्टर रूपा खडी थी। दुर्गुणी की पुरानी पहचान की थी पर दुर्गुणी ने जान कर उसे देखकर अनदेखा कर दिया। पप्पू से बोली—"यह तो डाक्टरनी बनी फिरती थी, है तो मालिशवाली —देख तो" । पप्पू हस पडा, "यह भी डाक्टर होते हैं, डाक्टर ही हर तरह का इलाज करते हैं उनके साथ और सहायक भी होते है मा—चलो तुम्हे डाक्टर शकर के पास ले चलूगा ।"

"हा हा मैं मालिशवालो को ऐसा मौका क्यो दू । मैं डाक्टर की मा हू आखिर।" और वह बडे गर्व से अपने बेटे को देखती । पप्पू उन्हे डाक्टर साहब के पास ले गया । वही बैठे ही बैठे पाव का एक्सरे हो गया । एक पल मे फिल्म धुल भी गई और अब पूरे पाव को डाक्टर हाथ मे लेकर मुआयना कर रहा था । दुर्गुणी को ध्यान आया यो तो कभी कोई पाव न छुए—और अब पाव को हाथ मे ले लेकर बैठे हैं वैसे अगर पाव छूने की तरकीब कुछ ऐसी ही

हो जाती—उसे सहसा अपनी मास के गदे कीचड सने पाव ध्यान आये। वह पूजा पाठ करके लौटती तो पाव कीचड सने होते पर उसे छूने पडते थे इसीलिए उसका जी चाहता सिर्फ छुए ही क्यो जाये, धोकर क्यो न छुए ? फिर ध्यान आया और अगर वह चरणामृत लेना पडा तो ? सोचकर ही उसे उबकाई आने लगी। डाक्टर ने देखा तो पूछा, "दर्द के साथ और क्या होता है ?"

पप्पू बोला, "यह उबकाई आती है—"

"न नही सिर्फ दर्द होता है। एक लहर सी उठती है। और ऊची तान की तरह बढती जाती है—यह देखा यह उठा दर्द। अये हड्डियो के ऊपर खाल न होती तो बता देती कहा कौन सी हड्डी मे दर्द है। यह खाल पारदर्शी होती तो अच्छा था न।"

डाक्टर ने डाक्टर पप्पू की तरफ देखा। पप्पू मुस्करा कर बोला, 'ज़रा ज्यादा सोचती हैं न, इसीलिए हर बात को इतनी गहराई से देखती हैं।" डाक्टर बोल उठे, "बस सोचना बद कर दें, पर मे कुछ नही है।" उन्होंने गोलिया लिख दी और वहा से चले गये।

दुर्गुणी धक से रह गई। घर पहुची तो बोली, "तो क्या मैं झूठ बोलती हू—इस उम्र मे आकर झूठ बोलू गी ? अरे दद होता है तभी तो कहती हू—मुझे क्या शौक है डाक्टरो के पास जाने का—अरे देखो फिर दद हो रहा है —देख देख पप्पू—"

पप्पू बोला, "उनका मतलब था पाव मे कुछ नही।"

"ऐ हडिडया भी नही यानि पाव पाव ही नही ?" दुगु णी फिर बोली

"है ! अम्मा। उसका तो पूरा फोटू है न। उनका मतलब है यह दर्द थकावट से है, गोली खाने से चला जायेगा।

दुर्गु णी ने गोली खा ली। दद चला जाये इसके लिए दरवाज़ा खोल दिया और फिर मुह बन्द करके मन मारकर लेट गई। उसे लग रहा था जो गोली उसने खाई है वह उसके सारे शरीर मे सिर से पाव तक फुदक रही है। यह कीडे मारने की दवाई की तरह है। भीतर क सारे दद पर यह कीटाणुनाशक औषधि अपना असर कर रही है। फिर जाने भीतर कोई उथल पुथल शुरू हो गई। बाहर आगन मे नन्हे बच्चे छोटी गेंद से खेल रहे थे। गेंद तेज़ी से टप्पा खा खाकर फिर उछल रही थी। दुर्गु णी को लगा उसके भीतर ही वह

गोली भी गेंद की तरह हो गई है सिर से लेकर एडी तक वह गोल टप्पा खाकर उछलती है फिर तड से सिर पर जा लगती है । सहसा बाहर की गेद से कमरे की खिडकी का काच टूट कर चूर चूर हो गया था । दुर्गुणी को लगा कही भीतर फुदकती भागती गोली भी कोई विस्फोट न कर बैठे—वह उस गोली की हरकतो को महसूस करती रही ।

और तब सहसा उसे नाक के नथुने पर दर्द महसूस हुआ । उसने देखा नाक के बायें नथुने पर ठीक नथिन की जगह पर ही एक सफेद गोल दाना उभर आया था ।

32

बवलू का केक

बहन जी जब भी केक बनाने की विधि का बखान करती, उसके मुह मे पानी भर जाता। पिछले छ दिन से वह केक की जगह बवलू का केक बनाने की विधि पर जोर दे रही थी। ज्यो ही वह बबलू का केक बनाने की विधि बताने लगती, कोई न कोई अडचन आ जाती। एक बार उन्हे किसी का बुलावा आ गया तो दूसरी बार उनकी अपनी तबीयत खराब हो गई। इस बार वे बवलू का केक बनाने की विधि बताने पर कटिबद्ध थी। पाक कला की कक्षा मे प्रौढा तथा युवतियो को वे रोज नई चीजें बनाने की विधि बताती थी। आज वे बवलू का केक बनाने का नुस्खा बताते हुए बोली—"केक की *आवश्यक वस्तुए तो आप सब को पता है यानी मैदा, अण्डे, मक्खन, ओवन,* चीनी वगैरा वगैरा लिखिए लिखिए।"

सबने सामग्री की मात्रा लिखी तो बहन जी फिर बोली—अब बवलू का केक।

लेकिन इसमे मैदा चीनी की मात्रा तो लिखवा दी, बवलू कितने—एक महिला ने पूछा।

"एह बबलू। आजकल तो दो या तीन बस का जमाना है। अत इसकी गिनती पर मैं टिप्पणी नही दूगी। हा तो अब आप बारह अण्डे सामने मेज पर बाउल मे रखिये। इधर मैंदे मे मक्खन मिलाइए। बबलू ने जो अण्डे तोड कर उसका सारा मलीदा मेज़ पर कर दिया है, उसे साफ कर लें। अब हाथ धोयें। अब आप एक बड़े बर्तन मे पडे मैंदे और मक्खन के बीच से बबलू के हाथ निकालें तथा उसे सीधे नल पर ले जाकर हाथ धुलाए। रास्ते चलते वह अण्डो वाली फिसलन भरी जगह पर अगर फिसला हो तो उसे उठाकर नहला धुला दें। गर्मियो मे आप बबलू को हर कदम पर नहला सकती हैं। वह भी प्रत्युत्तर मे आपको दस पन्द्रह बार नहलायेगा, इससे घबराए नही। हा,

सर्दियो म एहतियात बरतनी पडेगी।

हा तो अब बबलू को साफ करके चीनी पीसिये। अब फिर बाउल मे, यानी वतन मे पडे मैदे और मक्खन की ओर ध्यान दीजिए। उसे मिला कर फेंटिये। अब अपनी दायी ओर पडी चीनी की ओर देखिए। बबलू ने जो सारी चीनी नीचे गिरा दी है, उसकी ओर ध्यान दें। अगर आपने बबलू को थप्पड दे मारा तो वह इसी चीनी पर लोट लोटकर ऊचा ऊचा चिल्लायेगा। उसके सारे चिकने सुन्दर चेहरे पर चीनी लगी देखकर मक्खियो की सम्भावना बढती है। अत ध्यान दें। उसे फिर से नल के पास ले जाकर उसके हाथ और मुह पर लगी चीनी धोकर उसे किनारे पर बैठने को कहे। लीजिए अब अण्डे फिर से लाइए। ओह अण्डे तोडने के लिए अगर बबलू ने निशाना लगाकर ही तोडने की ठानी है तो उसे बताइए निशाना कहा लगाए। अण्डे को कैसे तोडे ? लेकिन बबलू मे धैय नाम की कोई चीज़ नही है। अत उसके अण्डे फेंकने पर खुद को दूर रखिये। अब फर्श साफ कीजिए। क्योकि पाव फिसलने के लिए अण्डे की जरदी सफेदी दोनो एक समान फायदेमन्द है। इससे बिना स्केट्स के स्केटिंग भी हो जाती है तथा हड्डी पसली भी टूट जाती है। फश साफ करके हाथ धोने के बाद अब आप देखेंगी कि मैदा और मक्खन मेज़ पर औंधे मुह पडा है तथा बबलू मेज़ के नीचे से झाक रहा है। मेज़ को साफ करते समय ध्यान रहे कि बबलू का मूड ठीक हो, उस पर ज़रा भी मैदा न आये। अब आप पुन मैदा लाइए और उसमे मक्खन कटोरी भर डाल कर बेकिंग पाउडर डालिए। अण्डो के करम फूटे हैं, इसीलिए तो लीजिए बबलू ने पूरे एक दजन अण्डे की ट्रे उठाकर नीचे पटक दी। जीवन भर उसे उठा पटक करनी है। उसका पहला सबक वह घर मे ही सीखता है। बाहर कही से मार खाकर आए तो आपको अच्छा न लगेगा। आपके होते हुए उसे किसी और की मार क्यो खानी पडे। लेकिन आप हाथ मत उठाइए। बबलू को प्यार से समझाइए। अब पुन एक किलो चीनी पीस डालिए। इसे चटपट मैदे और मक्खन मे मिलाकर अब अण्डे एक एक करके, अगर अब तक न टूटे हो तो आप अपने हाथो से स्वय तोडिए। हो सकता है आज तक आपको अण्डा तोडने का सौभाग्य न मिला हो। जहा पति पुत्र मौजूद हो वहा ऐसी नौबत कम ही आती है। वे स्वय फेंककर, मारकर या फिर प्यार से ही अण्डे तोडने मे विश्वास रखते है। अत अण्डे का एक सिरा या तो चम्मच से या

कटोरी से हल्के से बजाकर देखिए। कौन सा स्वर निकलता है, कौन सी सम्भावनाए उभर कर आती है भीतर, अण्डे के भीतर का मुर्गापन क्या कह रहा है मुर्गा है या मुर्गी अगर अधिक उत्कट इच्छा हो तो अण्डे का अल्ट्रासाऊड (यानी ऐसा एक्सरे जिसके द्वारा सारी सम्भावनाए पारदर्शी होती है) करवा लें। लेकिन उससे आपको क्या लाभ। लीजिए अण्डे टूटकर शीशे के बतन मे डालिये अब फेंटने शुरू कीजिए। खूब अच्छी तरह फेंट देने पर आप देखेंगी कि सामने पडा हुआ मैदे और मक्खन का खूबसूरत बतन बबलू के हाथो छूट कर चकनाचूर हो चुका है

अब आप नया बतन लाइए और नये सिरे से मैदे, अण्डे मक्खन का घोल बनाकर बबलू से अलग करने की कोशिश करें, चीनी मिलाए जब तक बबलू इन सबको आपस मे एक न होने देगा, तब तक आगे की कायवाही नही हो सकती। अत बहनो, आपसे अनुरोध है कि केक बनाने की विधि सीखने से पहले अपने अपने बबलू का ब्यौरा दें। आपके कितने बबलू हैं, यह जानकर ही आपको बताया जा सकता है कि आपको पाव भर मैदा चाहिए अथवा पाच किलो। मक्खन अण्डे कितने, ओवन कितने, स्टील के भगोने तथा ड्राई फ्रूट एसेन्स वगैरा

अगर आपका बबलू नही है तो भी। लेकिन बबलू नही तो फिर आप केक बनाएगे ही क्यो ? आने वाले बबलुओ के केक तैयार होने की विधि हमारे पास नही है। अत गौर से सुनें। केक की विधि मैं आपको बताऊगी। बबलुओ के ब्यौरे आप मुझे भेजें।

33

कविरा करे कमेंट्री

कहते है क्रिकेट का खेल बहुत पुराना है। भक्तिकाल मे भी लोग यह शौक पाले हुए थे। लेकिन उन्हे यही कमेट्री देनेवाला व्यक्ति न मिल सका। प्रमाणिक ग्रथो की खोज से पता चला है कि अम्पायर नाम के एक सज्जन कबीरदास के दोहो से इतना प्रभावित हुए कि उनके पास जा पहुचे। उनके सामने उन्होने बैट बाल वगैरह ऐसे रख दिए जैसे किसी डाकू ने आत्मसमर्पण करते समय अपनी सारी सम्पत्ति पुलिस के हाथो सौंप दी हो। अम्पायर ने गेंद का इतिहास बताते हुए उनसे कहा—"कदुक से गेंद और गेंद से बाल हो जाने का क्रम इसका काफी पुराना है। आप इन तीनो से यानि गेंद, स्टप तथा बैट मे भली भाति परिचित होकर कुछ इनके बारे मे भी कहे। कबीरदास जी ने पहले गेंद को देखा तथा फिर बोले—

गेंद न खेतो ऊपजे गेंद न हाट बिकाय।
लाठी जिसके हाथ हो, गेंद हाक ले जाय॥

अम्पायर ने तुरन्त सीटी बजायी तथा उनकी बात काटते हुए कहा, "नही ऐसा नही। यह हाट मे बिकती है, मैदानो मे दौडती है, लोग इसके पीछे लट्ठ लेकर घूमते हैं, यह सबको नाच नचाती है।"

विज्ञापनराय को कबीरदास के कानो मे खुसुर-फुसुर करते देख अम्पायर को कुछ दाल म काला नजर आया और वह कबीरदास के पास आकर उन्हे समझाते हुए बोले, "सच की बात समझ लीजिए, महाराज, यह मैच आज-कल मच बॉक्स की तरह एक डिब्बी मे बन्द कर दिया जाता है। आपकी आवाज को भी हम युगो तक सभाल कर रखेंगे। बस, कल मैदान मे आ जाइए।"

कबीर बोले, "अभी नही, पहले मुझे इन वस्तुओ के महत्त्व का पारायण करना होगा और मेरे कुछ सुझाव तुम्हे गाठ बाधकर रखने होगे। पहले इस

गेद का आकार बदलो, अच्छे खेत खलिहानो मे इसकी उपज बढाओ। यह हाथो मे फिसलती है, इसके रूप को तराश दो। इसमे कुछ ऐसा द्रव दो कि चौका छक्का मारते ही वह सम्मुख खडे विरोधी दल पर सम्मोहन कर दे। वे ठगे से खडे रह जायें। बैट यानी काठ के हत्थी वाले इस तख्ते को ऐसा बनाओ कि 'काठ की हाडी चढे न दूजी बार' का दोहा इस पर फिट बठे। इसमे वह आकर्षण भर दो कि दूसरी टीम वाले सिफ इसे छू पाने के लिए ही एक दूमरे से स्पर्धा करने लगें। आपस की फूट डाल कर सारे खिलाडियो से यह *'स्पोर्ट्समैन स्प्रिट' यानी जो स्पिरिट (प्रेतात्मा) इनके पीछे लग जाती* है, उसे अलग करो वरना यह सब मिली भगत है। फूट के बीज से फुटौवल का पेड उगेगा। इसकी जडें गहरी होगी, इसकी शाखाए फैलेंगी।

गेंद मे जो मनुष्य की भाति यहा से वहा लुढकने का दोष है, इसे आख से ओझल नही किया जा सकता। यह तो थाली का बैगन हो गई। किन्तु नही यदि बैगन होती तो इसका भुर्ता बन गया होता।

यह कैसा मोह है, जिसमे जीत को जीत नही माना जाता, हार का खेद नही होता। वही टीम बार-बार एक दूसरे के मुकाबले मे एक-दूसरे को दात दिखाने लगती है। दर्शक गण भी अजीब प्रतिक्रिया करते हैं। पाव, जूते, बैट ही जिस बॉल का भोजन हो, पिटना ही इसकी नियति और तालिया पीटना ही दर्शको का कम रह गया। इस मोह का तुम्हे त्याग करना चाहिए। लेकिन मोह त्याग के लिए तुम्हारे अर्जुन को, कोई श्रीकृष्ण ही समझा सकता है। जाओ वत्स। क्रिकेट की कमेंट्री के लिए कही और मुह मारो। क्रिकेट खेल भले ही हो, इसकी कमेंट्री देना कोई खेल नही।

और, अम्पायर वहा से तुरन्त कूच कर गया। कबीरदास जी कह रहे थे

> कबिरा करे कमेन्टरी कदुक क्रीकेट केर।
> बैटिंग बॉलिंग, जय-अजय पुनजन्म का फेर॥

"ओह! तब तो माया है यह गेंद, महाठगनी,"

"ठगनी ही नही, गोलमाल की जड भी है, खुद भी गोल है इसलिए गोल होती है, गोल करती है। जब दो दलो के बीच मे पडती है तो यह उन्हे सिक्का उछालकर पारी की घोषणा करने के लिए मजबूर करती है। खुद उछलती है, औरो को उछालती है। इसके लिए हमेशा मैदान साफ होना

चाहिए। विजेता के हाथ मे पहुचते ही इसके पख निकल आते है। इसके बल पर ऊची उडानें लेने लगते है, इसकी कोई जाति नही—

जाति न पूछो पूछ लीजिए ब्राड

अम्पायर ने फिर सीटी बजायी और अपने एक साथी को कबीरदास के सामने पेश करते हुए बोला, "गेंद की जाति या ब्राड पर श्री विज्ञापनराय प्रकाश डालेंगे ?"

विज्ञापनराय ने सिर पीट लिया और बोला, "महाराज आजकल तो जाति का प्रमाणपत्र काफी फायदेमन्द साबित होता है। उसके आधार पर तो नौकरिया मिलती है। कुर्सी और तरक्किया मिलती हैं। चुनाव लडे जाते हैं, मत्रिमडल मे जगह मिलती है। जाति बताकर ही विज्ञापनकर्ता अपना मोल बताता है। जाति क्वालिटी है, जाति ही वह माक है, मुहर है जिससे कोई भी वस्तु अपनी पहचान बनाए रख सकती है। हमारी कम्पनी का माक देखा जाता है। बडे-बडे बैटसमैन इसके दीवाने है। तभी तो इसके पीछे भागते है आप कमेंट्री देते समय यदि हमारी कम्पनी की विरदावली भी बखान दें तो हम आपको मुहमागा दाम देंगे। यह नीति की बातें उपदेश देने की आदत और अपनी उलटबासिया छोडकर गेंद की उलटबासिया लिखिए आप मालामाल हो जायेंगे।"

कबीरदास ने गेंद की जाति भलीभाति देखी तथा उसका और आगे परिचय जानना चाहा। विज्ञापनराय बोल उठे, "यह बास्केट बाल, फुटबाल आदि अनेक रूपो मे मिलेगी, यानी फुटबाल होकर भी यह मैदान मे आ जाती है। मैंने तो ऐसी ऐसी फुटबालें देखी हैं जो मैदान मे आने से घबराती है, मुह छिपाती है। खैर, तो वर्णन मे कोई कसर मत छोडिए। चाहे सातो समुदर की स्याही फेरकर सारी धरती के मुह पर कालिख पोत कर, कागज की कमी के दिनो मे भी इसके गुण से पन्ने काले कर डाले लेकिन 'गुरु, गुण लिखा नही जाये' की हाक मत लगाना, हा।"

34

अनोखीवाई

अनोखीवाई की आदत थी बात से बात निकालना और फिर उसे फिरकी पर चढाकर सूत की तरह कताई करना। जब तक वह हर किसी की जडें न खोद लेती उसे चैन न पडता। सुबह सवेरे वह सबसे पहले अखबार उठा लेती और सोये हुए पति के मुह से मक्खियां उडाते हुए पेपर की उडाने लगती। कोई बुरी खबर होती तो चिल्लाने लगती, देखो तो ससार मे अनर्थ हो रहा है। एक तुम हो जो अब तक सो रहे हो। यह देखते हो कोई रोहिणी चक्कर काटने लगी है धरती के। यहा आवे तो नासपीटी की हड्डी-पसली एक कर दू।

अनोखीवाई के पति शामतलाल की शामत तो उसी शाम आ गयी थी जिस दिन उन्होंने शादी का फन्दा गले मे डालकर इस एटम बम को अपने घर ले आने की जुर्रत की थी। अनोखीवाई के माता पिता परिचित थे। वे शामतलाल को समझाते हुए बोले थे, "बेटा, अब अपना ध्यान रखना।"

शामतलाल का तभी माथा ठनका और उसने घूघट मे से ताकती झाकती आखो मे हाथ-पाव मारने शुरू कर दिए थे। अनोखीवाई के मधुर स्वभाव से आस पडोस को परिचित होने मे शायद देर लगी हो, पर शामतलाल को कुछ घटे मे ही सब समझ आने लगा था। इसीलिए पहले दिन से ही वे अपनी प्रिय धर्म पत्नी के लिए चाय बनाने लगे। अनोखीवाई उन्हे बदले मे ताजा समाचार सुनाती। समाचारो पर अपने कमेंट देती और शाम को जब शामतलाल लौटकर आते तो वह फिर उनका मगज चाटना शुरू कर देती। शाम की चोरी या डकैती की ताजा खबरें वह चाय के साथ ऐसे पेश करती जैसे पति को गरमागरम समोसे या कचौरी दे रही हो।

एक दिन शामतलाल लौटे तो अनोखी बोली, "सुनते हो जी वह अन्नपूर्णा के घर डाकू आए और पच्चीस हजार का जेवर ले गए।"

शामतलाल घबराए से बोले, "तब तो बहुत बुरा हुआ।"

"बुरा ? अरे इस अन्नपूर्णा के घर तो कभी फूटी कौडी नही होती। नकली गहने, नकली मोती और नकली चूडिया पहनकर छमक छल्लो बनी फिरती है। खोट और मिलावट उसका पहला धर्म है। पच्चीस हजार के जेवर की तो बात ही छोडो, उसके पास तो एक सुच्चा छल्ला भी नही। मैं तो कहती हू चोरडाकुओ को ये अखबारें पढकर अपना स्टेटमेंट देना चाहिए। बताना चाहिए कि खबर झूठ है। इसके घर तो कानी कौडी न पाकर चोरो ने सिर पीट लिया होगा। या फिर दया आई हो तो वे कुछ माल भी छोड गए हो। मैं अन्नापूर्णा को खूब जानती हू।"

शामतलाल ने अनोखीबाई की इस अनोखी बात पर एक ठण्डी सास भरते हुए कहा, "शुक्र है तुम किसी चोर या उठाईगीर की बीवी नही, वरना तुम तो सलाह देकर उसकी ऐसी मति फेर देती कि वह बेचारा अपना भाडा-फोड करके जेल की हवा खा रहा होता।"

हवा खाने की बात पर अनोखीबाई की नजर अखबार मे पखे से लटक-कर आत्महत्या करने वाले तीन व्यक्तियो पर पड गई। अब तो शामतलाल की शाम के चाय पानी का भी प्रकोप खत्म हो गया। अनोखी वही धम्म से बैठ गई और बोली, "समझ नही आता कि इस उमस भरी गर्मी मे, लोगो को हवा खाने का इतना चाव चढता है कि वे पखे से ही लटक जाते है। यह देखो जी"—कहते हुए अनोखी ने फिल्मी हीरोइनो की पखो से लटकने वाली तस्वीरें सम्मुख रख दी। फिर बोली, 'अच्छा यह तो कहो जब मरने के लिए उमदा से उमदा तरीके मौजूद है, ऊची से ऊची इमारतें है तो फिर यह पखो से लिपट मरने का शौक क्यो सिर पर सवार होने लगा है। हर रोज कितने ही पखें मे लटके लोग मिलते हैं। गोया पखे का काम हवा देना न होकर लोगो को लटक जाने की प्रेरणा देना हो गया। पखे से साडी लटकाना, साडी का फदा गले मे डालना, क्या है यह सब ?"

शामतलाल बोले—"सारा धन्धा साडी के फदे से शुरू होता है। हर रोज नयी साडी की माग, बढती महगाई, सबका गला घोट रही है।" पर अनोखी ने शामतलाल की बात तेजी से काटते हुए कहा—"साडी का फदा किसी को नही मारता। यह तो रेशमी जकड है। बात कुछ और ही लगती है। एक बात बताओ। ये सब लोग किस कम्पनी के पखे से लटके हैं। आज तक तो किसी कम्पनी का यह विज्ञापन नही सुना, हमारी कम्पनी के पखे खरीदिए,

लटक जाए तो भी पखे को आच न आए। बढ़िया मजबूत टिकाऊ पखे! असल मे लोडशैडिंग अगर इतनी ज्यादा रही तो पखे हवा देने की बजाय सिर्फ इसी काम के लिए रह जाएगे।"

फिर अनोखीबाई ने सिर उठाकर अपने छत के पखे को गौर से देखा। जब मे इस घर मे यह पखा आया था, भली प्रकार चल न पाया था। गर्मियो मे प्राय बत्ती बन्द रहती और बद न भी होती तो पूरा फ्यूज उड़ जाता। अनोखी को बार-बार लगता था कि न चलने की वजह से शायद यह पखा भी बेकार हो चुका हो जैसे किसी के घुटने जुड गए हो। यही सोचकर वह फिर बोली, "सुनते हो जी मैं तो सोचती हू कि यह तीन पख वाला पखा, एक जरा-सी हत्थी के सहारे तो खडा है। इससे कोई लटक ही कैसे सकता है।"

अनोखीबाई को एकटक पखे को निहारते देख शामतलाल का माथा ठनका। वे बोले, "लटकने वाली तो लटक गई पर पीछे वालो को तो उमस भरी गर्मी मे तडपने को छोड गई। पखा तो फिर भी पखे वाले मे सुधर सकता है।"

'क्या कहा? अन्नापूर्णा तो जाते जाते कइयो का सुधार कर गयी। अब हवा खाने के लिए उसके घर वालो को पखे का मोहताज नही रहना पडेगा। जेल के दरवाजे खुले होंगे। लेकिन एक बात है कि पखे से लटकने वाली यह बात अब तक मेरे पल्ले नही पडी।"

शामतलाल ने अनोखीबाई की आखो मे बढती हुई उत्सुकता देखी तो उन्हे खटका लगा। वे तुरन्त बोल उठे, "दरअसल यह पखे से लटकने का माजरा ही कुछ और है। तुम मत सोचो वरना मेरी मुसीबत हो जाएगी। तुम्हारी यह ढाई मन की देह पखा बेचारा नही सभाल पाएगा। और पखे के साथ-साथ छत भी नीचे होगी। तुम एक हाथ मे छत थामे दूसरे हाथ मे उस गरीब पखे के पखो को, मुर्गे के पखो की तरह तोड-मरोडकर, मेरी राह मे आखें बिछाए खडी होगी और तुम तो जानती हो आजकल छतें बन पाना कितना महगा पडता है।"

और उस दिन से शामतलाल हर रोज अपने कमरे मे लगे इकलौते पखे के लिए प्राथना करके जाते हैं। और दफ्तर से आते ही उसे सही सलामत पाकर खुदा से पखे की लम्बी उमर के लिए खैर मनाते हैं।

35

कोप भवन में

उनकी पत्नी जब रूठी तो उन्हे सहसा फिल्मो मे रूठने वाली पत्निया, प्रेमिकाए आदि स्मरण हो आई। बेचारे लगे सोचने। किस प्रकार, किस ढग से मनाए। सोचते-सोचते परेशान होने लगे। जी मे आया पत्नी से कह दें—'रूठने के लिए पहले सैंक्शन ले लिया करो—यो सहसा रूठ जाने की घोषणा करके नयी मुसीबत मत खडी किया करो।' तभी ध्यान हो आया—'यदि सैंक्शन ले ली हो तो पहले टेडर खुलवाने पडेंगे। रूठने वाली स्त्रिया अपने रूठने के तरीके, उन तरीको से होने वाले लाभ की सूची बनाकर एक कटालाग क्यो नही तैयार कर देती।'

रूठने के नुस्खे, होने वाले लाभो का ब्योरा और ऐसी सुविधाजनक स्थितिया रख दी जाए कि कोई भी पत्नी यदि रूठना चाहे तो पति को जता दे कि मैं *अमुक पृष्ठ सख्या की हरकत करने वाली हू—तुम्हें आगाह कर द* —पृष्ठ सख्या पर लिखे लाभ के बिना मानूगी नही।

और फिर उन्होंने सोचा—इसके लिए हर स्त्री को अपनी फाइल मेनटेन करनी होगी जिसमे उसके रूठने पर सफल असफल प्रतिक्रियाए, कौन सा रूठना किस प्रकार के परिणाम मे परिणत हो सकता है, कब तक रूठी रहें, कब मानें आदि आदि का पूरा विवरण हो

यह सोचकर उनकी सहसा हसी छूट गई। उन्होने तब अपनी पत्नी के अब तक रूठने के तौर-तरीको पर गौर किया। फिल्मो मे रूठी स्त्री और असली रूठी स्त्री के रूठने का तुलनात्मक अध्ययन किया। पिछले ज़माने मे सती साध्वी स्त्रिया मुह मे आधा मीटर कपडा ठूस कर जाने कितने लीटर आसू पी पीकर अपना गुब्बार तक बाहर नही निकालती थी। प्राय पत्नियो की पलकें रास्ते मे बिछी तारकोल की सडक पर पडी चिपक जाती थी। फिल्मे देख देखकर रूठने का दौर तेज होने लगा। फिल्मी नायिकाए लिखे

हुए सवाद, बताए हुए नखरे निर्देशक के इशारो पर करती, रूठनी, मानती हुई, कोमल नारी के मन मे उतर गई हैं। लेकिन

लेकिन फिर उन्होने पत्नी को औंधे मुह करवट बदले हुए देखा और चिढ कर सोचने लगे—उह, यह भी कोई रूठना हुआ। रूठना था तो सीखचो मे सिर रखकर, गाना गाती या कमर पर हाथ रखकर कहती—"जा मैं ता से नही बोलू ।"

इस सिलसिले मे रूठने वालो के लिए कितनी ढेर गीत हैं।

गीत तो मनाने के लिए भी हैं—यह सोचकर उनके कण्ठ मे एक पक्ति तैर गई—तुम रूठा न करो, मेरी जा मेरी जान निकल जाती है

तभी लगा उनकी जान का पीछा न छोडने वाली यह तथाकथित सती सावित्री अपनी बात मनवाने के लिए यमराज तक का पीछा न छोडेगी और तब अपना पिंड छुडवाने के लिए बेचारा उसकी कोई भी मांग पूरी कर सकता है।

यह सोचकर उन्हें यमराज से पूरी सहानुभूति हो उठी। पत्नी के प्रति जाने कैसा भाव उमड उठा।

पति को कोई भी प्रतिक्रिया न करते देखकर उनकी पत्नी का माथा ठनका। उसने करवट बदली तो पति महोदय से रहा न गया। लगे बडबडाने "रूठना हो तो ढग से रूठो, कोई मिसाल कायम करो। प्राय स्त्रिया रूठ कर मायके चली जाती हैं, पर तुम हमेशा उसी तरह पलग पर औंधे मुहँ एक दो करवटें बदलकर मेरी तरफ कनखियो से देखती रहती हो। मैके के नाम पर तुम्हारा भुनभुनाना, पाव पटकना और यही धरना देकर पडे रहना पिछले सात साल से देख रहा हू, साले सालियो को भी यही पडे रहने की आदत डालकर तुमने अपने माता पिता की जनकल्याण की जो योजना बनाई थी, वह मैंने समाप्त कर दी। अत रूठने वाली स्त्री को यदि सही ढग से रूठना भी हो तो उसे मायके से नहीं कतराना चाहिए और कभी कभी मुह उघाडकर तुम वहा चली भी जाती तो मैं तुम्हें कभी कुछ न कहता—बुलाने का नाम भी न लेता। लेकिन ऐसी अपनी किस्मत कहा। खाना पानी त्याग कर मले कुचैले वस्त्रो मे क्षीणकाय पडी स्त्री को देखकर पति के मन मे कुछ प्यार उमडता है, लेकिन मैंने पाया है—तुम जब भी रूठी हो, खाना खाकर ही रूठी हो। खा पीकर रूठने के इस कार्यक्रम से पता चलता है कि तुम्हारी खाल

प्रयोगशाला मे जांच के लिए भेजी जानी चाहिए, ताकि ज्ञात हो सके कि आजकल स्त्रियो की खाल मे यह नया क्या परिवर्तन आ रहा है। उनकी महसूस करने की ताकत खत्म होती चली जा रही है। वह कुछ भी कर ले उसके बाद उन्हें कोई लानत भेजे या आख दिखाए तो वह पलटकर शेरनी सी गुर्राती क्यो हैं, अपने गलत कामो को सही साबित करने के लिए वह कोई भी कदम उठाने को तत्पर है। क्या ऐसा सिर्फ हवाओ मे असर है अथवा वह युगो से ऐसी ही थी ?"

उनकी बात सुनकर पत्नी ने फुकार भरी, पर न अपनी जगह से न उठी और न बोली। मात्र पति महोदय बोलते चले जा रहे थे—

"तुम्हारा रूठना या तो बेमौसम रहा या अवसरवादी। जब जब मैने, हसी खुशी सिनेमा की टिकटे ली, तुम्हें प्रसन्न करने की चेष्टा की, तुम्हारा लटका चेहरा देखकर मुझे अपना रुख बदलना पडा। मुझे किसी और के साथ सिनेमा देखकर होटलो मे खाना खाना पडा। रूठने के समय तुम मुझसे भी अधिक रसोई से रूठी और वहा जाने का नाम तक न लिया।

तुम्हारा रूठना अवसरवादी रहा है। जब भी मेरे रिश्तेदार आए तुम्हारी त्यौरिया चढी, भू तनी और कोप भवन मे तुमने सबकी जडें खोदकर नीवे हिलानी शुरू कर दीं। बहुत बार तुम्हारी इन्हीं हरकतो से परेशान होकर जी म आया कि नगर-महानगरो मे कृषि भवन, निर्माण भवनो की नाई कोप-भवन की व्यवस्था होती। सभी रूठने वाली महिलाए वही जाकर रूठने के सफल तौर तरीको, हाव भावो से अवगत हो सकती थी। गृह मन्त्रालय स्त्रियो की बपौती होने के कारण राजनीति मे भी अपना स्थान बना पाता अथवा गृह मन्त्रालय की मन्त्रणा समिति व स्त्रियो का सगठन होनी तो शायद उनकी कोप की स्थिति को गम्भीरता से लिया जाता।"

यह सोचकर उन्होंने पत्नी की कोप मुद्रा का पुन अवलोकन किया तो हैरत हुई। क्रोध भूलकर वह मात्र उनके मनाने की प्रतीक्षा मे इधर उधर ताक रही है और दुविधा मे है कि अब रूठने के बाद बिना मनाए वह कैसे मान जाए।

यह देखते ही पति महोदय ने पतरा बदला। चीजें उठा पटककर फेंकनी शुरू की "घर है या नरक।"

उधर से पूज्य माता जी के कदमो की आहट सुनते ही उसके कान खडे

हुए। यह रूठना मनाना नखरा आदि नितान्त व्यक्तिगत था जिस पर 'सिफ पति के लिए' का बोर्ड लटका कर वह मान मनौवल चाहती थी। उसने सोचा भी न था कि घण्टा भर मुह बनाने, रूठे रहने के बावजूद भी उसे ही पति महोदय को मनाना पडेगा। मन ही मन पति को मनाने के सरल तरीको का पारायण किया उसके भी कठ मे गीतो की पक्तिया तैरने लगी—'रूठे रूठे पिया, मनाऊ कैसे उहू यही तो मेरी समस्या है। सोचकर उसने फिर दूसरा गीत याद किया—'रूठ गये सावरिया 'जरा जोर से गाने पर उसका आशय तो यह भी हो सकता है कि रूठ गये तो क्या तनख्वाह देते जाओ—रूठना हो तो तारीख देख दाखकर रूठा करो।

फिर सहसा मन मे आया, कह दे—'जोगन बन जाऊगी ' तभी लगा अभी कर्कश आवाज़ गाज सी गिरेगी—'जोगियो को गुलछर्रे उडाते देख-देख के तुम भी हरकतें करनी लगी हो।'

वह अभी यह सोच ही रही थी कि पति चिल्लाये—"मैं जानता हू तुम फिल्मी गीत याद कर करके मुझे मनाने की सोच रही हो तुम सोचती हो उस तीन मिनट के गीत मे अपने लटके दिखाकर मुझे मना लोगी? इस गलतफहमी मे मत रहना।"

उनका यह डायलाग सुनते ही पत्नी चिल्लाकर बोली—"मेरे सवाद बोल-कर, मेरे हाव भाव पैतरे अपना कर ज्यादा शान मे आने की ज़रूरत नही। मैंने ही हर तीसरे दिन रूठने का डिमासट्रेशन दे देकर तुम्हें यह हरकतें सिखाई हैं। वरना न तुम्हें रूठना आता है, न मनाना। और तुम अब पाव पटककर मनाने की डिमान्सट्रेशन से मेरा फायदा उठाना चाहते हो। इस गलतफहमी मे मत रहना। मैं अब तुम्हें मनाने वाली नही।"

फुफकारती हुई वह पलग से एक ही झटके मे ऐसी उठी जैसे थड गियर पर स्कूटर को ज़ोर से ब्रेक लगा दी गई हो और वह उसे उछालकर रसोई घर मे पटक गया हो।

उसका 'व्रत

शिवि का कहना था कि उपवास वह अस्त्र है जिससे बडे से बडा युद्ध जीता जा सकता है। अनशन करके, आमरण व्रत आदि की धमकी आदि ने ऐसे ऐसे करिश्मे दिखाये हैं जो अन्यथा सम्भव नही थे। वह अपनी सखी तथा नोशल वकर सगीना के साथ जगह जगह भाषण देने निकल पडती। भाषण देते समय एक एक शब्द पर दात गढाना, उस की खाल खीचना उसकी पुरानी आदत थी। इस बार भी वह महिला सभा मे पहुची तो उपवास पर अपना धारा प्रवाह भाषण शुरु कर दिया।

"बहनो! उपवास मे भगवान का वास होता है। यह आत्मा की शुद्धि के लिए एक यज्ञ है। तबियत साफ कर देने का अचूक नुस्खा है। यह मूक के लिए वाणी है, जब जब किसी मूक की दीन गुहार कोई नही सुनता, वह उपवास रखकर, भूख हडताल की धमकिया भेज भेज कर अपने मूक अधरो से चिल्लाता है। बधिर लोगो के लिए यह श्रवण यन्त्र है। इसी की लाठी टेकता हुआ पगु पर्वत लाघ जाता है। असमय ही समस्याओ को खीचतान कर बडा करने वाला की एकदम सिचाई करता है। युगो तक सोई रहने वाली सत्ता की आख के लिए दैनिक जागरण का स्वर है इसमे—जब समस्या पैदा होगी यह उसमे चिगारी बनकर आग भडकायेगा। घर के कुरुक्षेत्र मे तो यह वह हथगोला है जिससे हर महाभारत जीती जा सकती है। सच कहे तो उपवास की महिमा निराली है—इसे आग जला नही सकती—बल्कि यह आग बनकर ऐसा भडक उठेगा कि आपका विरोध करने वाले स्वय धराशायी हो जायेंगे यह आत्मविश्वास का मूलधन है—सकल्पो का चक्रवृद्धि व्याज इसकी राशि को पल मे ही कई गुना कर देता है शरीर को हल्का फुल्का करने का अचूक नुस्खा—प्रसन्नचित रहने का अमोघ अस्त्र है। शरीर हल्का फुल्का होगा, तबियत प्रसन्न हो जाएगी—हा तो मैं कह रही थी "

तभी यहीं से हलुआ बनने की सोधी गन्ध ने शिवि के सकल्पो को डावा-

डोल कर दिया। यह सुगन्ध उसके सारे सकल्पो पर हथौडे की चोट कर रही थी—सारे भापण पर पानी फेर रही थी—आत्मविश्वास पर दरारें पडने लगी। अब शिवि के भाषण ने नया मोड लिया—

"हा तो उपवास के लिए जरूरी है मनोवल। मनोवल बनाये रखने के लिए लोगो को मिलकर हाथ बटाना होगा, मदद करनी होगी। यह मदद कोई रुपये पैसे की नही सिर्फ इस बात की है कि जब कोई उपवास रखे उस समय उसके आसपास यहा तक कि मुहल्ले मे भी—कही कोई स्वादिष्ट व्यजन न बनायें। मन चचल है—उस पर व्यजनो की सोंधी गध चोट करती है। मन काच का है—जरा सी चोट उस पर दरारें पैदा करती है—चटक कर—यह टुकडे टुकडे होने लगता है। अब इसी हलुए की ही गन्ध को देखिये—आह। तन मन मे समा जाती है—उपवास से आदमी वेसन के लड्डू की विधि पर उतर आता है। आप ध्यान रखें आपके आसपास किसी ने उपवास रखा हो या कोई उपवास का बखान कर रहा हो तो उसका मनोबल न डिगायें। 'न खावें, न खावन दें' का मूल सिद्धान्त हाथ मे लेकर उपवास की मशाल जलायें।

हमारे देश मे उपवास रखने के—ऐसे ऐसे ज्वलन्त उदाहरण हैं जिनसे यह देश ही नही उपवास भी स्वय मे महान हो गया। लेकिन वे उपवास करने वाले उच्च कोटि के सत थे। साधारण व्यक्ति, हमारी आपकी तरह का साधारण व्यक्ति, जब उपवास करे तो ध्यान दें मजेदार स्वादिष्ट व्यजनो से परहेज करें। हम सब खाद्य पदार्थों के हाथो बेमोल बिके हुए है—सच कहे तो हमारा देश गुलाम रहा—इसीलिए बार बार आजाद होकर भी हम गुलाम लगने लगते है। सबसे बुरी है व्यजनो की गुलामी। सौंधी नाक मे समा जाने वाली बेसन के भूने जाने की खुशबू मन सारे व्रत भूल जाता है, सारे सकल्प ताक पर रख देता है—बेसन के लडडुओ पर टूट पडने को मन कमर कस लेता है—तो बहनो, उस प्रवचन का मनन करो, चितन करो—"

और शिवि ने धीरे से सगीना से कहा—"बेसन के लडडू बन रहे हैं शायद"

सगीना शिवि की कमजोरी जानती थी। हसकर बोली, "तुमने पल्ला कमर मे खोस कर कमर कस ली है—चलो उधर चायपानी का प्रबन्ध है। प्लेट भर कर बेसन के लड्डू है—आलू की चाट पापडी भल्ले"

'ऐ पहले क्यो न बताया, आज मैं बेसन के लडडुओ पर भाषण दे देती

उपवास पर बाद मे हो जाता।" शिवि तेजी से बोली। सगीना चुटकी लेते हुए बोली—"तो तुम बेसन के लड्डुओ पर भाषण दो, मैं खाती हू।"

"न, न, तुम हाथ मत लगाना। याद नही तुम्हारा तो आज उपवास है?" और शिवि ने बढकर लड्डू खाने शुरू कर दिये। सगीना के मुह मे पानी आ रहा था। उसने देखा, आसपास खडी महिलाए उसकी ओर निहार रही है। 'उपवास है तो फल दूध लायें'। 'नही, नही, यह उपवास मे कुछ नही लेती '। सगीना ने देखा सामने शिवि ने तीन लड्डू खा लिए थे। आलू की चाट और पापडी भी लगे हाथ साफ कर दी थी। सगीना के सामने दूध का बडा गिलास आ गया। उसे देख सबीना को उबकाई सी आने लगी। उसने उन सब चीजो से मुह फेर लिया तो शिवि जले पर नमक छिडकते हुए बोली—"उपवास की आदर्श स्थिति यही है। सम्मुख जितने पदार्थ हो, उनकी ओर से मुह मोड लो। धनखियो से भी न देखो कि कोई क्या खा रहा है। सोच लो, सब व्यर्थ है व्यथ को त्याग दो। तुम्हे कोई मोह नही बाधेगा।" अब शिवि और सगीना जाने लगी तो उन्हे घर तक छोडने के लिए एक कार्यकर्ती टैक्सी मे उन दोनो के बीच आ बैठी। दोनों देख रही थी कब वह जाये और कब वे एक दूसरे से बात करें। पर वह तो बैठी थी। दोनो को घर पहुचा कर ही उसने दम लिया। शिवि ने चैन की सास ली। उसे लग रहा था दो लडाका बच्चो को आपस मे गुत्थमगुत्था न होने देने के लिए ही वह उन दोनों के बीच आ बैठी थी वरना आज सगीना तो कोई न कोई गुल खिलाती। चलते चलते सगीना तीर चलाने से बाज न आई। बोली, "कल मगलवार तो शिवि बहनजी का व्रत होता है। सुबह की सभा के बाद इनके लिए फल दूध का प्रबन्ध कर देना ।"

शिवि ने जब यह सुना धक् से रह गई। टैक्सी से उतरते समय जैसे उसके पाव मे अचानक काच चुभ गया हो। फिर बडबडाई, "मेरा व्रत और मुझे अपनी खबर नही।" मन ही मन सोचा घर से ही सब खा पी कर जायेगी लेकिन सगीना ने वहा भी हाक लगा कर कह दिया था—"व्रत यदि रखना ।"

मगलवार के दिन महिला सभा मे व्यंजन बनाने की विधिया बताई जाती थी—चटनी अचार मुरब्बे बनाने की विधि बताते समय सबके नमूने के तौर पर वह सब चखा कर देखा जाता था—शिवि को रह रह कर ध्यान

आता । फिर सोचा एक दिन व्रत रखकर देख लेने मे हर्ज ही क्या है । आज तक उसने जब जब व्रत रखा था, पूरी तरह रखने की नौबत न आई थी । मेज पर पड़े स्वादिष्ट व्यजन देखते ही उन पर टूट पडना उसकी पुरानी आदत थी—झपट कर पडती, लपक कर खाती । कई बार व्रत मे ही उसने छुप छुप कर कबाब वगैर खा लिए थे । मा कहती थी तुझे पाप चढेगा तो वह हसकर कहती—चिकने घडे पर कोई बूद भर रग भी नही ठहर सकता।

मगलवार का लडडू बूदी और बर्फी के प्रसाद वाला दिन आ गया । अभी उसने एक कप चाय ही पी थी कि सगीना आ धमकी—"आठ बजे से मीटिंग है, चलो "

शिवि हडबडा कर तैयार हुई और चल दी। व्यजनो की विधिया क्या आज ही बताई जायेंगी—उसने सगीना से पूछना चाहा, पर सगीना तो उसके बिना एक शब्द कहे, आज सवस्व बनी हुई थी । सामने दिव्या बहनजी ढेरा व्यजन के नुस्खे ले लेकर आ पहुची थी। शिवि का जी चाहा दिव्या बहन से कह दे—डाक्टर तो रोग जानकर नुस्खा लिख देता है। व्यजन बनाने वालो को भी, एक एक की रुचि जानकर उन्हे नुस्खा देती जायें । यो एक एक का बखान करने की क्या जरूरत हैं ? पर सामने श्रीमती दिव्या का प्रवचन आरम्भ हो चुका था। उसने सामने ब्लैक बोर्ड पर लिखा था—"व्यजनो का क ख ग" और अब वे भाषण दे रही थी—

"व्यजन व्यजन मे अन्तर है। बहनें यदि व्यजनो का क ख ग भी नही जानती तो उनके लिए रसोई लानत है। हरेक पदार्थ का कोई अर्थ नही जो भी गृहिणी होगी, उसे रसोई की हर वस्तु से परिचित होना जरूरी है । दाल मे नमक बराबर इस ज्ञान को यदि आप गाठ बाध लें तो मन मे गाठें न पडें, बल्कि मन की गाठें खुल जाय । दाल बनाने मे परिश्रम नही, परिश्रम होता है उसे छौक लगाने मे। खाने वाला ही आप का सबसे बडा परीक्षक है। वही कसौटी है जो जाच परख करती है—कि आप कितने पानी मे हैं।" शिवि उसकी उपमाओ से पागल सी होने लगी, मन ही मन सोचा—यह हिन्दी ज्ञान बघारने के लिए क्यो आतुर हो रही है—व्याकरण के व्यजन से रसोई के व्यजन पर आ उतरी है जाच परख—कितना पानी । पानी के लिए पानी मे कितना पानी है यह तो छानबीन जाच परख करने वाला ही जान सकता है । छीको से ही पता चल जायेगा । लेकिन शिवि का बडबडाना

मह के भीतर ही चल रहा था। दिव्या वहन ने अव रसगुल्ले और गुलाब जामन का वणन आरम्भ किया। क्या लच्छेदार वर्णन है आखा के आगे चाश्नी के सागर मे तैरते हुए सफेद रसगुल्ले फिर दूमरे वर्तन मे काले गुलाब जामुन, फिर वेसन की वर्फी लाई गई, चखाई गई। सगीना एकदम उमके आगे से जैसी आरती के लिए थाली फिरा कर मिठाई मुह मे डाल लेती। अभी मिठाइयो के वर्णन पूरे न हुए थे कि मलाई के कोफ्ते का वर्णन शुरू हो गया। शिवि अपने ख्यालो मे खो गई। उसे लगा मलाई के कोफ्ते पर तो पूरा प्रस्ताव लिखा जा सकता है। उसने दिव्या से हसकर कह दिया। दिव्या एकदम वोल उठी—हमारा प्रस्ताव है कि मलाई के कोफ्ते रसोइनामे से साहित्य के क्षेत्र मे जा पहुचे। मैं सुप्रसिद्ध शिवि से कहूगी वे कोफ्ताज्ञान से अवगत करायें। सभी ने तालिया पीटनी शुरु कर दी। शिवि वोली—"हम सव वहनो को ध्यान यह भी देना चाहिए कि हम साहित्य मे कुछ जगह वनाये। प्रेम और विरह के किस्से तो वहुत लिखे गये, लेकिन कोई क्या खाकर प्रेम करता था, जो अमर हो जाता था, इस वात की ओर किसी का कोई ध्यान नही । हम वहनें सिर्फ नमक मसाले की वातो मे उलझी रहती है। आटा-दाल चावल ही हमारा ध्येय रहा है। आटे दाल का भाव मालूम उन्हे होना चाहिए, जो इसी के दम पर साहित्य मे आगे बढे—हा तो सफेद रग की गोरी चिट्टी दूध घुली मलाई—देखकर किसके मुह मे पानी न आता होगा। ठडा दूध जव गर्मी से उवाल खाता है तो छतरी तान लेता है। इसी छनरी का मोटा घना हो जाना, एकजुट हो जाना ही मलाई कहलाता है। "

सगीना ने शिवि को ताकीद की। वणन करते समय ध्यान रहे तुम्हारा आज व्रत है । शिवि का कोफ्ता वर्णन और अधिक सशक्त हो रहा था। वह फिर वोल उठी—"हा तो पीले बेसन मे वेसन जिससे हलुआ वनता है, हलुआ—जो सफेद चीनी की चादर मे डूबने से पहले ही उसे अपने भीतर समेट लेता है, चीनी जरा सी आच पाकर—कितनी जल्दी स्वत्व खो देती, है, स्वाभिमान नाम की चीज गवा कर माधुर्य दे देती, है—ऐसे वेसन—यानि खाली वेसन मे घी नमक मिच डालकर उसे हथेलियो पर गोल गोल करते जाइये—गोल होते ही गोरी हथेलियो मे पडे इस वेसन मे छेद कीजिए—आह। जैसे कही भवर पडती है—उसमे सफेद, छोटी सी सफेद पाल वाली किश्ती डुवती है, ऐसे ही—उस छेद मे सफद गोरी चिकनी देह वाली मक्खन-

नुमा—इस मलाई को थोडा सा डाल कर गोले का मुह बन्द कर दीजिये—ऐसे ही मुह बद कीजिए जैसे कोई मुहजोर अपना काम निकलवाने के लिए धमकी दे कर करता है, जैसे कोई रिश्वत लेकर भी ऊपर से सीधा सादा सच्चा ईमानदार दिखाई देता है, जैसे कोई किसी की मुट्ठी गरम करने के बाद वहा से हट जाये। कोई जान न पाये इसके पेट मे क्या है, मुह ऐसे बन्द कीजिये कि मैं भी भूखा न रहू, साधु न भूखा जाय, लेकिन दूसरो को प्रतीत हो, सबने निराहार निर्जल व्रत रखा हुआ है

"हा, तो अब कोफ्ते तैयार हैं। कडाही मे तेल घी इतना डालिए कि कोफ्ते डूबें उतरायें। हाथ पाव मारे छपक छपक लहरायें, गोल घूमते हुए। घूमते हुए लाल होगे तो आप पायेंगे बेसन के ये लाल, यह नन्हे गोपाल थालिया मे स्वय लुढकने लग जायेंगे "

कहकर शिवि ने वणन खत्म किया तो लगा गरम गरम कोफ्ते से जसे मुह जल गया हो शिवि ने डकार ली तो सगीना ने उसे ऐसे देखा जैसे वह कोफ्ते खाते खाते रगे हाथो पकडी गई हो

अब दिव्या पापडी, चाट पकोडी का वर्णन करना चाहती थी कि तभी एक बुद्धिमति खडी होकर बोली, "अभी तो मलाई कोफ्ते तल कर थाली तक पहुचे थे मेरा ख्याल था कि उनके लिए प्याज टमाटर लहसुन का मसाला भून कर उन्हे रसदार बना दें क्यो शिवि बहन।"

"हा, हा, कुछ टमाटर प्याज लहसुन की कलिया लीजिए। पीस कर भूनकर लाल कीजिए, फिर टमाटर हरा धनिया अदरक मसाले तेज लज्जतदार चटपटे मजेदार—डाल दीजिए, उसे—थोडी देर ढक दीजिए। ढकना है तो ऐसे ढकिये कि वह पूरी तरह ढक जाए। मनुष्य को जैसे शरीर को ढकने के लिए तीन वस्त्र चाहिए, ऐसे पतीले के विशाल रूपाकार को ढकने के लिए सिर्फ एक ढक्कन काफी है। व्यक्ति को जैसे चलने के लिए—पाव चाहिए—पतीलो मे चलाने के लिए कलछी जरूरी है, चमचे तो हरेक के लिए एक समान हैं ही, अत अब रस से सराबोर इस पतीले मे इन कोफ्तो को छोड दीजिए, जैसे खुले मैदान मे बच्चा को छोडते हैं। जैसे स्वीमिंग पूल मे छपाक से बच्चे उतर जाते है। लीजिए कोफ्ते तैयार हैं "

शिवि ने जैसे प्लेट भर कोफ्ते सबके सामने परोस दिये थे, दिव्या आज सबको यो वर्णन मे इस प्रकार मग्न होते देखकर प्रसन्न थी। अत बोली—

"मैं शिवि वहन से कहूगी अब आलू की चाट और दही पापडी चटनी सोठ आदि का वणन करें, क्योकि अब जमाना वह आ रहा है जब वर्णन मे ही व्यजन होंगे।"

शिवि ने अब फिर से जैसे पहली चीजो को डकार कर नये सिरे से वर्णन शुरू कर दिया था।

दही पापडी सौठ स्त्री के तीन अमूल्य वस्त्रो की तरह है—मेरा मतलव है दही पकोडी सौठ पापडी इनका चोली दामन का साथ है। एक के बिना दूसरा ऐसे ही फीका है जैसे प्रेम के बिना जीवन। प्रियतम के बिना नारी। जीवन ज्यो हो एक लाचारी

पापडी बनाने के लिए मैदा जरूरी है। मैदा आटे का ही तो उजला रूप है, लेकिन रूप की चमक दमक कहा नही है? कौन आकपण के क्षेत्र मे पस्त नही हुआ।

व्यजनो मे आकर्षण न हो तो खाने वाले की भूख स्वय खतम हो जाये। टेढी मेढी पापडी हो या टूटी उगलियो की सी मैंदे की गजक उस पर कितनी ही दही की पर्ते चढा दीजिए, उसका आकार न सवरेगा, उसका प्रकार न वदलेगा। दही और सौप मुलम्मा है। थोडी देर के लिए हर चीज को अपनी लपेट मे ले लेती है। जैसे किसी भी लपेट मे आये व्यक्ति की गति होती है, ठीक वही गति होती है पापडी की भल्लो की—मेरा मतलव वडो की। वडो से यहा वडे छोटे नही—वडे-दही बडे। दही मे पहुच कर ही जो बडे हो जाय, ऐसे भ्रम पालने वाले तो प्राणी है

हा तो वडो को बनाने की विधि—नही नही भल्लो को बनाने का तरीका—दही बडे पापडी, सब सौंठ की लपेट मे आते ही अपना रग, अपना अस्तित्व भूल जाते हैं, उन पर नमक डालिए, मिच जीरा डाल दीजिए सफेद और ब्राऊन रग की यह चाकलेटी चादर से झाकते हुए ऐसे पानीदार लगते है—जिसके लिए कहा है न मीठी लगे अधरान लुनाई—सलोनेपन मे रूप रग को सलोना होना—किसी रग मे रग कर अपने आप को मिटा देना अपने अस्तित्व की माग न करना कितनी बडी बात है। इनके मुह मे आते ही एक स्वाद आ जाता है, यह स्वाद परमानन्द स्वाद है, परमानन्द का सहोदर है

हा तो मैंदे मे घी जीरा नमक डाल कर छोटे ढक्कन से पापडी को रूप आकार प्रकार देकर, तल कर, प्लेटे भर भर कर सम्मुख रखते जाइये—फिर उसमे दही डालिए। सौंप डालिए, इमली से बनी सौंठ पर गौर करें तो इमली

वेचारी पर तरस आता है। थोडा सा गुड या सौठ चीनी और मसाले मिलाते ही इमली का नाम तक मिटा दिया जाता है "

तालिया वजने लगी थी। घडी मे साढे वारह वज रहे थे। शिवि ने तुरन्त सामने दिव्या द्वारा लाई हुई चाट पकौडी की प्लेट उठानी चाही, लेकिन सगीना सीग गढाये आ वैठी। वह उसे वार वार सुइया चुभोती हुई कहती—"तुमने तो आज व्रत रखा ही है, चलो कही धरने पर वैठ जाओ, व्रत साथक हो जायेगा।"

"और हा, तव तुम घोषणा करवा देना, ढिढोरा पीट कर कहना—'इन्होने अव व्रत लिया है कि तव तक उपवास नही तोडेंगी जव तक सव की समस्याए समाप्त नहीं हो जाती। तुम तो यह लिखकर भी लगा दोगी—आपकी कोई भी समस्या है तो उसका समाधान है उपवास। उपवास के लिए मिलें शिवि को' क्यो ?" शिवि ने भूखी नजरो से उसे कहा।

सगीना तो आज वदला लेने की मुद्रा मे थी। कई वार शिवि ने उपवास के महत्व को वखान करते करते सगीना के आगे से परोसी हुई थाली उठा ली थी—आज उसने साथ मे दो कार्यकर्ताओ को भी वुला रखा था, ताकि वह शिवि की निगरानी करें

शाम ढलने को थी। शिवि की भूख से वुरी हालत होने लगी। लगता था आखें वाहर को आ रही ह। गाल धस गये ह। फिर उसने देखा आसमान मे तारे निकल आए हैं, पर ध्यान आया—यह तारे तो भूख के मारे मुझे ही दिखाई दे रहे है आखो के आगे अन्धेरा आ रहा है। अब उसने सगीना से पिड छुडाना चाहा। जाकर हनुमान जी के आगे माथा टेकने की जगह घुटने टेक दिये।

खाना खाने के लिए घर की ओर लपकी तो कद्दू की सब्जी और मूग की धुली दाल देखते ही सारी भूख खत्म होने लगी। जी चाहा गुस्से से सामने पडे काच के सारे वर्तन तोड दे कि तभी सामने अपनी अध्यापिका पर नजर पडी।

सगीना वोल उठी—"शिवि तो अव वहुत वडी हस्ती है। यह कभी उपवास रख ले तो लोग खाना पीना त्याग देते हैं। उनकी रातो की नींद हराम हो जाती है। इसने उपवास रखकर वह करिश्मे दिखाये है, जो और किसी से सम्भव न थे। आज भी शिवि ने व्रत किया है

और शिवि एक बार फिर उपवास पर भाषण देना चाहती थी। कहना चाहती थी—"हा, व्रत लेना हो तो सेवा का ही व्रत लो। इसमे भूखो नही मरना पडता। निगरानी के लिए पीछा नही करना पडता। सोधी खुशबू से जब बार बार नाक के नथुने फूलें, सूघ सूघकर परेशान करने लगें। कानो को व्यजन व्यजन—केवल स्वादिष्ट व्यजन का अलख जाप सुनाई दे, आखो को जब सवत्र छतीसो व्यजन व्याप्त दिखाई दें तो 'मत देखो, मत सूघो, मत सुनो' का सिद्धान्त नही अपनाना पडता।

सेवा एक व्रत है। व्रत है, उपवास नही। उपवास से व्रत की यात्रा बडी सुखद व कठिन दुखदायी है, इसमे घडी या एक एक घटा मील का पत्थर नजर आता है। लेकिन यह मील के पत्थर रास्ते से हटाकर भटकाया जाता है।

आइये व्रत ले—उपवास नही करेंगे मात्र व्रत लेंगे —सिवाय उपवास के शेष सभी व्रत क्योकि व्रत व्रत है और उपवास-उपवास।

37

राधा फ्लू

राधा बरसात मे रास रचाते-रचाते सहसा छीक उठती है। उसकी छीक मे सारा वातावरण एक अजीब उद्विग्नता से भर उठता है। कृष्ण देखते हैं राधा की चोली, चुनरी, लहगा सब बेतरह भीग रहा है। वह उनकी नब्ज पर हाथ रखकर सहसा कह उठते है, 'राधे ! तुम्हें तो तेज बुखार है। इस बुखार मे बार-बार छीक की मिलावट से मुझे भय हो रहा है कि कही यह फ्लू न हो।"

कृष्ण की बातो से राधा बेहाल होकर कह उठती है—"मुरली बजाओ कन्हैया। उसकी धुन से शायद यह फ्लू भाग खडा हो। हाय, डाक्टर भी तो कही न होगा, नही तो मीरा दीवानी की गुहार जगल के पेडो पर ही क्यो अटकी रहती। याद है तुम्हे वह पिछवाडे से उस दिन गा रही थी—'दरद की मारी वन वन डोलू—वैद मिला न कोय ' राधा फिर कृष्ण की बाहो मे छीक पर छीक मारती चली जा रही है। कृष्ण उसे बाये हाथ मे सभाले हुए, दायें हाथ से मुरली की वाल्यूम कुछ और तेज कर देते है। इधर गोपिया भी छीक दर छीक मारने लगी हैं—छीक के स्वरो मे मुरली की ध्वनि डूबने लगती है तथा वे राधा को वहा से लिवा ले जाते हैं।

छीको से बेहाल राधा की आखो मे पानी भर आता है। वह कृष्ण की ओर दयनीय दृष्टि से देखते हुए कह उठती है—"तन मन प्रेम मे भीगा तो कही कुछ न हुआ। जरा सी बारिश मे भीगते ही यह सब क्या हो रहा है ऐसा तो ताप विरह का था कृष्ण शरीर का तपना, बात बात पर छीक मारना यह सब मेरे लिए नया है देखो, देखो यह छीके सारे वातावरण मे गूजने लगी है वायरस हो रहा है।" कृष्ण राधा को प्रेम भरी दृष्टि से देखते हुए बोले, "खिन्न मत हो राधे आज से मै इस छीक मार नये बुखार का नाम राधा फ्लू देता हू जिसे भी यह रोग होगा, वह छीक

मारने के लिए कोई नया द्वार ढूढेगा राधे।" कृष्ण 'तथास्तु' कहकर राधा का छीकना बन्द करवाकर लौट जाते हैं।

छीक की आवाज सारे वातावरण मे अपने कीटाणु छोडकर लौट पडती है। सारे नगर मे सहसा एक नये रोग का प्रकोप देखकर नर-नारी हैरान हो उठे है यह राज रोग से जन्ता रोग का रूप धारण करने लगा है सबको वायरस है। बेतार के तार से सन्देश मिल रहे है। इस नये रोग के लक्षण देख देखकर कुछेक डाक्टरो का आह्वान किया गया। सुन्दरियो को तथा सज्जनो को एक विशिष्ट प्रयोगशाला मे लाकर छीकें मारने पर विवश किया गया।

डाक्टरो ने राधा फ्लू के लक्षण आदि से लोगो को सावधान करते हुए देखा कि इस छीक की आवाज़ मे आक—राधा आ राधा एक अजीव सा स्वर सुनाई देता है। प्रेमी मन भागता है। इधर-उधर ताक-झाक करता है और छीक मारने के लिए खीसें निपोरते हुए वह घर से बाहर निकल आता है। यहा वहा मुह मारते हुए छीक किसी भले पडोसी के घर मे ही मारने को मन उतावला हो उठता है। पुरुप वर्ग इस फ्लू से विशेप प्रसन्न है, लेकिन वे नही चाहते कि उनकी पत्नी को भी यह रोग हो। तथाकथित राधाओ के लिए यह फ्लू प्रेम रोग से परिपूण है छीक से जुकाम और जुकाम से एक बहुत बडा सिरदद पैदा हो गया है। फ्लू समितियो का गठन करके इस रोग के रोगियो के आकडे इकट्ठे करने के लिए यहा-वहा प्रयास किए जा रहे हैं।

ऐसे रोगियो के चित्र लेने के लिए फोटोग्राफर, सवाददाताओ की भीड लगने लगी। प्रेम को महामारी के रूप मे पाकर सेठ और बनिये आश्वस्त हो गय। उन्होने कुछेक तोता-मैना के किस्से गढने वालो से आश्वासन पाकर पत्र-पत्रिकाए निकालनी आरम्भ कर दी और यहा-वहा छीक मारकर इन रोगाणुओ की वृद्धि प्रवृद्धि को तूल देने की चेप्टा की। देर तक बने रहने के कारण, मधुर सम्बन्धो मे भी किण्वन प्रक्रिया (खमीर) देखकर डाक्टर दात तले उगली दवा रहे है। वे साफ देख रहे है कि इस नये रोग मे लोगो को प्रेम मे अधे होने के लिए विशेप दृष्टि मिल गई है। एक सज्जन पति ने डाक्टर से आकर इतना भी बताया कि उनकी पत्नी को दो-चार छीका के बाद ही तेज

बुखार हो गया तथा बुखार सिर पर चढकर बोलने लगा है—वह बडबडा रही है।

'राधा बहन तुम पति-पुत्र को छोडकर श्रीकृष्ण से लगन लगाये रही सारा विरोध मुरली की तीव्र ध्वनि मे डूब गया मेरा भी उपकार करो मैं भी तुम्हारी तरह छटपटा रही हू।'

और फिर वह सज्जन बोले—पत्नियो से कहो—इस रोग को 'केवल महिलाए' से हटाकर केवल पुरुषो के लिए छोड दे—डाक्टर! "सज्जन जाति मे यदि तुम भी शामिल हो जाओगे तो रुग्णा रुक्मिणी को उसकी कथा-व्यथा से निस्तार देने का हम लोग बीडा उठा लेगे।

यदि तुम यह सोचो कि शादीशुदा तलाकशुदा—विधवा, विधुर अथवा बडी उम्र के कुवारे—सुश्रिया इस क्षेत्र के लिए पुराने पड गए है तो मैं तुम्हे याद दिला दू—शराब सिर्फ सडे-गले फलो की विशिष्ट प्रक्रिया द्वारा ही बनती है।"

डाक्टर ने अपनी विवशता झलकाते हुए हारकर कहा—साहित्यकारो के पास जाओ—वे ही छायावाद से हालावाद तक उतरे है—उनके लिए यह सामग्री काफी रोचक तथा प्रेरणा भरी रहेगी।

सज्जन पति ने अपना सिर पीट लिया और बोले—मैं अभी उस उम्र तक नही पहुचा हू जहा प्रेम वर्णन का विषय बनकर रह जाये। यदि मेरी स्त्री का रोग उसी का रोग बना रहा तो मैं भी तुम्हे न छोडूगा तथा तुम्हारी सारी डिग्रिया जब्त करवा दूगा।

तभी परेशान डाक्टर के क्लीनिक से एक युवती अपना आचल सभालती हुई बाहर आयी, जिसे देखते ही सज्जन पति को छीक आ गई तथा वे डाक्टर का धन्यवाद करके अपनी छीक को नया सिरदद बनाने के लिए आगे बढे तथा अब भागती हुई रोगिणी से बोले, "ठहरो—मैं ही तुम्हारा रोग हू। मैं ही तुम्हारा इलाज हू प्रेम की प्यास कभी नही मरती। यह अमर है। देह को छीक मार-मारकर बेहाल कर देती है यदि तुम इन छीको को रोकना चाहती हो तो स्वय रुको बालिके।'

प्रौढा स्वय को बालिके का सम्बोधन पाकर तीव्रता से पीछे मुडकर ऐसे देखती है जैसे उसने एक हाक मे ही उम्र के दस बरस तय करके पीछे लौटकर नया चेहरा ओढ लिया हो।

वह सज्जन के रगे वालो को देख, उसको रगीन तबीयत से आश्वस्त होकर उसके साथ कुछ कदम आगे बढ जाती है।

प्रेम के सागर का वह मगरमच्छ उसे बार-बार समझाता है 'सम्वन्धो का मोह व्यर्थ है आओ, नये सम्बन्ध स्थिर करके इस व्यर्थता का पूर्ण अस्वादन करें '

और तब प्रेम रोग की छीको से वेहाल होकर, वह भी फिसलन भरी राहो पर चलने के लिए कापते हाथो का सहारा लेकर आगे वढ जाती है। और एक दिन उस घडियाल के साथ वह उसके घर जा पहुचती है, जहा उसकी पत्नी किसी और के प्रेम मे पीडित छीके मार रही है। इस नई छीक को देख वह अपना सारा रोग भूलकर उस स्त्री पर झपटने लगती है। तथाकथित मगरमच्छ रो उठता है—'यह महिला दिल की वहुत नेक और अच्छी है। इसपर झपटने से पहले इससे यह तो पूछ लो कि यह अपना दिल कही वेचकर तो नही आयी ?'

तव वह प्रौढा मगरमच्छ स्त्री को समझाती है—सुनो वहन, आजकल शहर मे ऐसा रोग फैला है जिसके कारण लोगों ने अपने कलेजे पैकेट मे वन्द करके पेडो पर टाग दिये है—तुम्हारे पति का कलेजा भी वही मेरे कलेजे के साथ टगा है। यदि तुम उस पार तक सीधी लेटकर पुल का काम करो तो मैं दो पल मे ही तुम्हे और शहरी वाबुओ के कलेजे भी ला दू।

मगरमच्छ की मूर्खा पत्नी ने उन दोनो के वीच पुल का काम किया और वे दोनो हाथो मे हाथ डाले—उस पार लौट गये।

38

सत्ता की साडी

तथाकथित द्रौपदी की समझ मे नही आ रहा था कि दुशासन बार-बार उसकी साडी क्यो देख रहा है। थोडी ही देर मे वह और आगे बढा और साडी को छूकर देखने लगा। द्रौपदी तुरन्त बोल उठी, "मैं हमेशा 'कुरज कम्पनी', चादनी चौक से ही साडिया खरीदती हू। बढिया डिजाइन और दाम भी कम। आप भी कटरा चादनी चौक मे जाकर साडी खरीदिए।"

दुशासन बोला, "मुझे तुम्हारी यही साडी चाहिए।"

द्रौपदी कुछ दुविधा मे पड गई। बोली, गहने वहने फेंक दू तो चलेगा ।"

"नही ।" एक ज़ोर की आवाज़ सभा मे गू ज गई।

धर्मराज युधिष्ठिर दुशासन को द्रौपदी से मुह लडाते देखकर बर्दाश्त न कर सके। वे चिल्लाए, "तुम्हें चीरहरण का आदेश मिला है। पराई औरत से बाते करके उसे बरगलाने की ज़रूरत नही।"

दुशासन ने तब युधिष्ठिर की ओर आखें तरेर कर देखा तथा मन ही मन सोचा, "पाच-पाच जनें भी एक स्त्री को न सभाल पाए—इसीलिए इन्होने इसे दाव पर लगाया होगा।" यह सोचकर वह ठठाकर हस पडा। दुशासन की ज़ोरो की हसी से द्रौपदी को ध्यान आया—"शुक्र है, वह पाडवो के साथ ही ब्याही गई। यदि कौरवो से ब्याही जाती तो सौ जनो मे उसकी क्या दुर्गति होती।" सौ जनो की बात सोचते ही द्रौपदी के चेहरे पर भी एक हसी लहरा गई। उन दोनो को यो हसते-मुस्कराते देख अर्जुन उठ खडे हुए और बोले, "गैर मर्दो से मुह लडाती हो?"

"मर्द! यहा तो ऐसा कोई प्राणी दिखाई नही देता। अगर यह मर्द होता, तो क्या सबके सामने ही चीरहरण करता?"

दुशासन द्रौपदी के कथन पर मुग्ध हो गये। चित्रलिखित से खडे रहे।

तभी दुर्योधन गरजे, "काम शुरू करो ' "

दुशासन आगे बढे तो द्रौपदी बोली, "खबरदार, जो आगे बढे ।"

"ठीक है भद्रे ! अपने आचल का एक छोर मेरे हाथ मे दे दो ।" दुशासन कुछ देर के लिए सज्जन बनते हुए बोला ।

द्रौपदी ने स्टाइल से अपना पल्लू खोला और फैशन परेड मे जैसे अपना पल्लू दिखाने के लिए आगे पीछे होते हैं, वह इधर उधर होने लगी । साथ ही हल्का सगीत चलने लगा । दुशासन भी पल्लू हाथ मे लेकर द्रौपदी के साथ स्टेप्स लेने लगा । तभी दुर्योधन को जैसे किसी ने झझोडा । वह फिर चिल्लाए। दुशासन ने इशारे से कह दिया, "मुझे चीरहरण का अनुभव नही । साडी कैसे खीची जाती है, आचल कैसे थामा जाता है, यह सब कुछ मेरे लिए नया है ।"

दुर्योधन तुरन्त बोले, "तो चीरहरण एक्सपर्ट को बुलाया जाए ।"

तभी एक धमाका हुआ । कृष्ण भगवान सम्मुख आ खडे हुए । द्रौपदी ने कृष्ण को देखा तो एकदम उनसे लिपट गई और बोली, "रक्षा करो यह लोग साडिया चाहते हैं । मेरे पाचो पति अपना सब कुछ हार चुके है । वे इन्हे साडिया खरीद कर नही दे सकते । मेरी मदद कीजिए ।"

तभी कृष्ण ने ढेरो साडिया लाकर द्रौपदी के पास वही किनारे पर रख दी और द्रौपदी के कानो मे कुछ फू क दिया । द्रौपदी पूरी स्थिति समझ गई । दुशासन ने ज्यो ही उसका आचल खीचा, द्रौपदी ने दूसरी साडी का आचल थमा दिया । कृष्ण बडी तत्परता से यह कार्य कर रहे थे । द्रौपदी उसी तत्परता से दुशासन को नई से नई साडी खोल-खोलकर देती जा रही थी और धीरे-धीरे साडियो के ढेर के सम्मुख दुशासन सज्ञाशून्य होकर गश खाकर गिर पडे । तब द्रौपदी थोडी देर का मध्यान्तर देने के लिए कृष्ण के साथ बाहर की ओर चल दी ।

पाचो पाडवो ने देखा पर चुप रहे । कृष्ण अन्तर्ज्ञानी थे । अत उन्होने द्रौपदी को अज्ञातवास आदि की पूरी योजना बताकर उसकी सहायता से सारे प्लान बना लिए । पाडव चुप थे । वे जानते थे कि जो कृष्ण सुदामा जैसे गरीब को सोने का महल बनवा कर दे सकता है वह द्रौपदी के लिए क्या कुछ नही कर सकता ! पाचो ने अपना दिल थाम लिया ।

इधर द्रौपदी ने कृष्ण से विनती की, "हे रक्षक ! कोई ऐसा उपाय करो कि यह पाचो पति मेरे साथ एक साथ न चलें । सुना है, कानून की किताबो

मे कुछ धाराए, कुछ दफा आदि लगाई जाती हैं ।"

"प्रिय ! तुम्हारे मन मे यह विचार कैसे आया ?"

"जैसे किसी स्त्री को सात-आठ बच्चो के साथ चलते हुए शर्म आती है ऐसे ही मुझे पाच पतियो के साथ चलते हुए, महसूस होने लगी है। और फिर नकुल, सहदेव और युधिष्ठिर को तो इधर-उधर की हाक कर बनाया जा सकता है, किन्तु अर्जुन और भीम बात-बात मे गाडीव और गदा सभालने लगते हैं।"

कृष्ण द्रौपदी की बात समझकर बोले, "ठहरो मैं अभी कुछ प्रबन्ध करता हू।"

तब उन्होने कुछेक धाराए प्रवाहित की और दफा एक सौ चवालोस की उद्घोषणा कर दी। द्रौपदी ने पूछा, "यह सब क्या है ? कैसी धारा बहा रहे हो ? क्या तुम्हारी इस धारा मे इतना पानी है कि यह पाच को डुबो देगी, पर चार पर आच भी न आने देगी ?"

"हा भद्रे !" कहकर कृष्ण जी ने उसी समय डिमान्स्ट्रेशन दी, पुन बोले, "और जब मैं तुम्हे मिलने आऊ तो वे तीनो इतने सभ्य है कि स्वय किनारा कर जाएगे।"

इधर पाडवो के अज्ञातवास की घोषणा हो गई। पाचो पाडव अज्ञात स्थान ढूढने के फेर मे दिशा-दिशा भटके और कुछ ही दिनो मे पाच पार्टिया बनाकर आ खडे हुए। द्रौपदी के अधिकार तब तक बढ चुके थे और उसने अपना नया नाम 'सत्ता' रख दिया था। पाच पाडवो ने सत्ता की द्रौपदी का पुन वरण किया और आते ही पहली हाक पर द्रौपदी को फिर दाव पर लगा कर चीरहरण का तमाशा देखने लगे।

39

तलाश एक उल्लू की

सुश्री भानुमती को एक ऐसे मुर्गे की तलाश थी जो बाग दे तो भानुमती की जि़दगी की सुबह हो जाए। उसने रास्ते चलते अपने सपनो के राजकुमार के विज्ञापन देखे। 'दूल्हा दिलाऊ एजेंसी' के दूल्हा छाप विज्ञापन देख देखकर उसका जी चाहता कि उनके साथ भी 'बढिया टिकाऊ-बिकाऊ उचित दाम पर, घटी दर पर ' आदि लिखा होना चाहिए। बेचारी ने कितनी बार अपने विवाह के लिए यहा-वहा मुह मारा, पर कही की ईंट और कही का रोडा। सब बेपेंदी के लोटे ही निकले। हारकर बेचारी ने 'दूल्हा दिलाऊ एजेंसियो' के चक्कर काटने की बात सोची। अपने सारे गुण-दोष एक कोरे कागज मे लिखते समय उसे लगा कि वह अपने आपको कोरे कागज मे लपेट-समेट रही है और फिर वह चल दी। उसने एक एजेंसी के कार्यकर्ता को वह कागज़ थमा दिया और खुद दिल थामकर बैठ गई। उसे लग रहा था कि बस अभी धरती फटेगी और सपनो का राजकुमार आ पहुचेगा। उससे फेरे लेगा और ।'

तभी उस कार्यकर्ता ने जैसे विस्फोट किया—"लडकी कहा है ?"

"जी ! मैं लडकी हू जी !" वह शरमाते हुए बोली।

"लडकी तो आप है ही लेकिन जिस लडकी के लिए आप लडका यानी वर की तलाश मे आई है बहनजी मेरा मतलब है "

"ऐं वह लडकी ?" भानुमती भौचक्की रह गई, "तो क्या मैं पुत्र गोद लेने आई हू ?" उसने भन्नाई नजर से कार्यकर्ता की दुकानी मुस्कराहट को देखा तो उसे लगा कि अगर वह यहा से भाग नही जाती तो वह महोदय उसे 'माता जी' कहना शुरू कर देंगे।

बेचारी ने अपना सिर पीट लिया, तभी उसने तथाकथित कार्यकर्ता को दूसरे व्यक्ति से बात करते सुना। वह कह रहा था—"अजी हमारी तो पूरी कोशिश होती है कि किसी न किसी को उल्लू बनाकर आपका काम करवा दें। रुपया-पैसा हो, तो ही किसी उल्लू की नज़र पडती है।"

भानुमती ने सोचा कि बात तो सही है। और फिर मेरे पास तो अपार धन है। मुझे तो विज्ञापन देना चाहिए—जरूरत है एक मालकिन को मालिक की! ओफ, सब कुछ होते हुए भी किस्मत खराब है। विधि ने ऐसे लेख लिखे है कि बस। विधि का लेख इतना खराब होता है कि जिन्दगी आखें चार होने के मुहावरे से शुरू होती है और आठ-आठ आसू बहाने के लिए रह जाती है। भानुमती का जी चाहा कि बैठकर पहले विधि से भी अपने लेख का सशोधन काय कराए।

फिर उसे 'दूल्हा दिलाऊ एजेंसी' के उस कार्यकर्ता की दुकानी मुस्कराहट का ध्यान हो आया। जाने उसका मन कैसा होने लगा। तब उसने अपने मन को टटोला। वह मन जो यौवन के दिनो मे पिया पिया की टेर लगाता, अब कुछ और ही हरकते कर रहा था। उदासी और निराशा ने मिलकर मन का खण्डहर बना डाला और खण्डहर म तो सिफ उल्लू ही बोलते हैं। सोचते ही भानुमती को हसी आ गई। उसे लगा कि अधिक चिन्तन करने पर वह बैठे-बिठाए कोई उल्लूनामा ही न लिख डाले। वैसे उल्लू सीधा करने, उल्लू बनाने और उल्लू होने मे भी कितना अतर है। काठ का उल्लू हर किसी को मिल जाए, यह भी सम्भव नही। वह तो सिफ लक्ष्मी जी ही थी जिन्होंने एक उल्लू को वाहन बनाया।

मन मे यो उल्लू ज्ञान जागते देखकर भानुमती ने अपने विज्ञापन के लिए सामग्री टटोली और मेट्रिमोनियल की जगह 'तलाश एक उल्लू की' नाम से अपना विज्ञापन दे दिया है—

जरूरत है—एक उल्लू की, जो पूरा उल्लू हो और उम्र भर उल्लू ही रहे तथा उल्लू रहने की कसम खाए—फिर वह पक्षी हो या विपक्षी, इससे अतर नही पडता, लेकिन अपने साथ शत प्रतिशत उल्लू होने का प्रमाण पत्र अवश्य लाए क्योकि आजकल देखा गया है कि उल्लू होने का दावा तो बहुत लोग करते है लेकिन प्रमाण-पत्र जुटा लेने वाला उल्लू कोई एक ही होता है।

कलावती कन्या प्रकाडमाला

कलावती कन्या ने ज्योही यौवन की देहरी पर पाव रखा तो पाया उसकी देह दीये सी जगमगा रही है। अग अग मे जैसे सैकडो थाऊजैण्ड वॉटस के बल्ब जगमगाने लगे है। जगते-बुझते बल्बो के साथ उसका मन का मोर पूरे पख खोलकर नाचने लगा है। उसके रूप का यह उजाला देख देख लोगो ने जब आखे सेकनी शुरू कर दी तो बूढे मा बाप ने उसे समझाया "जाओ बटी अपनी सखियो को साथ लेकर रही भी झख मारो लेकिन अपने योग्य एक वर ढूढ लाओ।" कलावती कन्या तब प्रेम की तलाश मे, अपनी अपनी हाकने वाली चार सखिया को लेकर घर से निकल पडी। सखिया जो उससे कही ज्यादा रास्ते की धूल फाक चुकी थी रास्ते भर कलावती को कमेन्ट्री देती गई।

इडिया गेट के बोट क्लब पर पहुचते ही कलावती थक कर बैठ गई तब उसकी सखि प्रेमवती उससे बोली 'हे सखि' तुमने विश्राम के लिए ठीक ही स्थल खोजा है। यही वह बोट क्लब है जहा का पानी सूख चुका है लेकिन फिर भी इस दलदल मे सुमुखी कन्याए अपनी अपनी नाव उतार देती है और किसी न किसी के गले पडी—माला सी—सूख जाती है। हे सखि' बोटक्लब की यह भूमि सदा से हडतालो की क्रीडास्थली रही है। भूख हडताल के पखावज यहा बजे और ईंट के भरे ट्रक की तरह लोग यहा उडेले गये व हर किसी ने उन ईंटो से अपना अपना पुल बनाने के लिए चूना लगाया किन्तु पाया, ईंटे तो कोई साज़ हैं जो बात बे बात पर बजती है। किसी सलीम की अनारकली को यही ईंटे जिन्दा चुन सकती हैं। अत हे सखि' अनारकली होना सबसे ज्यादा खतरनाक है। मात्र प्रेमी जो पति न बन पाये ऐसी भी एक जाति है, जो आजकल यहा वहा घास डालकर अपना उल्लू सीधा करती है। देखने मे यह नितान्त कुआरी जाति लगती है। चूकि तू अभी नई है, प्रेम की फिसलन भरी सडक पर हाथ पाव तुडवाने का भय सदा बना रहता है इसीलिए हर कदम सभल सभल कर उठाना होगा। उम्र भर किसी एक के ही

चौके चूल्हे मे भाड झोंकने का तुझे कार्यक्रम बनाना होगा। कन्या रत्न वह रत्न है जिसके लिए हर व्यक्ति, गहरे पानी पैठकर गोताखोर बनने को तयार रहता है। राजा से रक तक उसे देखकर हाय उपफ करता है। इसके लिये ही अनेक बादशाहो ने ताज-तख्त ठुकरा दिया। कलावती ने हरेक को माहताज बना दिया। इसने आखें फेर ली तो तुलसी पैदा होने लगा और प्रेम किया तो मजनू लैला-लैला रोने लगा।

अत हे सखि! ध्यान रहे अगर तू तीर चलाये तो तेरा तीर निशाने पर बैठे। इस देश मे हर चीज़ के लिये धक्कामार प्रतियोगिता जारी है। उठ सखि! आचरी यानी तीरदाज़ी मे, अब तेरी बारी है।" प्रेमवती के यो बार बार उकसाने पर कलावती बोली "हे सखि, तीर चलाने से पहले तू मुझे यह तो बता—यह प्रेम क्या बला है? जो आजकल के जमाने मे शादी करने से पहले चला है। कैसी मीठी बातो से मिठास घुलता है। कितनी शक्कर डाली जाये, प्रेम के गुर कोई तो मुझे समझाये।"

कलावती को यों निपट अनाडी पाकर प्रेमवती मुस्कराई और बोली "हे सखि! यो तो यह एक जानी मानी बात है कि जितना गुड डालोगे उतना मीठा होगा लेकिन आजकल लोग ज्यादा गुड से मधुमेह के शिकार होने लगते है, गुड पर चीटिया भी आ जाती है अत सारी मिठास भीतर ही रख ले, सिर्फ बातो मे उसी वक्त घोलकर पिलाना जब उसे प्यास लगे, तेरी शरबती आखो मे वह आखे डालकर एकटक तुझे निहारने लगे।

प्रेम मे एक दूसरे को एकटक देखते रहने का क्रम है यानी जब हमने विश्लेषण किया, तो लगा प्रेम भी योगाभ्यास की 'त्राटक क्रिया है।' प्रेमी प्रेमिका हो या नये नये पति-पत्नी। दोनो मे से एक व्यक्ति जब (भूख से कुलबुलाता है) गैस जलाकर तवे पर गोल रोटी सेंकने लगता है तो एक दूसरे मे ऐसे खो जाता है कि रोटी का रूप तवे का रग ले लेता है और यह रोटी सम्बन्धिया की तरह जलने लगती है—तो भी वे उनकी परवाह नही करते।

उनके लिए गैस पर रखा तवा रिकार्ड का रूप प्रतीत होता है और उन्हे लगता है वह बज रहा है इसीलिए मन का मोर अब कत्थक कर रहा है।"

अभी उनकी यह बात जारी थी कि तभी एक और सखि भागती आई और बोली, "हे कलावती वह देखो—कोई अर्जुन चिड़िया की आख पर एकटक निशाना साध रहा है—यानी कोई प्रेम की योजना बाध रहा है।"

और तब चारो सखिया उस तथाकथित अर्जुन को सम्बन्धो के मोह पर भाषण देने के लिए जा पहुची। वे जानती थी वह कला पुरुष पहले भी कलावती के घर के कई चक्कर काट चुका है लेकिन उसके माता पिता विवाह की बात पर उसे एक तराजू मे बिठा देते है और फिर बेटे को, कन्या पक्ष वालो को तौल तौल कर खरीदने को कहते है। कन्यादान से पहले यह जो वरपक्ष द्वारा तुलादान की प्रथा चली है इसी से खिन्न होकर कलावती कन्याए यहा वहा मुह मारती है और इस भाव तौल के बाजार से कला पुरुष को बेभाव ही खरीद आती है।

सबने जाकर उसे अपनी नयनबाण कला चलाने से अवगत कराया और कलावती कन्या ने ठीक निशाने पर तीर चलाया। फिर घास डाली तो देखा वह उसमे बडे मनोयोग से मुह मार रहा है। यह देखकर उसका मन हरा भरा होने लगा। सखि ने समझाया, "प्रेम मे व्यक्ति अधा हो जाता है और सावन के अधे को हरा ही हरा नजर आता है। हे सखि तू भी अब आखो पर पटटी बाध लेना और सावित्री बनकर इनके पीछे पीछे यमलोक तक जाना। और हा हे सखि ! कलापुरुष से एकदम विवाह रचा लेना। ज्यो ही वह अधा होने लगे उसे बाध लेना। सोच विचार का मौका मत देना, क्योंकि प्राय देखा गया है कि सोचने पर बाध्य होते ही बडे बडे मनीषी घर बार छोड छाड कर भाग खडे हुए। जब किसी के बुरे दिन आते है उसकी मति मारी जाती है अत इसके भी बुरे दिन आ गये हैं अब तेरे अच्छे दिन शुरू होगे। कलापुरुष को उसके मा बाप से छुडवा दे, हम पडित से मन्त्र पढवा कर इसे मन्त्र मुग्ध कर देते है ताकि यह प्रेम से पहले वाले काड छोडकर सीधे प्रकाड मे ही सम्मिलित हो सके।

हे सखि जब तू उसकी हो जायेगी तो तुझे उसकी जो मुद्रा पसद हो उसी को अपनाना--और भरतनाट्यम, मणिपुरी या कुचीपडी नाच नचाना। वैसे प्राय उगली पर नाच नचाना बेहतर होता है क्योकि ऐसे मे उसे नाचने के लिए भूमि भी नही चाहिए और तुझे भी किसी शिक्षा दीक्षा की जरूरत नही है। प्रेम के काड मे शामिल होते समय हर कन्या गऊ होती है और जब वह घर मे प्रवेश पा जाती है तो शेरनी हो जाती है। यह एक बहुत बडी अचम्भे की बात है क्योकि वैज्ञानिक हो या डाक्टर उन्होने स्त्री से पुरुष बनाने की तरकीबें तो निकाल ली लेकिन गऊ से शेरनी बनाने के तरीके ईजाद नही हुए

यह सिर्फ विवाह के मन्त्र पढने से ही सम्भव होता है ।

अत वे सब एक ऊघते हुए पडित को लाकर उसे विवाह का क ख ग पढाने लगी और फेरे खत्म होने पर कलावती कन्या की मा आकर अपनी प्यारी बेटी को उल्टी पट्टी पढाने लगी। उसे चण्डी से प्रचण्डी होने का नुस्खा लिख लिख कर हाथ मे थमा दिया ताकि वह सिफ कुछेक काड खडे करके उन्हे प्रकाड बना सके और अपना एकछत्र झडा गाड सके।

41

उल्टी पट्टी पढाइये

(विदा होती कलावती कन्याओ के लिए)

हे पुत्री ! तू आज इस घर से हमेशा के लिए विदा हो रही है । यह देख-कर मेरा मन खुशी से फूला नही समा रहा। ऐसे लगता है जैसे कोई बहुत पुराना किरायेदार मकान खाली करके जा रहा है ।

हे वत्से ! चलते चलते तेरी आखो मे जो आसू आना चाहते हैं उन्हे रोक ले क्योकि रोने रूलाने की बातें उस जमाने मे होती थी जब कन्या सुलक्षणा होती थी। तूने अटठाईस बरस झख मारकर जिसे प्राप्त किया है उसके लिये आसू कैसे ? यह वर तो जीवन मे बडी मुश्किल से, यहा वहा ताक झाक करने, जगह जगह मुह मारने और ढेरो विज्ञापन देने पर ही कही मिल पाता है।तूने जो गहरे पानी पैठकर इस घडियाल को पा लिया है वह तेरे लिए अन-मोल है। तुझे तो यह सब मुफ्त मे ही मिल गया जैसे बन्दर के हाथ मोतियो की माला लगी हो । अब तू औरो की खली मे मुह मारने की आदत छोडकर सिर्फ एक की होने का ही प्रण कर ले और 'एक के बाद कभी नही हे सती तेरा पति !' इस बात को मन मे रख ले। आ मैं अब तुझे उस बीहड रास्ते की बात बताऊ जिस पर तूने कदम रखा है । तू ससुराल जा रही है। वहा तुझे सास और ननद नाम की स्त्रिया मिलेंगी जिनके हाथ मे यो तो कोई हथियार न होगे लेकिन वे हर बात मे तीर छोड कर देखती रहेगी, तीर निशाने पर बैठा कि नही। प्यार की घाटियो मे कई बार सास ननदें डाकुओ से कम नही होती वे 'हडस अप' करवा कर अपनी पुत्रवधुआ से उनका दहेज आदि छीन लेती हैं और फिर उसे आग के हवाले करके मूछो मे मुस्कराती है। पुत्री ! चूकि तू दहेज नही ले जा रही इसलिए तुझे यह सब सामान उसी घर से बटोरना होगा और कुछ ऐसे तरीके अपनाने होगे जिससे वे लोग अपना सारा सामान अपने आप छोडकर भाग जाय। तू तो जानती है ज़माना आगे बढ गया है। तिकडमे लडाने पर तो बडे से बडे डाकू आत्मसमपण कर

जाते हैं। अत हे वत्से ! इस घर को फूक फूक कर कदम बढाना और हमेशा आगे बढती जाना।

ससुराल का रास्ता बडा कठिन रास्ता है। यहा की तग गलियो मे जगह जगह स्पीडब्रेकर लगे हुए हैं। कदम कदम पर रोडे अटकाये जाते हैं। इसके रास्ते पर साफ लिखा है, 'यह आम रास्ता नहीं' यानी यहा आम की जगह बबूल के पेड हैं करील की काटदार झाडिया हैं जिन्हें तुझे अपनी कैंची सी जबान से काट काट कर एक ओर करना होगा।

तू तो जानती है लज्जा स्त्री का गहना है, विनम्रता उसका आभूषण ! और चूकि आजकल गहने, गले का हार न बनकर लॉकर का ही श्रृंगार बनते हैं इसीलिए तू भी इन्हे लॉकर मे रखकर नकली गहनो की तरह, बनावटी मुस्कराहट और चापलूसी की चमक दमक भरी बोली को अपनी भाषा बना लेना और फिर जाकर ही उन्हे चकमा देना। तू उनके चरण ऐसे पकड लेना कि वे सब सिर पकड कर बैठ जाय और फिर चाहे रोये—रूलायें।

हे सुता ! तू भारतीय कन्या है। कितनी ही अग्रेजी पढने और डिस्को की धुन पर नाचने के बाद भी तू भारतीय ही रहेगी। यहा एक प्रथा है। बेटी जब ससुराल डोली मे बैठकर जाती है तो वहा से हमेशा अर्थी पर ही बैठकर वापस जाती है। इस अर्थी मे वापस भेजने की प्रथा पर ससुराल वालो को खुली छूट मिली हुई है और दमकलें भी इस आग को बुझाने मे असमर्थ हैं। ससुराल मे चूल्हा चौका करती भारतीय कन्याओ को देखकर स्टोव का ही हृदय फटता है और सीताओ का दुख और अत्याचार से बचाने के लिए लपटो की बाहो मे समेट लेता है। सुता ! तू चूल्हे चौके और जलाने वाली वस्तुओ (यानी सास ननद) से परहेज रखना और जब तुझे दहेज न लाने के अपराध मे वे लोग अर्थी पर बिठाने लगें, धकेल कर तुझे इस जहा से ही उठाने लगें तो हे वत्से, वहा भी अपनी शालीनता मत भूल जाना और 'पहले आप' कहते हुए सास ननद को भिजवाना। अपने पति की जी जान से सेवा करना। उसके पाव की जूती बनकर रहोगी, तो सदा उसकी सिर आखो से लगी रहोगी। हर पहली तारीख को उससे सारी तनख्वाह लेकर जेब खर्च जरूर दे देना। वत्से ! यदि वह कोई माग करे या तेरे मायके की तरफ कदम बढाये तो वहा 'खतरा' लिखकर उसे समझाना कि अब माग सिर्फ मेरी ही रहेगी मायके के रास्ते से जो कौआ मेरे भाई का सदेश लेकर आ रहा था, वह

वही विजली के नगे तारो से छूकर उनसे चिपक गया है । अव उस रास्ते मे कदम कदम पर डायनामाइट बिछा है अत मायके की तरफ मुह उठाये चल देने की इस आदत को छोड दो ।

हे सुता यह सीख मैं इसलिए दे रही हू कि तू आगे जाकर सुखी रहे ।"

तव कलावती कन्या ने शरमाते हुए कहा, "मा यह सव बाते तो मैंने गर्भ काल मे अभिमन्यु की तरह सुन ली थी । जब तुम्हारी मा तुम्हे उल्टी पट्टी पढा रही थी तव मैं तुम्हारे गर्भ मे ही तो थी न ।" कलावत्ती कन्या वहा से विदा होने लगी तव उसकी मा की आखें भर आई । वह बेटी के पीछे चल दी तो बेटी ने पलटकर कहा, "मा तुमने पिता जी से शादी की थी इसीलिए तुम्हे सारी उम्र इसी घर मे काटनी होगी । मेरे पीछे आने से कोई लाभ नही ।"

बेचारी मा मन मसोस कर वापस लौट गई और पुराने नरक की आग मे जलने के लिए लकडिया ठीक करने लगी ।

42

महावीर प्रेमी के नाम—एक पत्र

तुम्हारा पत्र आयेगा, इसी इन्तजार मे डाकिये का रास्ता देख रही हू—वह पत्र फेक कर चला जायेगा। कभी नही सोचेगा खतो की इन्तजार मे, कौन कितना बेचैन, बेसब्र है, डाकिये का इन्तज़ार। वह लापरवाही मे हर चिट्ठी का नाम पता पढता है और फेंकता है। फेंकी हुई चीज उठाने को तत्पर हाथ उद्धार के हाथ तो नही। जिन्होने कभी फेंक दी गई चीज़ की ओर मुह उठा कर न देखा, वह इस पत्र को कितने प्यार से उठा लेते हैं—हृदय से लगाते है, चूमते है। सौ सौ बार पढते हैं और पढते अघाते नही। तुम्हारे खत का मुझे भी कुछ ऐसा ही इन्तज़ार रहता है। आज तुम्हारा खत पाकर मेरी इन्तजार की लम्बी घडी कट गयी। यो और कोई घडी कट जाय तो थाने मे रिपोर्ट लिखवाते फिरते यह घडी ऐसी घडी है जो कट जाय तो खुशी होती है। खुद हम चाहे बढाये, रास्ते पर पलक पावडे बिछाये इस तथा कथित घडी काटने वाले की प्रतीक्षा करते हैं। इन घडियो को काटने के कई तरीके भले ही हो, सबसे बढिया और अच्छा आसान तरीका है खत भेज देने का। खत मे जो कुछ भी लिखा हो, वह महत्वपूर्ण नही होता। हर खत जिसका इन्तजार बेसब्री से हो रहा हो, सीने से लगाया जाता है। आखो के मुह से—उफ्फ। आज तुम्हारा खत पाकर मेरी क्या दशा हो रही है, मैं कह नही सकती। बहुत देर मन को तसल्ली देने के बाद अब उसे खोल कर पढने लगी हू। जी चाहता है, एक ही सास मे पढ जाऊ। एक ही बार मे गटक कर पी जाऊ पर यह क्या ? खत मे प्रेम का नाम ही नही। हाय, तुम्हारे माता पिता ने तुम्हारे जैसे शुष्क नीरस सुपुन का नाम प्यारचन्द क्यो न रखा ? पूरे खत मे कही तो, चाहे अन्त मे ही सही, प्यार का नाम तो आ जाता। हाय, मैं तो सोच रही थी तुम्हारे प्यार भरे खत मेरी अमूल्य निधि बन जायेंगे। मैं उन्हे तिजोरी मे सभाल कर रख लूगी। किसी की नज़र न लग जाय। या

फिर औरो की नज़र करके शान से कहूगी—उन्हे चिढाऊगी, उन्हे बताऊगी क्या होता है प्रेम । कैसे होते हैं प्रेम पत्र ! तुम्हारे पत्र तो औरो को भी खत लिखने का सलीका सिखा सकते थे । प्रेमियो के मार्ग मे मार्ग दर्शन के लिए मील का पत्थर सिद्ध हो सकते थे । सच कहू तो तुम्हे प्रेम करने के पीछे मेरा भी स्वार्थ था । मैंने साफ देखा कि प्रेम के क्षेत्र मे सिर्फ एक खालीपन सा है रिक्तता बढती जा रही है । प्रेम करने वालो के पास सवाद भी नही । वे एक दूसरे से आखें चार तो करते हैं, पर थोडी देर एक दूसरे को ताक कर फिर मुह फेर लेते है या कन्या कह उठती है, यो मुह उठाये क्यों ताक रहे हो ? अपना काम करो ।

जिस ज़माने मे आखें चार होती रही होगी, वहा चार आखो ने आठ आठ आसू बहा कर सोलहो सवाद बोले होंगे । वह आखें मौन रहकर भी कितना बोलती रही—लेकिन वह बोल सुनने वाले के कान किसी अत्यन्त सूक्ष्म परदो से युक्त रहे होंगे । आज कल तो यह पर्दे देखने को भी नही मिलते । सवाद के क्षेत्र मे तो निरा शून्य ही रह गया है । जब तुमने मुझे देखते ही पटाने के लिए कुछ सवाद बोले, तो मैं बेमोल बिक गयी । हालाकि तुम्हारा वह हर वाक्य पहले से ही प्रयुक्त था । घिसा पिटा या और काफी ललनाओ पर आजमाया हुआ सा लगता था । तुम इस क्षेत्र मे बडे घाघ हो, वरना इतना सभल कर, हर कदम फूक फूक कर रखने की होश कहा रहती है । स्वय को भूल जाने की मानसिकता, तुममे कभी भी नही रही । प्रेम मे अन्धे हो जाने के लिए जिन आखो की आवश्यकता होती है, वह तुममे कहा । तुम तो गिद्ध दृष्टि लिए हुए, बक ध्यान से युक्त, एक टाग पर खडे होकर तपस्या भी इसी लिए करते हो कि कोई नई मछली मुह मे आये और थोडा मुह का स्वाद तो बदले । स्वाद बदलने के लिए मजे लेना तो हर कोई चाहता है, लेकिन जब कोई मजा चखा जाता है तो मुह मे कुछ कडवाहट सी भर जाती है । तुम्हारी कडवाहटा का मुझे क्या पता । खैर अब तो कोई तुम्हे घास डालने से भी कतराएगी क्योकि, मेरी तुम्हारे साथ होने की घोषणा मेरी सहेलियो ने ढिढोरा पीट कर कर दी है । अब तो बेल फैल गयी

मैं चाहती थी तुम कही बाहर जाकर मुझे हर रोज़ एक खत लिखते । देश मे रहकर तुम देश की बाते करते रहे, प्रेम की नही । विदेश मे ही शायद तुम्हे कुछ सूझे, क्योकि वहा की धरती पर प्रेम आम है, वहा यह फसल लह-

लहा रही प्रेम की बेल पर करेले, कद्दू और तोरइ नही उगती । इमीलिए 'भविष्य की चिन्ता मत करो' का मन्त्र वहा लगातार गूजता रहता है । मेरी विडम्बना कुछ और किस्म की है । मैं तो सोचती हू—जिनके प्रेमी प्रेम पत्र लिखने मे पारगत हो, उन्हे सरकारी खर्चे पर देश विदेश भिजवाया जाय, उन्हे पत्नियो प्रेमिकाओ से विलग रखा जाय, ताकि उनके प्रेमिल हृदय मे विरह की आग लगे । वे धू धू लपटो से जलते तडपते हुए (चदन वन की आग है) पत्र लिखें । इतना लिखें कि लिखते ही चले जाय । दिन रात उन्हे सिर्फ यही काम हो, उनके प्रेम पत्रो के आधार पर उन्हे भत्ता आदि मिले ताकि वे मन लगाकर काम कर सकें ।

तुम्हारे पत्र मे शेप सब कुछ है, निर्देश आदेश सकेत तथा काम मे जुटे रहने के सदेश । शहर का वणन है, इमारतो का वर्णन है, लगता है किसी की दाल गल तो गई पर जब मुह मे डाली तो उसे बार बार थू थू करनी पडी । दाल मे नमक भी नही था और न ही चुन बीन कर वह साफ की गयी थी । बार बार मुह मे पत्थर आने लगे । हाय, तुम्हे प्रेम का एक भी वाक्य याद नहीं रहा । मेरा चम्पई रग, मेरी झील की आखें, मेरी केशराशि मैं ?? कह देते चादनी रातें या अधेरी राते काटे नहीं कटती । कृष्ण के विरह मे गोपिया गाय का बयान करते कह देती वह चारा नही खाती, औरो की खली मे तो क्या अपनी खली मे मुह नही मारती । तुममे तडप होती तो तुम्हारे हर शब्द म 'मैं' होती काश । तुमने किसी और की तडप देखी होती । तुम्हारे पत्र पढकर तो लगने लगा है कि स्कूलों मे पाठशाला मे अब पिताजी और माताजी वाले पत्रो के स्थान पर प्रेमी को / प्रेमिका को पत्र लिखने सिखाये जाने चाहिए । उपमाए जुटाने मे क्या रखा है । बादल बिजली, कमल, रात वगैरा वगैरा हर जगह होते हैं । तुम्हे उनकी जगह इमारतों के वणन भले लगते हैं । मुझे तुमने ढेर सारी पत्थर सीमेन्ट की बनी फौलादी इमारतो का जो ज्ञान दिया है, उससे मेरा हृदय छलनी छलनी हो गया है । सारा उत्साह ठण्डा पड गया ।

कृष्ण महाप्रेमी थे । उपदेश के लिए वे अर्जुन को ही चुनते थे, राधा को नही । राधा पहले ही मन हार चुकी थी । उसे यो प्रेम मे पगी देखकर कृष्ण ने सम्बन्धो का मोह व्यथ है की हाक क्यो न लगाई ? बल्कि स्वय मन हार बैठे । यह हार जाने की प्रक्रिया कितनी मोहक है । दोनो तरफ आग बराबर

लगी हुई हो, तभी यह प्रेम की आग सी रहती है, वरना एक ओर का निरुत्साह दूसरी ओर जलती आग पर घडो पानी उडेल देता है। कच्चे घडे में वैतरणी पार कर लेने वाले लोग किसी की परवाह नही करते।

बार बार खत टटोलने पर लगता है तुम्हारे पास लिखने के लिए कुछ भी नही बचा। यह वह क्षेत्र तो नही जहा पहले अभ्यास करके प्रेम पत्रो के नमूने पेश किये जाय, सम्बोधनो की सूची दी जाय। अनुच्छेद लिखने का सलीका सिखाया जाय। इसका तात्विक विवेचन भी नही हो सकता। तुमसे यह भी नही पूछा जा सकता कि कथावस्तु बताओ, पात्र कितने है—देशकाल समय सवाद घटनाओ आदि की रूपरेखा बताओ। उफ्फ। तुम विदेश क्यो गये ? वहा तो मुझे जाना चाहिए था, फिर मैं तुम्हे इम्पोर्टेड पत्र भेजती। अब इस देश से देसी खत परदेसी के नाम क्या लिखू। न हो अपने किसी मित्र के पत्र की ही नकल कर भेज देते। नकल मे तो तुम पारगत थे। लेकिन यह नकल शिक्षा परीक्षा तक ही काम आ सकती है न।

जगह जगह तुमने एस्केलेटर की चर्चा की। सीढियो और लिफ्ट का सिलसिला बहुत पुराना है। तुम्हे और कहा कहा लिफ्ट की ज़रूरत पडी अब तक किस मजिल तक पहुच पाये ?

इमारतो के वणन मुझे कभी रुचिकर नही लगे। तुम्हारे बिना सर्वत्र सूनापन सा दिखाई देता है। फिर उस सूनेपन मे तुम साकार हो उठते हो। दूर रहकर तुम मेरे कितने पास आ गये हो, यह एहसास मुझे पहली बार हो सका है। चेष्टा करो कि यह एहसास बना रहे। हम एक दूसरे को पत्रो से ही मिलते रहें। चर्चा होती रहे और तुम जब खत लिखने मे विशेष योग्यता प्राप्त कर लो तो यहा प्रेम पत्र ब्यूरो की स्थापना की जा सके।

आज देश मे प्रेम समाप्त हो रहा है, भाईचारा बढ रहा है। पिछले कई सालो से लोगो ने प्रेम मे आत्महत्या तो की, एक दूसरे के लिए मरे भी, लेकिन वैसा प्रेम जैसा लैला मजनू का या हीर राझा का था, जिसका बखान किया जा सके, ऐसा कोई किस्सा सामने नही आया। तुम्हारे जाने के बाद मैं भी विरह का अनुभव कर के विरह मे एक्सपर्ट होने की चेष्टा मे हू। काश, तुम्हारे खत ऐसे होते कि मैं बावली होकर आने की उतावली करती। शायद तुम्हें यही शका रहेगी कि मैं इसी पागलपन मे दस पन्द्रह हजार रुपया फूक कर आ पहुचूगी और वहा फिर एक दूसरे को बोर करेंगे।

एक खत पिताजी को—बुरी सगति से बचाने के लिए

जब से मेरे दोस्तो ने बताया है कि आप बुरी सगत मे पड गये ह—मेरी रातो की नीद हराम हो गई है (दिन भर सोना पडता है)। जब आपका यह हाल है तो मेरा क्या होगा। मेरा माथा तो उसी दिन ठनका था जब मा ने आपको शत प्रतिशत छूट दे दी और मुझे रोता पटककर मायके चली गई। पटकने की प्रक्रिया ही ऐसी होती है कि उसके बाद क्रमश हर किसी को सिर पटकना पडता है। आपने मुझे होस्टल मे पटक दिया और यहा हर आदमी मेरे व्यवहार से सिर और पाव पटक पटककर अपनी प्रतिक्रिया जताता रहा। मेरा एक एक कक्षा मे दो दो वर्ष लगने के पीछे यही आशय था कि मेरी नीव पक्की हो जाय, अगर नीव पक्की न हो तो इमारत कितनी ही बुलन्द क्यो न हो, गिर जाती है। हमारे घर ससार की इमारत इसी तरह ही तो गिर गई। पिताजी! जो भी हुआ, उसे भूल जाइए। दहेज के लोभ मे आपने मा को मायके भिजवाया था और वह फिर लौटकर न आई। मुझे होस्टल भिजवा कर छुट्टियो से भी आप मुझे यहा वहा भिजवाने के उत्तम प्रबन्ध करते रहे, मैंने कुछ न कहा। लेकिन आपको यो अकेले छोडकर मैं अब कही नही जाऊगा। मुझे निरन्तर खटका सा लगा रहता है। अगर मैं वही घर मे रहा तो आपको मेरा मा बाप दोनो ही बनना पडता। यह सिद्ध हो चुका है कि पिता मे हमेशा मा का हृदय होता है। हमे जब जब सूरदास पढाया गया, जायसी का विरह वर्णन पढाया गया तो बार बार यही ध्यान आया कि लिखते समय उनके हृदय मे हमेशा एक न एक स्त्री विराजमान रही। लेकिन वह मात्र हृदय मे रही। घर मे आकर उसने अड्डा नही जमाया। दिल मे ही घर किया, घर नही बसाया। पिताजी, आपको याद रखना चाहिए कि आप किस बेटे के बाप हैं। आपके बेटे की कम्पनी कौन सी है—किस कम्पनी मे वह रहता है। कौन कौन बेपर की उडायेगा। मेरे दोस्त

तो यो ही मेरी हरकतो पर ताक लगाये रहते है, फिर आपके बारे मे कोई भी उडती खबर आग मे घी का काम करेगी।

पिताजी बुद्धि पर पर्दा पडते देर नही लगती। फिर यह पर्दा आख कान मुह पर या आ पडता है कि न बुराई दिखाई देती है, न सुनाई देती है। लोग उगलिया उठाते है तो प्राणी आख बन्द कर लेता है। बातें बनाते हैं तो कान बद कर लेता है, पुराने आदर्शों के अर्थ ही बदल देता है, ढिठाई पर उतर आता है। ढीठ होकर बेशम यो हो जाता है कि तब उसे कोई कतव्य नजर नही आता। आखें दूसरो की बहन बेटियो पर गडी रहती हैं यह पर्दा ऐसा मोटा परदा है जो केवल गुणो को ढाप देता है। पहले यह साफ चादर की तरह होता है, फिर उस पर चकत्ते से पडते है, धारिया पडती है और फिर वह कालिख उन धारियो और उन चकत्तो से धीरे धीरे बढकर एक समूची कालिख बन जाती है। सभालिए पिता जी, आप तो मेरे अपने पिता हैं, मैं नहीं समझाऊगा तो और कौन समझाएगा? आप कितने अनाडी हैं। पिता होकर आपको बाप होना नही आता। हमारे होस्टल मे तो आजकल एक नया धर्म चल पडा है। पिता पैदा नही होता, बनाया जाता है। यहा हर गधे ने एक न एक बाप बनाकर वसूली की है। मैं इस क्षेत्र मे अभी तक सफल नही हो पाया।

सुना है इन दिनो आप बढिया सिगरेट पी रहे हैं। मेरे दोस्त ने जब से उस सिगरेट का रेट बताया है, मेरा दिल फुक रहा है। कलेजा मुह को आता है। मैं बार बार जीभ से धकेल कर उसे भीतर कर देता हू। सिगरेट तो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। फिर महगी सिगरेट तो है ही हानि पर हानिकारक। हमे अध्यापक जी ने सारे कारक समझाए थे, मुझे लगता है पिता जी, हानिकारक ही वह कारक है, जिसमे कर्ता कर्म सम्बन्ध सब के लक्षण ठोक पीट कर समाहित कर दिए गए हैं। मेरे जैसे छात्र यदि हिन्दी म ही पारगत हो सके तो शायद आठो कारक हटाकर सिर्फ एक हानिकारक के ही सारे लक्षण लिखते जायें। हाय पिताजी। आप वह हानिकारक होते जा रहे हैं जिसके लक्षण भी ठीक नजर नही आते। आप जिस शराब को पीते है, वह दरअसल आपको पी रही है। आप शराब मे गम डुबो रहे हैं—परिवार डुबा रहे है, इसमे डूबने के लिए ही चुल्लू भर का मुहावरा गढा गया होगा। आप गम मे डुबकी लगाकर इस मद्यसार मे

उतराते इतराते हैं—यहा तो जो डूबता है, वह पूरी तरह से डूबता है औरो को भी ले डूबता है सच कहे तो खुद नही डूबता, रुपया डूबता है। उसी रुपये के साथ गले मे पत्थर बाधकर सारा कुनवा डुबता है कि सहारा देने वाले का तिनका भी नही मिल पाता। मुझे आपने तिनके सा तुच्छ समझकर एक आजाद जीवन जीने के लिए जो छूट दे दी है, मैं उसी से खिन्न हू। मेरी उम्र के युवको को छूट लेने के लिए न किसी बाप की इजाजत की जरूरत होती है, न किसी अध्यादेश की। आपने मुझे छूट दी और शत प्रतिशत छूट का लाभ लेकर मुझे जता दिया कि मैंने आपको छोडकर गलती की है। दहेज की तरह छूट का भी लेना देना दोनो अपराध घोषित होने चाहिए। लेकिन घोषित करने से भी क्या लाभ। घोषित चाहे कुछ भी हो, सुनाई तो वही देता है, जिससे हम अर्थ निकाल सकते है। पिताजी, मेरे दोस्तो ने बिना घोषणाओ के ही अनेको अर्थ निकालने आरम्भ कर दिये है। कार्तिक और शिब्बू के पिताओ ने भी कुछ ऐसी ही हरकतें की है और लगता है, आप उन्ही की सगत के कारण खराब हो रहे है। खरबूजे को देखकर खरबूजा रग भले ही बदले, आपको खरबूजा नही होना चाहिए। सन्तरो से भी आपको परहेज है, वरना मैं कहू कि सन्तरो के टोकरे से सडे हुए सन्तरे निकाल फेंकिए, हमारे अध्यापक जी कहते थे एक मछली सारे तालाब को गन्दा करती है ? पिताजी उसी मछली को अलग करना चाहिए या पूरे ताल का पानी बदलना चाहिए, यही गणित मुझे समझ नही आता।

मुझे तो समझ नही आता कि आपके लिए दिल लगाने की समस्या क्यो आन खडी हुई। चालीस पैंतालीस वर्ष की अवस्था मे पहुचकर आप यो शौकीन तबियत के क्यो होने लगे। दिल लगाने के लिए कितने ढेर सारे साधन आपके पास हैं—फिर भी यो उचाट रहना, मुझे खत न लिखना, देर से मनीआडर भेजना तथा छुट्टियो मे भी मुझे मिलने की ललक न होना, देखकर मुझे लगता है दाल मे कुछ काला है। किसी की दाल गलने लगी है और दाल के लिए उपयुक्त आच आप दे रहे हैं। आप स्वयं ईंधन बन रहे हैं पिताजी। वह कहावतें क्यो नही याद करते जिनमे 'जब आवे सतोप धन सब धन धूलि समान' हो जाते हैं। यह सतोप धन जिससे आपका भण्डार भरा रहता था, सहसा कौन लूट ले गया है। किसी ने सेंध लगाई है या फिर आपने ही दरवाजे खुले छोड दिए ? सच कहिए पिताजी आपको क्या हो गया है ?

कही आप फिसलन भरी राहो पर तो नही बढ रहे ? आप नही जानते प्रौढावस्था मे आकर जब कही कोई हड्डी चटख जाती है या कोई स्प्रेन भी हो जाता है तो ठीक होने मे बहुत देर लगती है पुरानी चीजों की मरम्मत पर मरम्मत कीजिए तो भी उसमे वह नयापन व ताजगी नही आ सकती। अब आप फिसलेंगे तो बहुत मुश्किल होगी। किसी को सेवा का लाभ देना ही चाहते है तो गिरने की क्या जरूरत है। फिसलने के लिए केले के छिलके, आलू के छिलके कई प्रकार के छिलको से फिसला जा सकता है। बस फिसलते समय यही ध्यान रहे कि सिफ मन न फिसले—अन्यथा फिसलने मे पूरी छूट दी जा सकती है। मन फिसलता है तो उद्धार के लिए हाथ बढाता है कदम उठाता है, लेकिन आज के युग मे उद्धार वाली, इतनी जड नही हो पाती कि वह किसी को देवता होने का श्रेय दे दे। बल्कि उद्धार करने वाला कई ऐसी पत्थर हो जाने वाली विभूतियो से यो टकराता है कि अपने ही हाथ पाव तुडा बैठता है तथा स्वय जड हो जाता है।

जडता ही ऐसी स्थिति है जिसमे अपने पराये का अन्तर नही दिखाई देता। स्वय तो वह परमगति को पहुचता ही है, औरो को भी उस गति पर पहुचा देता है, जहा से गति नही मिल सकती। पिताजी, सोचिये तो ? मेरी गति क्या होगी। मैं आपका भविष्य हू। अति निकट भविष्य। भविष्य की हर गडबडी पर आपको आख गडानी चाहिए, मुझे नही। लोग कहते है युवा पीढी भटक रही है। मैं कहता हू युवा पिता भटक रहे है, वे हमे पूरी तरह भटकने भी नही देते। वे हमारी चिन्ता का विषय बनते जा रहे है। हमे पिताश्री को नसीहत भरे खत लिखने पड रहे है। लगता है हम दोनो विपरीत दिशा की ओर चलते चलते भी, धरती के गोल होने के कारण पुन एक ही बिन्दु पर आ पहुचेंगे, मैं तो बस इतना ही कहना चाहता हू—रुपया सभाल कर खर्च कीजिए। मेरे लिए कुछ तो छोड दीजिए। ये आपकी गलतिया रुपयो के खेत चट कर जाएगी।

पिताजी, मुझे तो लगता है, मैं असमय ही बूढा हो रहा हू। जी चाहता है आपको बार बार हिदायतें दू। सादा जीवन उच्च विचार पर प्रस्ताव लिख लिख कर भेजू। 'स्वास्थ्य हजार नियामत है' का पट्टा बनवाकर घर की हर दीवार पर टाग दू। सिगरेट की हानिया गिनाऊ। मद्य निषेध के लिए स्वय निषेधालय बनकर आपके पास पहुचू। कुछ तो सभल जाइए पिताजी।

आपकी वहश्ने की उम्र नहीं, मेरी है

अगर यो ही आपकी चिन्ता मुझपर सवार रही तो वह दिन दूर नहीं, जब चाइल्ड इज़ दि फादर आफ मैन का मुहावरा सार्थक हो जाएगा। असमय ही बूढा होकर मुझे यो ही फादर कहलाने का शौक नहीं। आप मेरे पिता हैं, असली पिता, मेरे अपने आप पिता ही रहे तथा मुझे ऐरे गैरे को पिता मानने पर मजबूर न करें।

आपका बाप